भारती

प्रेमा नन्दकुमार

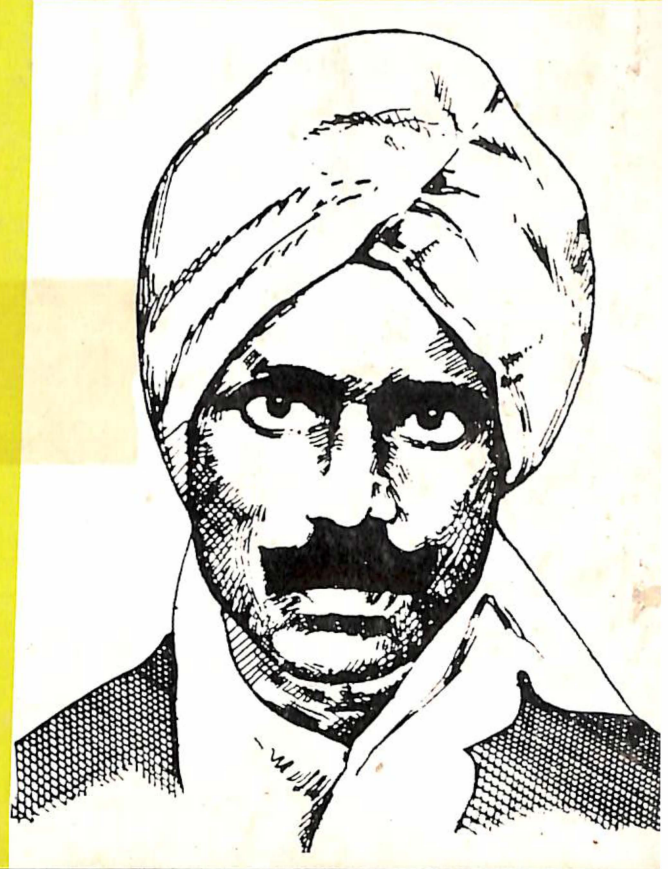

MT
891. 481 018
B 469 N

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
891.481018
B 469 N

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओहि दृश्यकेँ देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कए रहल छथि । हिनका लोकनिक नीचामे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्या केँ लिपिबद्ध कए रहल छथि । भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक ।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

भारती

लेखक

प्रेमा नन्दकुमार

अनुवादक

जगदीश प्रसाद कर्ण

साहित्य अकादेमी

Library IIAS, Shimla
MT 891. 481 018 B 469 N
00117141

Bharati : Maithili translation by Jagadish Prasad Karna of Prema Nandakumar's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1992), Rs **SAHITYA AKADEMI**
REVISED PRICE Rs. 15.00

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 1992

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23 ए /44 एक्स.,
डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053

304–305, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास 600 018

172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग,
दादर, बम्बई 400 014

109, जे. सी. मार्ग, बंगलौर 560 002

मूल्य : **SAHITYA AKADEMI**
REVISED PRICE Rs. 15.00

ISBN - 81-7201-219-5

लैसर सैटिंग : वैलविश पब्लिशर्स,
पीतमपुरा, दिल्ली 110 034

प्रिंटर्स : एवन ऑफ़सैट प्रिन्टर्स,
नई दिल्ली-110 002

MT
891.481 018
B469N

117141
9.12.04

विषय

	पृष्ठ
आमुख	7
सुब्रह्मण्य भारतीक पूर्व तमिल साहित्य	9
सुब्रह्मण्य भारतीक जीवन-वृत्त	13
भारतीक काव्य-भंडार	25
देशभक्त कवि	29
भक्तिक स्वर	35
कृष्णगीत श्रृंखला	39
द्रौपदी-विजय	43
कुयिलक एकल गान	47
सर्वतोमुखी प्रतिभा	50
भारतीक गद्य-साहित्य	56
शिक्षात्मक आ दार्शनिक लेखन	62
भारतीक अंग्रेजी गद्य आ कविता	65
जीवंत भाषा	69
विषयगत आ भावगत आधुनिकता	73
भावी मानवताक कवि	79
काव्य-चयन	84

निवेदिताक प्रति
स्वतंत्रते !
मुक्ति गीत
ब्रह्माण्डक विनाश वेलामे

आउ कृष्ण !
पाञ्चाली-शपथ
कुयिलक एकल गान

गद्य गीत : शक्ति 98

सपहरा

भारतीक जीवन केर प्रमुख घटनाक्रम 100
विशिष्ट ग्रंथ-सूची 102

आमुख

'भारतीय साहित्यक निर्माता'मे सुब्रह्मण्य भारतीक स्थान सर्वथा समुचित, कारण ओ ने केवल आधुनिक तमिल साहित्यक अग्रदूत छलाह, अपितु बीसम शताब्दीमे भारतीय जीवन आ साहित्यक पुनर्जागरणक प्रमुख आलोको छलाह । एतबे नहि, ओ कवि, भविष्यद्रष्टा आ भावी मानवताक प्रवक्ता सेहो छलाह ।

भारतीक काव्य आ व्यक्तित्त्वक प्रति प्रथम आकर्षण हमरा आइसँ ठीक बीस वर्ष पहिने भेल छल । फलस्वरूप हम शीघ्र हुनक किछु कविताक अनुवाद करबाक प्रथम प्रयास कैलहुँ जे हमर पहिल पुस्तक 'अंग्रजी पद्यमे भारती' (Bharati in English Verse)मे सम्प्रति संगृहीत अछि (१९५८) । तत्पश्चात् भारतीक जीवन आ कृति पर हमर दूटा पुस्तक क्रमशः १९६४ आ १९६८ मे प्रो. सी. डी. नरसिंहैया द्वारा सम्पादित 'भारतीय लेखक गण आ हुनक कृति' (Indian Writers and Their Work) सिरीजमे एवं प्रो. के. स्वामीनाथन द्वारा सम्पादित 'राष्ट्रीय जीवनी साहित्य' (National Biography) सिरीजमे प्रकाशित भेल । १९७४ मे ट्वेनीज वर्ल्ड ऑथर्स (Twayne's World Authors) सिरीजमे सुब्रह्मण्य भारती पर एक पुस्तक प्रकाशित भेल जे प्रमुखत : हमर १९६८ क पुस्तकेक विस्तृत चोरी छल । बहुत कठोर प्रतिवेदन देला पर ट्वेनी प्रकाशक लोकनि १९७६ मे 'बुक्स एब्रोड' (Books Abroad) मे हमरासँ क्षमा-याचना कैलन्हि आ बजारसँ ओहि पुस्तककेँ हटा लेलन्हि ।

एही बीच युनेस्को आ साहित्य आकादेमीक संयुक्त तत्त्वाधानमे हमर अनुवादक पूर्णतः संशोधित आ सुविस्तृत संस्करण 'सुब्रह्मण्य भारतीक कविता-संग्रह' (Poems of Subramania Bharati) सद्यः प्रकाशित भेल अछि ।

वर्तमान प्रबंध, जकर स्वरूप 'भारतीय साहित्यक निर्माता' सिरीजक आवश्यकतानुसार निर्धारित अछि, तमिल जनपदक

साहित्येतिहासक सन्दर्भमे भारतीक उपलब्धिकेँ रेखांकित करैत अछि । भारतीक जन्म प्रायः एक शताब्दी पूर्व भेल छल जखन आधुनिक भारतक इतिहास जेना एक चौबट्टी पर ठाढ़ छल । ओ लोकमान्य तिलक आ भी. ओ. चिदम्बरम् पिल्लै, श्री अरविन्द आ महात्मा गांधी, वन्दे मातरम् आ असहयोग केर युग छल । एहि कालमे भारतीक ई भूमिका रहलैन्ह जे ओ तमिल गद्य आ काव्य केँ एवं तमिल चेतनाकेँ एक नव शक्ति, एक नव दिशा, एक नव युगबोधसँ अनुप्राणित करथि । हुनका पश्चात् तमिल साहित्य जे पहिने छल से नहि रहि सकल, कारण ओकरा नव शक्तिक प्रयोग, नव दायित्वक निर्वाह आ नव क्षितिज दिस यात्रा करबाक छलैक ।

एहि प्रबंधमे उद्धृत भारतीक अंग्रेजी अनुवाद सबटा हमरे द्वारा कैल अछि । जिज्ञासु पाठककेँ भारतीक कविता केर पूर्ण प्रतिनिधि संकलनक हेतु हम अपन Poems of Subramania Bharati देखबा लै कहबैन्ह । मुदा एहि उद्देश्यसँ एहू पुस्तकमे अनूदित रूपमे एकरा यथासंभव स्थान देल गेल छैक ।

साहित्य अकादेमी जे एहि पुस्तकक प्रणायनक काज हमरा सौंपलक ताहि हेतु हम ओकर आभारी छी । हम समीक्षक आ समालोचक लोकनिक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत छियैन्ह जे भारती पर हमर पूर्व प्रणीत पुस्तकक स्वागत कै प्रेम आ श्रद्धाक ई काज करबा लै हमरा प्रोत्साहित कैलन्हि । आशा अछि, ई लघु प्रयास आगामी भारतीक जन्म शताब्दी समारोहक हेतु किछु पृष्ठभूमि तैयार करत ।

अन्तमे अपन पिता श्री के. आर. श्रीनिवास आयंगार, माता श्रीमती पद्मासनी आ भ्राता प्रो. एस. अम्बिराजनक प्रति आभार प्रकट करैत छी जे हमरा एहि कार्यमे अनवरत प्रोत्साहन आ अपन परामर्श प्रदान कैलन्हि ।

प्रेमा नन्दकुमार

मदर्स सेन्टर,
डी-११, बी. एच. पी.भी. टाउनशिप
विशाखापटनम् : ५३० ०१२
फरबरी, १९६८

सुब्रह्मण्य भारतीक पूर्व तमिल साहित्य

भारतक दूटा महान सहित्य सुदूर प्रचीन कालक अछि—उत्तर भारतवर्षमे संस्कृत आ सुदूर दक्षिणमे तमिल । दूनूक मनोरम इतिहास छैक जे दू हजार वर्षहुँसँ अधिक प्रचीन काल धरि पहुँचल अछि । मुदा तमिल भाषाक लिखित इतिहासक प्रारंभ होइत अछि कमसँ कम ईसाक दोसर शताब्दीसँ वा ओहिसँ बहुत पूर्वसँ नहि । ताहि काल धरि तमिल जाति अपन विशिष्ट सांस्कृतिक विकास कऽ लेने छल जे ओकर साहित्यमे प्रतिविम्बित अछि । एहि जातिक प्रथम भावोच्छ्वास २३८१ गोट कवितामे प्रकट भेल अछि जाहिमे एक तमिल परम्परा स्थापित भेल अछि । ई कविता सभ ४७३ गोट कवि द्वारा रचित अछि जाहिमे १०२ अज्ञात कवि छथि । उषाकाल मे सद्यः प्रस्फुटित सुरभित प्रसून जकाँ ई कविता सभ सम्प्रति 'एत्तु-त-तोगै' (आठ गीतक समूह) आ 'पत्तु-प-पात्तु' (दस ग्राम-कविताक समूह) मे संगृहीत अछि आ आब दुहूकेँ मिला कै 'संगम काव्य' कहल जाइत अछि ।

तकरा बाद महाकाव्यक युग आयल । पाँच टा महान तमिल महाकाव्यम सँ केवल तीनटा धरि अपन समग्र रूपमे हमरा लोकनिकेँ सम्प्राप्त अछि । ओहिमे सबसँ प्रसिद्ध अछि राजकुमार इलैंगो लिखित 'सिलप्पाधिकारम्' (नूपुर गीत), जे रामायणक समकक्षे तमिल मानसमे अपन स्थान रखैत अछि । सीत्तलै सात्तनरक 'मणिमेखलै' महाकाव्य बौद्ध धर्म केर गाथा थीक जाहिमे वासनामात्रक त्याग द्वारा संसारक दुःखसँ मुक्ति पैबाक आदर्श व्याख्यात भेल अछि । जैन परम्परा पर आधृत 'जीवक चिन्तामणि' प्रायः एहि तीनूमे सँ अंतिम महाकाव्य थीक जकर प्रणयन तिरुत्तक्क देवर नवम शताब्दीक निकट कैलन्हि । गत्यात्मक घटना-प्रवाह एवं धार्मिक ओजमे ई तीनूमे सर्वाधिक उत्कृष्ट महाकाव्य सेहो अछि । एकर

जीवन्तता एहिमे निहित अछि जे ई चरित्र-चित्रण, काव्यात्मक अभिव्यक्तिक गहनता आ छन्दगत परिपूर्णताक दृष्टियेँ भावी महाकाव्य-रचनाक हेतु एक मार्गदर्शक आदर्श बनि गेल । महाकाव्यीय आख्यायिकाकेँ दिशानिर्देश करबामे ई जे आदर्श दऽ सकल तकरा सुब्रह्मण्य भारतीयेक आगमन अपना पदसँ उखाड़ि सकल ।

महाकाव्य युग आलवार एवं नायनमार कविगणक बहुदीप्तिमयी भक्तिक युगमे बदलल । तमिल ओहि मध्ययुगक सामान्य लोकभाषाकेँ बहुत प्रशंसनीय रूपेँ आत्मसात् कैलक । पेरिय आलवार आ नम्मालवार, अप्पर आ मानिकवाचगर सदृश सन्त कवि तमिलकेँ एक नव जन्म प्रदान कैलन्हि । एहि ठामसँ आगू बस एक पदक्षेप मात्र करबाक छल कम्बन केर विस्तृत व्यापक महाकाव्य 'रामावतारम्' लग पहुँचबामे । संगम कालेसँ रामकथा तमिल जनपदक लोकप्रिय कथा बनि गेल छल आ आलवार कवि लोकनि सेहो अपन सैकड़ों भक्तिगीतमे रामक वीरताक गाथा गौने छलाह । मुदा ई कम्बने बुतेँ संभव छल जे ओ रामक वर्त्तमान गाथा-समूह, वाल्मीकिक विशाल महाकाव्य एवं तमिल लोकनिक नैतिक आ आध्यत्मिक चेतनाकेँ एक्के ठाम मिला कै विशद महाकाव्यक एहन रूप दऽ सकलाह जे ओ भावी पीढ़ीक हेतु एक स्थायी निधि बनि गेल । टी. पी. महासुन्दरन केर शब्दमे 'रामावतारम्' "मानवक उन्नयनकेँ संभव बनैबाक हेतु भगवानक मानव अवतार" केर विशिष्टताकेँ वास्तविक रूपेँ उद्भासित करैत अछि ।

कम्बनक पश्चात् कतोक शताब्दी धरि लोकप्रिय कवि लोकनिक अभाव नहि रहल, मुदा क्यो कम्बनक उँचाइ धरि नहि पहुँचि सकलाह । किछु छिटफुट विलक्षण गीत-रचनाकेँ छोड़ि तमिल काव्यमे क्रमात् अधिक बोझिल रूढ बिम्बविधान एवं छन्दगत कलाबाजीमे प्रमुख रूपेँ शक्तिक दुरुपयोग कैल गेल । महाकाव्य लिखल जाइत रहल मुदा से अधिकांशतः 'जीवक चिन्तामणि' एवं 'रामावतारम्' केर शैलीमे रचित पुराण-गाथाक रूपमे । ओहिमे सँ कोनो कृति तिरुत्तक्क देवरक महाकाव्यक गरिमा अथवा कम्बनक रचनाक गीतात्मक प्रसार आ हुनक अविच्छिन्न लोकप्रियताकेँ नहि

प्राप्त कऽ सकल । तैं ई अनिवार्य छल जे रचनाधर्मिता आ कल्पनाक एहि अनुर्वरतासँ तमिल शीघ्र अपनाकेँ मुक्त करय । परिवर्तनक हेतु परिस्थितियो अनुकूल भऽ गेल आ तमिल श्रोता अपन हार्दिक आकांक्षाकेँ व्यक्त करऽवला नव स्वरकेँ सुनबाक हेतु उत्कंठित छलाह ।

एहि परिवर्तनक प्रमाण उन्नैसम शताब्दीक मध्य काल धरि प्रकट होमऽ लागल । रहस्यवादी रामलिंगस्वामी अपन महाकरुणापूर्ण गीतक रचना करऽ लगलाह । गोपालकृष्ण भारतीक 'नन्दनार चरित्रम्' जनभाषाकेँ काव्यभाषाक रूप देलक । प्रो. सुंदरं पिल्लै एक समग्र नाटक 'मनोन्मनीयम्' केर रचना कै ई देखौलन्हि जे तमिल भाषा परम्परा द्वारा लादल बन्धनकेँ तोड़ि सकैत छल । मुदा 'मनोन्मनीयम्' प्रथम अनिर्णीत प्रयास मात्र छल । तमिलकेँ सरल एवं आधुनिक बनैबाक लेल एखनहुँ बहुत बाधाकेँ, विशेषतः अल्पदृष्टिवला शिक्षाविद लोकनि द्वारा सृजित बाधाकेँ, पार करब शेष छल । एतावता, भी. कल्याणसुन्दर मुदालियर स्वयं संस्कृत पंडित रहितहुँ अपन परम्परागत छन्दविधानमे रचित कवितामे जनभाषाक लय केर समावेश कै कविताकेँ लोकजीवनक अधिक निकट अनबाक प्रयास कैलन्हि ।

हमरा सभहक ई सौभाग्य जे एहि कालखंडमे साहित्य-भूमि पर वेदनायकम् पिल्लै (कवि, उपन्यासकार), बी. आर. राजम् अय्यर (उपन्यासकार, दार्शनिक) ए. माधवैया (उपन्यासकार, कथाकार) एवं यू.भी. स्वामीनाथ अय्यर (विद्वान, सम्पादक, समालोचक) सन लेखक-गण प्रकट भेलाह आ हुनका लोकिनक द्वारा तमिलकेँ जे रूप देल गेल से अधिक व्यावहारिक, स्वाभाविक एवं सुबोध बुझना गेल । मुदा ओहो लोकनि भाषाक जटिल रचनासँ अपनाकेँ पूर्णतया मुक्त नहि कऽ सकलाह । तमिल गद्य आ कविताकेँ आधुनिकताक आयाम देबाक कार्य तँ एक अन्यतम कवि एवं भाषाक अधिकारी आचार्ये कऽ सकैत छल । जेना तमिल केर एही आन्तरिक अभीष्टक पूर्त्यर्थ सुब्रह्मण्य भारतीक आविर्भाव भेल । ओ दुइयो दशकसँ कमे अवधि धरि सक्रिय रूपेँ साहित्य सर्जना कैल । मुदा एतबा समयक अभ्यन्तर

तमिल कविता आ साहित्य युगान्तरकारी प्रगति कऽ लेलक । ओ वास्तवमे दू हजार वर्षसँ संचित प्रभावशाली परम्पराकेँ उठा कै एके बेरि फेकि नहि देलक, प्रत्युत ओहिमे जे जीवित साहित्यिक निधि छल तकर पश्चिम केर प्राणदायक वायुक सहायतासँ नव प्राण-प्रतिष्ठा कैलक । तकर फल भेल जे एक नव कविताक सृर्जन भेल जे देशभक्तिक प्रबल आह्वान कैलक, ग्राम्य क्षेत्रक वैभवकेँ चित्रित कैलक, प्रेमक भावभूमिमे तमिल अन्तर्मानस केर अन्वेषण कैलक आ तमिल चेतनामे निहित आध्यात्मिक लोकोत्तर आनन्दकेँ अंकित कैलक । ई भारतीक महत्ताक परिचायक थीक जे तथाकथित भारती युग वर्त्तमान काल धरि पसरि कै चल आयल अछि ।

सुब्रह्मण्य भारतीक जीवन-वृत्त

सुब्रह्मण्य भारतीक जन्म एट्टयपुरम् जिलाक केर तिरुनेलवेली मे १८८२ क ११ दिसंबर कैं भेल छल । तमिलनाडुक एहि छोट जमींदारीक स्वामी एक 'महाराज' छलाह जे प्रायः निरंकुश छलाह । सुब्रह्मण्यक पिता चिन्नस्वामी अय्यर एही जमींदारीक सेवामे छलाह । सुब्रह्मण्य अय्यरक प्रथम पुत्र छलथिन्ह आ शैशव-कालेसँ मातृहीन छलाह । तैं ई कोनो अजगुत बात नहि जे अय्यरक समस्त महत्वाकांक्षाक केन्द्र ई बालक छलथिन्ह जनिका अंग्रेजी शिक्षाप्राप्त कोनो पदाधिकारी वा अभियन्ताक रूपमे देखबाक मनोरथ रखने छलाह । मुदा सुब्रह्मण्यकैं अध्ययनमे कोनो खास रुचि नहि छलैन्ह । ओ केवल एट्टयपुरम् केर भीतर आ बाहर स्वच्छन्द घूमल करथि आ विशेष काल तमिलक भव्य काव्य परम्परामे अभिषिक्त अपन नानाक संग रहल करथि । सुब्रह्मण्य दस वर्षक भेलो नहि रहथि कि ओ तमिलमे रचना करऽ लगलाह । हुनक वाल्यकालक संगी एस. सोमासुन्दर कहैत छथि :

"हमरा एकर व्यक्तिगत अनुभव अछि जे भारतीक पिताकैं हुनक पुत्रक एहि आश्चर्यजनक काव्य प्रतिभाक हेतु कतेक प्रशंसा कैल जाइन्हि । जखन ओ आठ वर्ष मात्रक छलाह तँ ओ ककरो सँ प्रेरित भै पद्य-रचना कऽ लैत छलाह । प्रसिद्ध छन्दकार लोकनि सेहो हुनक एहि चमत्कार पर आश्चर्यचकित भऽ जाइत छलाह ।"

मुदा अय्यर एहिसँ प्रसन्न नहि छलाह । ओ अपन पुत्रकैं निकटवर्त्ती तिरुनेलवली शहरमे पठा देलथिन्ह आ एक उच्च विद्यालयमे हुनक नाम लिखा देलथिन्ह । यद्यपि विद्यार्थी समुदायमे अपन प्रत्युत्पन्नमति एवं सहज काव्य-रचनाक गुणेँ सुब्रह्मण्य हलचल उत्पन्न कऽ देलन्हि, मुदा ओ मैट्रिक परीक्षा देबाक हेतु नहि चुनल जा सकलाह । घुरि कै ओ एट्टयपुरम् चल अयलाह आ ओतय भूमि-

पति महाराजक संगीक रूपमे जमींदारी सेवामे नियुक्त भऽ गेलाह । जखन ओ मात्र पन्द्रह वर्षक छलाह हुनक विवाह करा देल गेलन्हि । हुनक पत्नी एक चेल्लमल्ल छलथिन्ह । वयक कतबा गुना अधिक विद्वत्ता प्रदर्शित करबाक कारणेँ आगामी किछु वर्षमे ओ एट्टयपुरम् केर प्रबुद्ध वर्गमे एक लोकप्रिय व्यक्ति बनि गेलाह । ओ राजदरबारक एक आयोजनक अवसर पर अपन कवित्व प्रतिभाक प्रभावशाली परिचय देलन्हि तँ हुनका 'भारती' क उपाधि प्रदान कैल गेलन्हि । ई हुनक जीवनक एक चिरस्मरणीय क्षण छल । जे बालक काल्हि धरि 'एट्टयपुरम् केर सुब्बियाक' रूपमे जानल जाइत छल, आब भारतीक रूपमे विख्यात भऽ गेल और आइ धरि विश्व भरिक लाख-लाख तमिलप्रेमी लोकनिक हेतु ओ 'भारती' छथि ।

हुनक ई सुखावस्था कमे समय धरि रहलन्हि । एक वर्षक भीतर चिन्नस्वामी परिवारकेँ विपन्नावस्थामे छोड़ि स्वर्गवासी भऽ गेलाह । हुनक द्वितीय पत्नी अपना बच्चा सबकेँ लऽ कै नैहर चल गेलथिन्ह आ भारती काशी चल अयलाह । एतय अगिला दू वर्ष ओ अपन पितृव्य कृष्ण शिवन एवं हुनक पत्नी कुप्पम्मलक संग बितौलन्हि । ई दूनू धर्मपरायण दम्पती रहथि । एतय ओ बहुत तीव्र गतियेँ संस्कृत, हिन्दी आ अंग्रजीक नीक ज्ञान प्राप्त कऽ लेलन्हि आ प्रयाग विश्वविद्यालयसँ उत्तम श्रेणीमे प्रवेशिका परीक्षामे उत्तीर्ण भेलाह ।

काशीक प्रवास भारतीक व्यक्तित्वमे विशेष परिवर्त्तन आनलक । वाह्य रूपमे ओ मोछ आ सिक्ख मुरेठा राखय लगलाह आ चलबामे ओ खूब दमगर आ तेज भऽ गेलाह । एनी बेसेन्ट केर भाषण सुनि कै हुनक दृष्टिक वेश विस्तार भेल । आन्तरिक दृष्टियेँ सेहो हुनक कायपलट भऽ गेलन्हि । परम्पराबद्ध कविताक बन्धनमे जकड़ल नवयुवक क्रान्तिकारी विचारधाराक एक आधुनिक कविमे बदलि गेल । एहिमे अंग्रेजीक रोमान्सवादी कवि शेलीक जे ओ गहन अध्ययन कैलन्हि तकरो विशेष हाथ छल । मुदा दारिद्र्य एखनहुँ हुनक पाछु धेनहि रहल । यद्यपि ओ किछु समय धरि शिक्षण कार्य

कैलन्हि, मुदा ओहिमे ने वर्त्तमानमे कोनो सन्तोषजनक वेतन छलन्हि, ने भविष्येमे वृद्धि केर कोनो आशा । अंततः ओ १९०१ मे एट्टयपुरम् केर जमींदारी सेवामे घुरि कै चल अयलाह ।

एहि सुदूर अज्ञात स्थानमे जीवनक सुख-सुविधा प्राप्त छलन्हि आ भारती एतय आगामी दू वर्ष ओहि निरंकुश महाराजक सहयोगीक रूपमे बिताओल । मुदा अपन एकान्तमे ओ शेली, कम्बन आ इलैंगोक काव्य-वैभवमे अवगाहन करैत रहलाह । तखन एक दिन एक व्यंग्य कविता द्वारा 'महाराज' सँ शांत भावेँ विदा लै ओ जनाकीर्ण मदुराइ नगर पहुँचलाह । एतय ओ सेतुपति उच्च विद्यालयक तमिल पंडितक एक रिक्त पद पर तीन मासँ किछुए अधिक समय धरि कार्य कैलन्हि । संयोगमात्रसँ भेल एक परिचय सूत्रसँ ओ तमिल केर प्रमुख दैनिक समचारपत्र 'स्वदेश मित्रन्' केर सम्पादक जी. सुब्रह्मण्य अय्यर केर सम्पर्कमे अयलाह आ १९०४ केर नवम्बरमे ओहि दैनिक केर उपसम्पादक बनि गेलाह ।

एहि कार्यमे हुनका ने कोनो विशेष पारिश्रमिक भेटैत छलैन्ह, ने कोनो आरामे प्राप्त छलैन्ह । मुदा कमसँ कम ई हुनका मनोनुकूल कार्य अवश्य छलैन्ह । एहि काजक क्रममे स्वामी विवेकानन्द, अरविन्द घोष आ बाल गंगाधर तिलक सन विशिष्ट नेता लोकनिक भाषणकेँ तमिलमे अनवरत अनुवाद करैत हुनक समय अबाध गतियेँ व्यतीत होमऽ लागल । उन्नैसम शताब्दीक जड़ीभूत गद्य भारतीक हाथेँ सुस्पष्ट, निश्चयात्मक एवं सशक्त विवेचनक योग्य निर्बंध, सुगठित, स्वाभाविक, आकर्षक एवं ओजस्वी माध्यममे बदलि गेल । अनुवाद सन नीरस कार्य पर्यन्त हुनका लेल एक अमूल्य साहित्यिक कार्यशाला एवं प्रशिक्षण केन्द्र बनि गेल । शीघ्र भारतीक निबन्ध सेहो कथ्यक शुद्धता आ सुस्पष्ट एवं शक्तिशाली शैलीसँ परिपुष्ट भऽ उठल । भारतीक अगिला आ अंतिम डेगमे तमिल कविताकेँ एक गौरवपूर्ण उपलब्धि हैबाक छलैक, किएक तँ जीवनी-शक्ति आ लालित्य, उदात्तता एवं सहजताक अद्भुत् सम्मिश्रण लेने भारतीक अनुपम कविता तमिलक साहित्यिक धरातल पर एके बेर फूटि पड़ल ।

आरंभमे भारतीक लेखन हुनक भारतीय राजनीतिमे गंभीर सहभागितासँ शक्ति आ प्रेरणा प्राप्त कैलक । उपसम्पादकक रूपमे ओ अपनाकेँ राजनीतिक गतिविधिक बहुत निकट रखलन्हि आ शीघ्र कांग्रेसमे उग्रवादी दलक प्रबल समर्थक भऽ गेलाह । बंगालक दुर्भाविनाग्रस्त विभाजन समस्त देशमे विद्वेष आ उत्तेजनाक लहरि उत्पन्न कऽ देलक (१८०५) । भारती दिसम्बरमे अखिल भारतीय कांग्रेसक बनारस अधिवेशनमे उपस्थित भेलाह आ घुरैत काल कलकत्ताक यात्रा कैलन्हि जतय भगिनी निवेदितासँ हुनका भेट भेलन्हि । स्वामी विवेकनन्दक ई महान आध्यात्मिक पुत्री भारती मे तुरत एक रूपान्तरण आनि देलथिन्ह जाहिसँ आब ओ तीन महान लक्ष्यक पूर्तिमे लागि जैबाक संकल्प कैलन्हि—भारतक राजनीतिक स्वतंत्रता, जाति-प्रथा केर उन्मूलन आ भारतीय नारी जातिक मुक्ति । भारती आजीवन भगिनी निवेदिताकेँ बहुत कृतज्ञतापूर्वक अपन आध्यात्मिक गुरु, मानवी कायामे वस्तुतः महाशक्तिक रूपमे, स्मरण रखलन्हि । ओ अपन दूटा देशभक्तिपरक कविता-संग्रह, 'स्वदेश गीतांगल' (१९०८) और 'जन्मभूमि' (१९०९) केँ भगिनी निवेदिताकेँ अर्पित कैलन्हि 'जे बिन बजनहि एक क्षणांश मात्रमे हमरा मातृसेवा एवं त्यागक महत्वक सत्य स्वरूप बुझा देलन्हि ।'

आब भारतीकेँ स्वातंत्र्य आन्दोलनक उत्ताप, ओकर चिन्ता आ अनिश्चितताक संकटमे अधिकसँ अधिक भाग लेबाक संकल्प पहिनहुँसँ अधिक प्रबल भऽ गेलन्हि । मुदा हुनक प्रचण्ड उग्रता भरल लेखक प्रकाशन 'स्वदेश मित्रन' सन नरमपन्थी पत्रिकामे नहि भऽ सकैत छल । जेना अपनाकेँ कैद पाबि कै भारती औना उठलाह । हुनक ज्वलित शब्दकेँ उन्मुक्त अभिव्यक्तिक अवसर देबाक हेतु १९०६ मे एक नव साप्ताहिक 'इंडिया' केर प्रकाशन तिरुमलाचारियार आ श्रीनिवासचारियार नामक दुई देशभक्त भ्राता द्वारा प्रारंभ कैल गेल, जे अपन विशाल पैतृक सम्पत्तिकेँ स्वतंत्रता-अन्दोलनमे लगा देबाक हेतु कृतसंकल्प छलाह ।

तकरा बाद भेल सूरतमे कांग्रेस केर विभाजन—नरम दल आ गरम दलक बीच । ई स्वाभाविक छल जे भारतीक उग्र प्रकृति

हुनका गरम दल दिस आकर्षित करन्हि जकर नेतृत्व लाला लाजपतराय, अरबिन्द घोष आ बाल गंगाधर तिलक कऽ रहल छलाह । भारतीक कवितामे नव पाँखि लागि गेल आ ओ स्वतंत्रताक उद्घोषलहरि पर आन्दोलित स्वतंत्र आ समृद्ध भारत केर आह्लादपूर्ण कल्पना करऽ लगलाह । भारतीय जन-समुदायक ओ वर्ग जे स्वकेन्द्रित छल आ स्वतंत्रता-आन्दोलनसँ अपनाकेँ फराक रखने छल एवं नरमपन्थी लोकनि—एहि दूनू पर भारती प्रबल प्रहार करऽ लगलाह । देशभक्तिक जे धधाइत ज्वाला हुनक कविताकेँ आलोकित कऽ रहल छल से हुनक राजनीतिक विरोधीगणहुँकेँ आकर्षित कैलक । वस्तुतः मद्रासक एक प्रमुख नरमपन्थी नेता भी. कृष्णस्वामी अय्यर स्वयं भारतीक प्रथम कविता-संग्रह 'स्वदेश गीतांगल' (मातृभूमि गान) केर प्रकाशन आ व्यापक प्रचार हेतु भारतीकेँ आर्थिक साहाय्य प्रदान कैलथिन्ह ।

अनिवार्यतः अंग्रेज सरकार समय पाबि राष्ट्रीय राजनीतिक एहि तूफानी संवाहक लोकनि पर दमन-चक्र संचालित कैलक । अरविन्द घोष आ भी. ओ. चिदम्बरम् सन प्रायः सभ अग्रगण्य उग्रवादी नेतागण जेलक भीतर बन्द कऽ देल गेलाह । तिलक सुदूर विदेश बर्माक मंडाले नगरमे एकान्त कारावासक हेतु पठा देल गेलाह । जहिना-जहिना 'वन्देमातम्' (कलकत्ता) आ 'इन्डिया' (मद्रास) सन उग्रवादी पत्रिका सब पर दमन-चक्र और कसाइत गेल, भारतीक गिरफ्तारी सर्वथा आसन्न बुझना गेल । हुनका पकड़बा लै वारंट सेहो जारी भऽ गेल । सौभाग्यसँ भारती पूर्व चेतावनी देनिहार अपन मित्र लोकनिक परामर्शकेँ सुनलन्हि आ भारतमे अंग्रेजक नौकरशाही आ निरंकुश शासनक विरुद्ध संग्राम जारी रखबाक हेतु पांडिचरी चल जैबा लै सहमत भेलाह, जे ताहि समयमे फ्रांसीसी शासनक अन्तर्गत छल । भारतीक हेतु ई वास्तवमे अपनाकेँ अनिश्चित आ अज्ञातक प्रति समर्पित करब छल । मुदा किछु दिन धरि हुनक संरक्षण श्रीनिवास चारियारक मित्र कुप्पस्वामी आयंगार कैलथिन्ह । मित्रता स्थापित करबाक अपन गुणक बलेँ भारती ओतय कोनहुना उन्नति करैत रहलाह । ओम्हर मंडायम भ्राता सेहो पांडिचरी प्रवासमे आबि

गेलाह आ ओतहिसँ 'इंडिया' केर प्रकाशन करै लगलाह । किछु दोसरो अल्पजीवी पत्रिका प्रारंभ कैल गेल—यथा, 'विजय', 'कर्मयोगी' एवं 'बाल भारत' । किछु समय घरि स्थानीय मित्रता एवं व्यस्त पत्रकारिता भारतीकेँ प्रसन्न आ उत्साहित बनौने रखलक आ तकरा बाद शीघ्रे हुनक परिवारो हुनका लग आबि गेलन्हि । अंग्रेज सरकारक अनवरत 'ध्यान' एवं फ्रांसीसी पुलिसक समय-समय पर कैल गेल चौकसीके छोड़ि ओतय हुनक जीवन कोनो बहुत खराब नहि छलन्हि आ प्रत्यक्षतः भविष्यो नीक संभावनासँ पूर्ण बुझाइत छलन्हि । 'इंडिया' आ ओकर सहयोगी पत्रिका सबकेँ जे असाधारण लोकप्रियता भेटलैक ताहिसँ ब्रिटिश सरकार क्रुद्ध भऽ उठल । ओ एकरा विरुद्ध दंडात्मक कारवाई शुरू कैलक आ भारतमे 'इंडिया' केर प्रवेश पर प्रतिबंध लगा देलक । फलत : १८१०क १२ मार्चक अपन अंकक संगे ई पत्रिका पाठकसँ विदा लेलक । एकरा बाद शीघ्रे आनो पत्रिका सभकेँ बन्द करऽ पड़लैक । एतावता, १९१० केर समाप्तिसँ पूर्वे भारतीकेँ कोनो काज नै रहि गेलन्हि आ निकट भविष्यमे हुनक कोनो लेखन केर प्रकाशित हेबाक कोनो संभावना नहि रहलन्हि ।

आब भारतीक जीवनमे सर्वाधिक कष्टक काल प्रारंभ भेल । आर्थिक कठिनता हुनका घरकेँ विपन्न बना देलन्हि जाहिसँ ओ अपना परिवार लै दुनू साँझक भोजन पर्यन्तक ओरियान नै कऽ सकैत छलाह जे निश्चित रूपेँ एक सक्रिय लेखक आ पत्रकारक हेतु दारुण स्थिति होइत छैक । हुनक प्राण-रक्षाक एके आधार छल पांडिचरीक हुनक अद्‌भुत मित्रता । श्री अरविन्द राजनीतिकेँ छोड़ि पांडिचरीकेँ अपन तपस्याक 'गुफा' निश्चित कै एक दीर्घ आ कठोर योग-साधना प्रारंभ करबा लै १९१० केर अप्रैल मासमे ओतय पहुँचि गेलाह । ब्रिटिश पुलिसक विस्तृत परिधिक पहुँचसँ बाहर निकलबाक हेतु दोसरो राजनीतिक नेता सुब्रह्मण्य शिवा, भी. भी. एस. अय्यर प्रभृति पांडिचरीमे शरण लेलन्हि । ई नेता लोकनि जे क्रांतिकारी हैबाक अतिरिक्त उच्च कोटिक बुद्धिजीवी सेहो छलाह भारतीकेँ आवश्यक मानसिक एवं आध्यात्मिक संगति प्रदान कै अनुप्रैरित करैत रहलथिन्ह । ओ लोकनि अपनामे वाद-विवाद आ विवेचना करथि,

वेद आ गीताक अध्ययन करथि आ साहित्यिक टिप्पणी एवं प्रश्नावलीक आदान-प्रदान करथि । सबसँ महत्त्वपूर्ण ई जे ओ लोकनि नवीन भारतक अपन आकांक्षामे एकजुट रहथि और अनेक विधिसँ ओकर स्वतंत्रताक हेतु सक्रिय रहथि ।

ठीक ओही कालमे जखन सुब्रह्मण्य भारतीक शरीर आ मन विवशताक कतोक बन्धनसँ जकड़ल रहन्हि हुनक वाणीकेँ नवीन उत्कर्षक शिखरकेँ छूबाक छलैक आ सर्वाधिक स्वच्छन्दतामे अधिकतम दूरी धरि विचरण करबाक छलैक । हुनक प्रगल्भ आ ऊर्जस्वित काव्य-प्रतिभा क्रमशः वेदान्तीय मानवतावादमे परिणत भै परिपक्व भऽ गेलन्हि । ई सर्वथा सत्य जे ओ अपन कविताकेँ तुरत प्रकाशित नै करा सकैत छलाह । मुदा तैं की ? एतय हुनका लग छल एक चुनल प्रबुद्ध वर्ग, भावी मुक्त संसारक अग्रदूत लोकनिक एक समूह । एतहि रहथि श्रीनिवास चारियार, भी. भी. एस. अय्यर आ श्रीअरविन्द । भारतीक साहित्यिक प्रयोग चलैत रहल, ओ आश्यचर्यजनक ओजस्विता आ समर्पणभावसँ लिखैत रहलाह । हुनक लेखनी कोनो सामान्य आकस्मिक घटनामे ईश्वरक महान उदारता आ कृपाक दर्शन कै विस्मयसँ भरि जाइत छल । उदाहरण लै जखन ओ एक बेर अपन निवास-स्थानकेँ बदललन्हि तँ अगिले दिन एक अन्हड़मे हुनक पहिला आवास ध्वस्त भऽ गेल :

ओतय छलहुँ काल्हुक दिन,
ओतहि एखन रहितहुँ जँ
की होइत हमरा सबहक
जीवनमे ? मृत्यु लेने
अन्हड़ तँ आयल छल,
मुदा की ईश्वर नहि
बचा लेलन्हि हमरा सभकेँ
ओकर प्रहारसँ आब ?

हुनक यैह विश्वास पांडिचरीक आत्म-प्रवासक दीर्घ विषम कालावधिकेँ काटबामे हुनक सहायक भेलन्हि । जेना अपना अन्तरेसँ आत्मिक धैर्यकेँ प्राप्त करैत अंधकारमय परिवेशक बीच अपन एही

निष्ठाकेँ ओ बेर-बेर अभिव्यक्ति दैत रहलाह :

हीन दुर्बल हृदय केर जे
रहथि डूबल सोचमे से
करब हम बस अहँक सेवा
सतत होयत हमर रक्षा
गैब महिमा शक्ति केर हम
तमिल स्वर मे, जे मधुरतम
भरल हुनकर भक्ति उर जँ
रहि न जायत कतहु भय तँ

भारती धर्मपरायण हिन्दू छलाह आ सम्पूर्ण देवी-देवताक प्रति हुनका श्रद्धा छलन्हि । मुदा हुनक वेदान्तीय रहस्यवाद शक्ति-तत्त्वसँ केन्द्रीय शक्ति प्राप्त करैत छल जाहिमे हुनक देशभक्ति-प्रवणता सेहो अन्तर्भूत छल । शीघ्र कविता हुनका लै मायाकेँ निरस्त करबाक साधना आ आत्मा एवं लक्ष्य-प्राप्तिक मार्गकेँ प्रकाशित करऽवला ज्योति-पुंज बनि गेल :

हे माया, हमरा लूटक छल अहँक योजना ।
मुदा अहींक विलय कऽ दी से हमर साधना ।।
तकरा लै की सिन्धु दूर, जे मरण ठानने ।
की करबे किछु तकर, देह जे झूठ जानने ।।

बहुधा घोर निराशामे, एते धरि जे भूखल अवस्थामे, भारती पाँडिचरीक समुद्र-तट पर घंटाक घंटा समय बिताबथि । भगवानक कृपा जे कखनो ओ आत्महत्याक विचार मनमे नहि अनलन्हि । प्रत्युत, देहक अनित्यताक अनुभवसँ संवलित भै ओ नव शक्तिसँ पुनरुज्जीवित भऽ उठैत छलाह आ प्रसिद्ध नाटच आ गीतिकाव्यक कड़ी सभ एवं 'कन्नन पात्तु', 'पांचाली शपथम्' आ 'कुयिल पात्तु' सन स्फुट रचना करैत छलाह । एक दिन प्रवास-जीवन सहन करबासँ एकदम असमर्थ भै ओ ब्रिटिश भारतमे घूरि अयबाक आ ओकर जे कोनो परिणाम हो तकर सामना करबाक निश्चय कैलन्हि ।

१९१८ क २० नोअंबरकेँ फ्रांसीसी आ ब्रिटिश भारतक सीमाक निकट भारती गिरफ्तार कैल गेलाह आ २४ दिन धरि कुडुलोर

उपकारामे पुलिस हिरासतिमे राखल गेलाह । सौभाग्यसँ एनी बेसेन्ट आ सी.पी.रामस्वामी अय्यर सन श्रेष्ठ सार्वजनिक नेताक हस्तक्षेपसँ २४ तारीखकेँ रिहा कैल गेलाह आ तिरुनेलवेलीमे जनता द्वारा हुनक हार्दिक स्वागत कैल गेल । ओ अगिला दू साल अपन पत्नी चेल्लमल्ल केर जन्मस्थान कड़यममे बितौलन्हि ।

अर्थाभाव एखनहुँ हुनका चिन्ताग्रस्त बनौने छलन्हि । मुदा हुनक हृदय ताहूसँ अधिक एहिसँ उत्पीड़ित रहन्हि जे हुनक पांडुलिपिक पुलिन्दा सब एम्हर-ओम्हर छिड़ियायल छल, तकर तुरत प्रकाशनक कोनो आशा नहि छलन्हि । ओ अपील जारी कैलन्हि आ एक प्रकाशन योजना चलैबा लै मित्रगणसँ आग्रह कैलन्हि । मुदा सर्वत्र हुनका दू टूक जवाब भेटलन्हि । हुनक ओजस्वी आ आकर्षक व्यक्तित्वसँ प्रभावित भै प्रशंसक लोकनिक भीड़ हुनका चारू दिस बढ़ैत गेल । ओ निमंत्रित भै निकटवर्त्ती स्थान सभक भ्रमण करऽ लगलाह आ ओतय एक दिस 'अल्ला' तँ दोसर दिस 'मृत्यु' सन विविध विषय पर भाषण देलन्हि । ओ मद्रासमे एक बेर महात्मा गांधीसँ सेहो भेट कैलन्हि । हुनक अतीतक क्रान्तिकारी उग्रता ता धरि किछु कम भऽ गेल छलन्हि आ भारती महात्मा गांधीक उपदेश दिस खास कै अहिंसाक युगधर्म एवं राजनीतिक क्षेत्रमे असहयोगक रणनीति दिस झुकऽ लागल छलाह ।

हुनक मनौवैज्ञानिकताक एही समयमे पूर्व पत्रिका 'स्वदेश मित्रन' हुनका अपना परिवारमे फेर बजा लेकन्हि । भारती अत्यन्त आह्लादित भेलाह । जाउ हे अनिश्चितता आ अस्पष्टताक काल ! विदा, विवश निरुद्यम केर उत्पीड़न !

भारती आब पूर्ण परिपक्वता उपलब्ध कऽ लेने छलाह, तैं हुनक आकस्मिको रूपमे बाजल एक वाक्य अर्थगर्भिताक अकल्पित उँचाइ दिस बढ़ैत प्रतीत होइत छल । हुनक पत्रिकारिता आतिशबाजी मात्र जकाँ नहि प्रत्युत अनुभव एवं आन्तरिक ज्ञानालोक केर अक्षय भंडारसँ बहराइत बहुमूल्य वस्तु बूझि पड़ैत छल । विश्व घटना-चक्र (यथा तुर्की देशक परिस्थिति आ आयरलैंडक प्रश्न) पर कैल हुनक समीक्षा विशिष्ट पाठक लोकनि पर दृष्टि रखैत अर्थपूर्ण दृष्टांतसँ समन्वित

रहैत छल । जेना आयरलैंड पर लॉयड जॉर्ज केर अर्थपैशाचिक नीति केर तुलना ओ कम्बन केर 'रामवतारम्'मे सीता पर रावण केर आधिपत्यसँ करैत छथि जकर बोध तमिल पाठककेँ तत्काल भऽ जायब स्वाभाविक । जखन गांधीजीक असहयोग आन्दोलन पर हुनका अपन निश्चित मत व्यक्त करबा लै कहल जाइत छलैन्ह तँ अदूरदर्शिता-पूर्ण आन्दोलनसँ देश विभाजित भऽ सकैत अछि आ एकर एकरूपता खंडित, ई तर्क दैत प्रचुर सतर्कता रखबा पर बल दैत छलाह । अथवा ओहि समयमे जे दूटा वैष्णव सम्प्रदाय—तेनकलै आ वाडकलै—केर बीच न्यायालयमे मोकदमा चलि रहल छल तकर उदाहरण दैत ताही संघर्ष जकाँ ई (आन्दोलन) निष्फल सिद्ध भऽ सकैछ से तर्क प्रस्तुत करैत छलाह ।

हुनक समकालीन कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर केर जे व्यापक अभिनन्दन कैल जा रहल छल तकर भारती सन वास्तविक आ महान कवियें उन्मुक्त हृदयेँ स्वागत कऽ सकैत छलाह । 'स्वदेश मित्रन' मे हुनक अंतिम लेख टैगोर केर जर्मनी, आस्ट्रिया, फ्रान्स आ अन्यान्य देशक भ्रमण पर छल :

"आह ! मात्र प्रसिद्धि केर की लाभ ? हमर एक मित्र छथि जे एखन एक खास दलक संगठनमे रहि खूब ख्याति अर्जित कैलन्हि अछि । काल्हि ओ दल धूआँ जकाँ विलीन भऽ जायत आ ओकर सदस्यगण निपत्ता भऽ जेताह । एहि प्रकारक ख्याति बनि जायत 'एक झूठ, एक पुरान पिहानी, एक रूपहीन स्वप्न ।'

"यदि क्यो ख्यातिक आकांक्षा रखबे करैत अछि तँ ओकरा महान रवीन्द्र केर कोटिक ख्याति केर आकांक्षा राखक चाही । की हुनक ख्याति बंगालमात्रमे सीमित अछि ? अथवा की ओ भारते धरि सीमित अछि ? अथवा की एशिया मात्र धरि ? ई ख्याति तँ सुविस्तृत संसारमे, जर्मनी, आस्ट्रिया, फ्रांस आ कतय-कतय नहि पसरल अछि ! यद्यपि हुनक गीत बंगला भाषा मात्रमे अछि, विश्व तँ केवल अनुवाद रूपमे ओकर अवलोकन कैलक अछि । मुदा यैह अनुवाद सभ केहन व्यापक ख्याति प्राप्त कैलक अछि ?"

भारती स्वयं उच्च कविताक रचना प्रचुर परिमाणमे कैने

छलाह । मुदा एखन धरि तमिल पर्यन्तमे ओ संपूर्ण रूपमे प्रकाशित नहि भेल छल । समय आओत जखन स्वतंत्रता, काव्यकला आ अध्यात्म केर जे जे प्रेमी लोकनि हेताह से भारतीक अनुवादो मात्र प्राप्त करबा लै तरसताह । मुदा ताहि काल धरि भारती एक संघर्षशील पत्रकार मात्र रहथि जनिका चारू दिस अज्ञात रूपेँ अंधकारक छाया घेरि रहल छल । १९२०-२१ क बीच हुनका जेना एकर पूर्वज्ञान होमऽ लगलैन्ह जे हुनक जीवनक अन्त निकट आबि गेल छन्हि आ तदनुसार हुनका लेखनमे अन्य लोकक उदासीभरल आभासक पुट बहुधा झलकऽ लागल छल । अपन लेखन आ भाषणमे ओ मृत्युक समस्या पर विवेचना करऽ लागल छलाह । भरिसक एहि समस्या केर समाधानक संकेतो ओ पाबि गेल छलाह आ तकरा स्वीकार कै ओ शान्तिक उपलब्धि सेहो कऽ लेने छलाह । किएक तँ १९२१क ४ अगस्तक 'स्वदेश मित्रन'मे प्रकाशित हुनक एक लेखक उपसंहार एहि रूपक छल :

"हमरा विश्वास अछि जे मनुष्य जखन प्रह्लाद जकाँ विशुद्ध भक्ति प्राप्त कऽ लैत अछि आ अपन वैध पत्नी टाक प्रति मन्मथ जकाँ एकनिष्ठ रहैत अछि तँ ओ एहि पृथ्वीये पर मुक्ति उपलब्ध कऽ लैत अछि आ चिर आनन्दक अनुभव करैत ओ वस्तुतः ईश्वरलीन भऽ जाइत अछि ।"

अगस्त मासक अंतिम भागमे एक दिन संध्याकाल भारती त्रिप्लिकेन केर मन्दिरमे गेलाह आ पूर्ववत् ओहि ठामक हाथीकेँ एक नारियर प्रदान कैलथिन्ह । दुर्भाग्यवश तखन ओ हाथी मदमस्त छल आ ओ अपना सूंढ सँ हुनका पर आघात केलकैन्ह । हुनक मित्र आ प्रशंसक कुवलै कन्नन अचेत भारतीक सहायता आ रक्षा कैलथिन्ह । मुदा भारतीक दुर्बल शरीरकेँ तावत् ओ आघात अपूरणीय क्षति कऽ चुकल छल । हुनका अनेक उपाधि सभ उत्पन्न होमऽ लगलैन्ह । निष्ठापूर्ण सेवा आ शुश्रूषा प्राप्त करितो १९२१ केर १२ सितंबरकेँ भारती शांतिपूर्वक शरीर-त्याग कऽ देलैन्ह । सादा ढंगसँ मनाओल गेल हुनक अंतिम संस्कारक अवसर पर सक्कराइ चेट्टियार आ सुरेन्द्रनाथ आर्य सदृश हुनक मित्र लोकनि हुनका भाव भरल

श्रद्धांजलि अर्पित कैलथिन्ह आ विह्वल भावनासँ हुनक किछु गीत गाओल गेल । पत्रिका सभक अग्रलेखमे हुनक उत्कट राष्ट्रीयता, मंच पर हुनक विद्युन्मय उपस्थिति, हुनक सराहनीय गद्य-शैली आ अप्रतिम उद्दीप्त काव्य-रचना केर स्नेहिल स्मरण कैल गेल । प्रत्येक व्यक्ति खाहे ओ अनपढ़ सामान्ये लोक किएक ने हो ई अनुभव कैलक जे भारतीक उठि गेलासँ तमिल जीवन आ साहित्यमे एक रिक्तता, एक शून्य आबि गेल छल ।

दोसर दिस, भारती अपना पाछू कविताक एक भास्वर आ अमर राशि छोड़ गेलाह । ओ एक नव आशा आ नव आत्मविश्वासक अवदान दऽ गेलाह आ एक संपूर्ण भविष्यजीवी नवपीढ़ीक सृजन कऽ गेलाह । तमिल साहित्य पुनः पूर्व जकाँ कहियो नै भऽ सकै छल । भारती युग केर प्रारंभ भऽ गेल छल । भारतीक साहित्य-भंडारक ज्योतिसँ जखन सहस्रावधि युवा लोकनि अपन-अपन दीपकेँ प्रज्वलित कैलन्हि तँ तमिल साहित्यमे अक्षरशः एक गौरवशाली पुनर्जागरण आ पुनर्पुष्पीकरण आबि गेल । आ आधा शताब्दी पश्चात् भारती आइयो आधुनिक तमिल साहित्य केर सर्वोच्च निर्माताक स्थान पर प्रतिष्ठित छथि ।

भारतीक काव्य-भंडार

बहुत किछु पुश्किन जकाँ जखन भारतीक निधन ४० वर्षक भीतरे भऽ गेलैन्ह तँ हुनक समग्र कविताक प्रकाशन नहि भेल छल । हुनक परिवार आर्थिक कष्टक अवस्थामे हुनक कविताक किछु प्रकाशन एहि आशासँ शुरू कैलक जे ओकर रॉयल्टीसँ किछु आय हो । भारतीक छोट भाइ सी. विश्वनाथ अय्यर भारतीक काव्यकृतिक एक निर्णायक संस्करण अनेक खंडमे प्रकाशित करबाक विचारसँ 'भारती प्रचुरालयम्' केर स्थापना कैलन्हि । एहिमे हुनका अनेको बाधा भेलन्हि, यथा कापीराइटक नियम केर उल्लंघन, तस्करी संस्करणक बाहुल्य । सरकारक दिससँ सेहो अत्याचार भेलन्हि और मद्रास सरकार द्वारा भारतीक प्रकाशनक २000सँ अधिक प्रति राजद्रोहपूर्ण सामग्रीक नाम पर जप्त कऽ लेल गेल । १९२८ मे मद्रास लेजिस्लेटिव काउन्सिलमे एक प्रस्तावक समर्थन करैत एक ओजस्वी भाषण द्वारा एस. सत्यमूर्त्ति भारतीक गीतक प्रबल एवं दृढ़ पक्ष-संवर्धन कैलन्हि :

"महाशय, स्वर्गीय सुब्रह्मण्य भारती एहन व्यक्ति छलाह जनिका जिह्वा पर कहल जा सकैछ जे सत्यतः वाग्देवी देशभक्तिक नृत्य करैत छळीह । यदि ओ भारतक अतिरिक्त अन्य कोनो देशमे जन्म लेने रहितथि तँ ओ ओहि देशक राजकवि बनाओल जैतथि, जनभावनाक आदर कैनिहार शासन द्वारा हुनका एकसँ एक सम्मान आ उपाधि प्रदान कैल जैतन्हि आ ओ ताहि देशक सबसँ अधिक प्रतिष्ठित व्यक्तिक जीवन आ निधन प्राप्त करितथि । मुदा जैं हम हम सभ गुलाम देश छी, एहि सरकारक अन्तर्गत ओ अपन कोनो उपयोगिता नहि प्राप्त कऽ सकलाह आ फ्रांसीसी सरकारक आतिथ्यमे पांडिचरीमे प्रवासी जीवन बितैबा लै आ एक टूटल भग्नहृदय व्यक्ति जकाँ मरबा लै बाध्य भेलाह । किन्तु, महाशय, एहिसँ पहिनहुँ शहीद आ देशभक्त लोकनिक यैह भाग्य रहलैन्ह अछि । सुब्रह्मण्य भारती अपन जीवन

आ निधन दुहूमे देशभक्त छलाह । अध्यक्ष महोदय, हम ई वचन फेर दोहराबय चाहै छी जे हुनक पुस्तक केर सबटा वर्त्तमान प्रति अहाँ किएक ने जप्त कऽ ली मुदा जहिना पवित्र वेद, पीढ़ी दर पीढ़ीये नहि, अपितु एक युगसँ दोसर युग धरि, पूर्णतः अलिखित रहितहुँ, हमरा सभक हिन्दू पूर्वजक स्मृति द्वारा हमरा प्राप्त होइत रहल, जहिना मेकॉले मिल्टनक 'पैराडाइज लॉस्ट' केर एक-एक पंक्ति स्मृतिसँ दोहरा सकैत छलाह, हमरा एहिमे कोनो सन्देह नहि अछि जे तहिना यावत् तमिल भाषा वर्तमान रहत आ एको तमिल जीवित रहत ई गीत सब तमिल जातिक अमूल्य निधि बनल रहत ।"

तीस वर्षक बाद जखन स्वतंत्रता प्राप्त भेल, भारतीक गीतक मांग बहुत अधिक होमऽ लागल । सौभाग्य सँ मद्रास सरकार एकर कॉपीराइट कीनि लेलक आ कुल मिला कै तमिल जन समुदायक बीच एहि मर्मस्पर्शी निधिक निर्मूल्य वितरण कैलक । शीघ्रे एकर अनेको अजिल्द संस्करण भेल जाहिमे 'शक्ति कार्यलयम्' द्वारा प्रकाशित डेढ़ टाका मूल्य केर सस्त संस्करण असाधारण मात्रामे बिका गेल । पराली एस. नेल्लियप्पर आ आर. ए. पद्मनाभन, जनिकर भारतीक प्रति आ हुनक संपूर्ण निधिक संरक्षणक प्रति सेवाक अमूल्य योगदान छन्हि, तनिक सहायतासँ सुविधापूर्ण निर्देश एवं क्रमबद्ध अध्ययन हेतु भारतीक संपूर्ण कृतिकेँ चारि वर्गमे विभाजित कैल गेल । एहि वर्गीकरणकेँ भारतीक समालोचकगण सेहो सर्वाधिक सुविधापूर्ण आ तर्कसंगत मानलन्हि अछि :

१. प्रथम खण्ड—देशभक्ति गीत

१. भारतभूमि गीत ।
२. तमिलनाडु गीत ।
३. स्वातंत्र्य-संग्राम गीत ।
४. राष्ट्रीय नेता ।
५. अन्य देशीय स्वातंत्र्य आन्दोलन विषयक गीत ।

२. द्वितीय खण्ड—भक्ति गीत

१. प्रर्थना-गीत ।
२ ज्ञान-गीत ।

३. तृतीय खण्ड—प्रकीर्ण गीत

१. नीति-शास्त्र ।
२. समाज ।
३. अवर्गीकृत गीत ।
४. अभिनन्दन ।
५. आत्मकथात्मक गीत ।
६. गद्य गीत ।

४. चतुर्थ खण्ड—तीन महान काव्य

१. कन्नन पात्तु (कृष्णगीत श्रृंखला) ।
२. पांचाली शपथम् (द्रौपदी विजय) ।
प्रथम सर्ग—दुर्योधनक षडयंत्र ।
द्वितीय सर्ग—द्यूत-क्रीड़ा ।
तृतीय सर्ग—दासता ।
चतुर्थ सर्ग—द्रौपदी-शील-भंग ।
पंचम सर्ग—द्रौपदी प्रतिज्ञा ।
३. कुयिल पात्तु (कुयिलक एकल गान) ।

भारती प्रमुखतः गीतकार छलाह । प्रथम तीन खंडक प्रायः प्रत्येक रचना छोट-पैघ गीत अछि जे सामान्यतः बीस चरणक अछि । विद्युत् शक्ति आवेशित क्षणिका जकाँ किछु गीत तँ अत्यन्त लघु अछि, उदाहरणक हेतु 'एक अग्निकण' लेल जाय :

संयोगसँ भेटल एक स्फुल्लिंग, एक अग्निकण हमरा
वृक्ष केर खोढरमे दऽ देलहुँ तकरा
भस्म भऽ गेल सौंसे वन
हा, हा, हा, हा !
की अग्निक विनाश-शक्तिक सम्मुख
होइछ किछु पैघ वा छोट, युग वा यौवन ?

'कन्नन पात्तु' वस्तुतः नाट्यगीत समूह अछि । 'कुयिल पात्तु' वा 'पांचाली शपथम्' सदृश दीर्घ आख्यायिको सभ गीतक तरंगावली जकाँ उमड़ैत अबैत अछि, जकर प्रत्येक खण्ड मुक्तक रहैत अछि । संगहि भारतीक कथात्मक क्षमता बहुत उच्च कोटिक अछि जेना कि हुनक दीर्घ रचना 'गुरु गोविन्द', 'आत्मकथा', 'भारती छियासठि' आ वस्तुतः हुनक काव्य-भंडारक जगमगाइत रत्न 'कुयिलक एकल गान'मे हम देखैत छी ।

देशभक्त कवि

सबसँ पहिने भारती देशभक्ते कविक रूपमे उभरलाह । भारतीक कंठ स्वयं ततेक मधुर आ झंकृतिपूर्ण छलैन्ह जे जखन ओ भारतवर्षक बहुरंगी परम्परा अथवा राजनीतिक दासताजन्य पीड़ा आ अपमान अथवा उज्जवल भविष्यक निकट संभावना पर रचित अपन गीतकेँ सुनबैत छलाह तँ श्रोता समुदाय वस्तुतः चमत्कृत भऽ उठैत छल । लोकक मनमे कखनो ई प्रश्न उठैत छलैक जे ई देशभक्तिपरक गीत सब स्वतंत्र भारतक हेतु उपयुक्त अछि वा नहि । मुदा वस्तुतः भारतीक देशभक्तिपरक गीत अप्रासंगिकता वा विस्मृति दुहू दोषसँ सर्वथा मुक्त अछि, कारण ओ अपना रचनामे क्षुद्र भावुकता, उद्धत राष्ट्रवादिता, क्षेत्रीयता अथवा रुदनपूर्ण आत्मकरुणाकेँ कोनो स्थान नहि देलन्हि । ओ मूल तत्त्वकेँ चीन्हि मुक्ति-विधायी चेतनाक गान गौलन्हि, आत्माक अपरिमित स्वतंत्रताकेँ प्रेरणापूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान कैलन्हि । राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कैलाक उपरान्तो जेना हमरा लोकनि अनेको प्रकारक दासतामे ओझरायल-आबद्ध छी, हम आब बुझि सकै छी जे कोना हुनक कल्पना आ चिंतन हमर वर्त्तमानक हेतु एक वेदनामय प्रासंगिकता लेने अछि ।

हुनक देशभक्तिपूर्ण लेखनक प्रमुख प्रेरणा वंकिमचन्द्रक 'वन्दे मातरम्' गानसँ आयल जे बंगालक कलंकित विभाजनक पश्चात् राष्ट्रवादी एवं क्रान्तिकारी लोकनिक पवित्र गीत बनि गेल । श्री अरविन्दक अनुसार :

"मंत्र दऽ देल गेल आ एकहि दिनमे सम्पूर्ण राष्ट्र देशभक्तिक धर्ममे दीक्षित भऽ गेल । माता अपनाकेँ प्रकट कऽ लेलन्हि । ई दृष्टि जखने कोनो जातिकेँ भेटि जाइत छैक तँ तावत् काल धरि ओकरा कोनो विराम, कोनो शान्ति वा कोनो सुषुप्ति नहि होइत छैक यावत् ओ मन्दिरक निर्माण, ओहिमे मूर्तिक प्रतिष्ठा आ ओकरा हेतु ओ सर्वस्वार्पण नहि कऽ लियै ।"

—

तमिल जन केर पुनरुत्थान हेतु एही 'वन्दे मातरम्' केर मंत्र-लय पर सुब्रह्मण्य भारती राष्ट्रीयताक विजय-धनुष केर टंकार करबा लै प्रस्तुत छलाह :

विजय प्राप्त करी वा
हो पराजय प्राणान्ते किछु
हम सब छी एकजुट
आ उठबै छी एक गान
'वन्दे मातरम् !'

वंकिमचन्द्रक उपन्यास 'आनन्द मठ' केर जाहि सन्दर्भमे ई गीत उपस्थित भेल अछि, भारती तकर ज्ञान तमिल लोकनिकेँ करौलनि आ ओ वंकिम बाबूक एहि अमर गीतक महत्ताक परिचय दैत एक कविता लिखलनि :

आर्यमाता आवेष्टिता छली
जाहि प्रेमक लतासँ से
सूखि जखन गेल तखन
आयल 'वन्दे मातरम्' गान
जीवनप्रद फुहार लेने;
'वन्दे मातरम्' थीक
गगन तल धरि उठैत
भारतमाताक मंत्र ।
जखन घन अंधकार
देशकेँ आच्छन्न करैत
ओकर ज्ञान आ शक्तिक
कैलक सर्वथा विनाश
आयल 'वन्दे मातरम्' गान
बंग केर समुद्र पर
उदित रवि-मंडल जकाँ
आर्य-महिषी भारतक एहि
मंत्रक अभिनन्दन अछि
जयतु 'वन्दे मातरम्' हे !

एक उत्कट राष्ट्रवादी एवं राजनीतिक उग्रवादी सभक प्रशंसकक रूपमे अंग्रेज आ नरमपंथी दुहूक ऊपर घोर निन्दाक वर्षा कै एवं राजनीतिक संघर्ष केर शीर्षस्थ क्षण सभक नाटकीय वर्णन द्वारा श्रोताकेँ मंत्रमुग्ध कै ओ लोकमे जागृति अनलन्हि । एहि दृष्टियेँ कर्नल विंच आ भी. ओ. चिदम्बरम् जनिकासँ तेलक मिलमे बलपूर्वक काज कराओल गेल छल—एहि दूनूक बीच भेल वार्त्तालाप केर प्रसिद्धि सर्वथा उचित अछि । जँ कोनो आततायी अपन अत्याचारक शिकार व्यक्तिकेँ यंत्रणा दै ओकरासँ गुलामी स्वीकार करैबाक अपन पैशाचिक अधिकार पर हठ करैत अछि तँ संघर्षशील देशभक्त जातिक लेल, खाहे जे परिणाम उपस्थित हो, दासताक बंधनकेँ तोड़ि कै फेकि देबाक हेतु ओहिना कृतसंकल्प हैब अवश्यंभावी अछि । भारतीक अनेक कवितामे ओहन आत्मसंतुष्ट भारतीवासीक क्रोधपूर्ण भर्त्सना कैल गेल अछि जे अनस्थरिक सूगर जकाँ गुलामीयेमे रहि कै आनन्द-भोग करब अपन सौभाग्य बुझैत अछि । भारती ओहि निर्वीर्य जीवित प्रेत सभसँ मातृभूमिकेँ मुक्त करऽ चाहैत छथि :

अरे ओ दुर्बल कान्हवला पुतला सभ !
पड़ा, पड़ा !
अरे ओ संकुचित हृदय पामर सभ !
पड़ा, पड़ा !
अरे ओ निस्तेज मुख अधम लोक !
पड़ा, पड़ा !
अरे ओ श्रीहीन नेत्रवला कपूत सभ !
पड़ा, पड़ा !

दोसर दिस भारती उत्कंठित हृदयेँ देशभक्त सबहक स्वागत 'तमसावृत्त' भूमि पर उदीयमान सूर्यक रूपमे करैत छथि । मुदा ई अंधकार अस्थायी थीक । भारतीक बहुसंख्यक देशभक्तिपूर्ण कविता भारतक आलोकपूर्ण अतीतक अह्वान वा वर्णन करैत अछि, जकरा बाद औतैक 'चिरस्थायी दिवस' जकाँ उज्ज्वल भविष्य । हुनक ई दृढ़ धारणा हुनक कविताकेँ भारतक चिरन्तन महनीयताक अमर

स्तुति बना दैत अछि । ओ निस्संदिग्ध रूपेँ अपन मातृभूमि तमिलनाडुक प्रेमी छलाह आ अपन मातृभाषाकेँ हृदयसँ मानैत छलाह, कारण ओ वास्तवमे हुनका लेल 'आनन्ददायक आसव' छलन्हि । महान तमिल कवि, विचारक एवं राष्ट्रनिर्माता लोकनिक प्रति हुनका श्रद्धा छलन्हि । मुदा ओ तमिलनाडुक सीमाक ओहि पार सेहो देखैत छलाह आ अखंड भारत आ भारतमाता पर हुनक दृष्टि छलन्हि । हुनक एक पर एक कविता महिमासँ प्राणवंत एकात्म भारतक एहि दृष्टिकेँ आ एहि ज्वलंत सत्यकेँ उद्घाटित करैत अछि :

महिमा-मंडित हमर हिमालय
भूपर परतर करत एकर के ?
सुरसरि धार उदार प्रवाहित
अन्य कोन सरि एहन कि वरदे ?
उपनिषदक शुचि ज्ञान हमर जे
ग्रंथ कोन उपमान एकर अछि ?
हमर भूमि चिर भास्वर स्वर्णिम
जैं अनुपम गुणगान एकर अछि !

भारती बूझैत छलाह जे भारतवर्ष विभिन्न जातिक देश अछि आ देशक समृद्धिमे ओकरा सबहक अनिवार्य योगदानक समुचित महत्त्वकेँ ओ मान्यता दैत छलाह । देशक वाह्य विविधताकेँ जे तत्त्व वास्तविक रूपेँ एक संग बान्हि कै रखने अछि से थीक एहि सबकेँ भारतमातासँ जोडिनिहार अटूट प्रेमक डोरी :

तीस करोड़ मुह छै एकर
मुदा हृदय छै एक
अठ्ठारह भाषामे बजैछ
मुदा मानस छै एक

छत्रपति शिवाजी होथु वा गुरु गोविन्द सिंह, दादाभाई नौरोजी होथु वा बाल गंगाधर तिलक वा लाला लाजपत राय, सभक आत्मा एक अछि और सभक आत्मामे एके स्वर अछि स्वतंत्रताक । तैं सुब्रह्मण्य भारतीक स्वतंत्रता विषयक कविता कहियो पुरान नहि पड़ि

सकैत अछि । एहि कविता सबमे एहि देशभक्त कविकेँ स्वतंत्रताक व्याकुल पिपासा रखैत आ सुदूर श्रोतागण धरि स्वतंत्रताक अमृतोपम स्वादकेँ वितरित करैत दुहू रूपमे हम देखैत छियन्हि आ ई सब कविता अपने एक विशिष्ट वर्ग बनबैत अछि; उदाहरण लै निम्नलिखित पंक्ति :

अमृतक संधानी नहि हयते मद्यक दिस आकृष्ट ।
मुक्तिक कामी पाबि अल्प किछु होयत नहि संतुष्ट ।।

स्वतंत्रताक विटप सहजेँ नहि लगाओल जाइछ । कोनो राष्ट्रमे स्वतंत्र्यचेतना भरबामे कतेको पीढ़ी लागि जाइत छैक । तखन एहि विटपकेँ मुरझा कै समाप्त होमऽ देब कतेक अज्ञानक काज हैत ?

जाहि दीपकेँ आत्मचिंतनक घृतेँ कयल उद्दीप्त
अपन आत्म-गह्वरमे तकरा देखि सकब की सुप्त ?

जानल-मानल नेता सबकेँ हजारक हजार संख्यामे जेलमे बन्न कै कोनो देश पर शासन नहि कैल जा सकैछ । जे शासन स्वतंत्रता पर एहि प्रकार आघात करैत अछि ओ बहुत दिन धरि नहि चलि सकैछ । गुलामीक चाकमे पीसल जाइत ओ उद्धत बलिदानी सभ कहियो गुलामीकेँ शिरोधार्य नै कऽ सकैत छथि किएक तँ ओ सभ स्वतंत्रता देवीक अचल अराधक होइत छथि :

गृह-सुख छीनि काल-कोलखी मे भने कि कऽ दी बन्द ।
करी विवश प्रमोद केर बदला लेबा लै दुख-द्वन्द ।।
शत-सहस्र यंत्रणो प्राण केर हमर भने करु अन्त ।
अहँक अर्चना करब ने बिसरब स्तंत्रते ! हा हन्त ।।

स्वतंत्रता केवल विशिष्ट वर्गक सुखोपभोगक वस्तु नहि प्रत्युत सभ जाति, वर्ग आ सभ स्थितिक लोक-वेद लेल प्राथमिक आवश्यकता थीक । भारतीक हेतु स्वतंत्रता संपूर्ण वरदान थिक । आ नारी वर्गोकेँ सब प्रकारक सामाजिक निषेधसँ मुक्त भै विशेषतः स्वतंत्र भारतक निर्माणमे पुरुषक समान सहभागी होयबाक छन्हि । आ ई स्वप्न शीघ्रे वास्तविकतामे परिणत होयत :

आउ, करी हम सब श्रम
सबहुँ गोटे ।
छोड़ी नहि ककरो वा
दुखी करी ।।
सत्य आ प्रकाशक पथ
सबहि धरी ।
क्यो जन नहि पाओत पद
कोनो नीच ।।
क्यो जन नहि शोषित वा
दलित हैत ।
भारतमे जनमि सबहि
उच्च बुझी ।।

भक्तिक स्वर

भारतीक विषयमे ई स्मरणीय जे देशभक्त रहितहुँ हुनक देशभक्ति विषयक काव्यक जड़ि सामाजिक एवं आध्यात्मिक चेतनाक भीतर पैसल छलन्हि । ओ अनुभव कैलन्हि जे राजनीतिक स्वतंत्रता तखने बांछनीय वस्तु हैत जखन ओकरा द्वारा सामाजिक आ आध्यात्मिक मुक्ति सेहो सम्प्राप्त हैत । मुदा शाब्दिक वाचन आ पुनर्वाचन मात्र हमरा सभकेँ स्वतंत्रताक अह्लाद नहि प्रदान कऽ सकैत अछि । स्वतंत्रता वस्तुतः ओ मूलभूत आ स्थायी रस थीक जे लोकक धमनी मे प्रवाहित हो । वंकिमचन्द्रक 'वन्देमातरम्' हमरा सबहक श्रोत्रेन्द्रियकेँ एही रूपमे झंकृत करैत अछि आ एकर गहन स्वर-लयमे राजनीतिक प्रचारसँ अनन्त गुणा अधिक एक अन्तःशक्ति निहित अछि । भारतीक कविता एही प्रकारक आध्यात्मिक मुक्तिक परमानन्दकेँ अभिव्यक्त करैत अछि :

स्वरित करू भारतक नाम
दूर करू घृणा-भाव
भयकेँ निरस्त करू
पीटू तखन विजय-ढोल
भीतिरूप दानवकेँ
दलित-विमर्दित कै
मारि-चूरि अनृतक अहि,
वेदक पथ ग्रहण कैल
ब्रह्म-ज्ञान जकर लक्ष्य !

एहि भय-मुक्ति केर प्रथम साधनक रूपमे भारती, परमेश्वरक अल्ला आ ईसा अवतार सहित, विभिन्न देवी-देवताक सहायता आ अनुकम्पाक आह्वान करैत छथि जाहिसँ हुनक मन एवं आत्माक शक्तिमे अभिवृद्धि हो । पचास वर्षसँ अधिक काल धरि भारतीक

ई गीत सब लोकप्रिय रहल अछि । गणपति आ सुब्रह्मण्य केर सहज भक्ति-भावसँ उपासना करैत कवि अपना हृदयसँ भयकेँ निरस्त करबाक हेतु हुनक प्रर्थना करैत छथि । जैं सुब्रह्मण्य मानवक हृदय-गुहामे ज्वलित अग्निक रूप छथि तैं हुनक भक्तक हृदयकेँ भय छूबि नहि सकैत अछि । कृष्ण, सरस्वती, सूर्य आदि सब वस्तुतः मार्गदर्शक देवता छथि । जखन कवि विश्वक अखिल जननी महाशक्तिक गीत गाबऽ लगैत छथि तँ अपन संपूर्ण आत्म-परिचिति आ अहंकारजन्य पार्थक्यकेँ विस्मृत कऽ दैत छथि ।

ई शक्ति-गीत सब भारतीक भक्तिक केन्द्रीय प्रेरणास्रोत थीक । कलकत्तामे भगिनी निवेदिताक दर्शन हुनका जेना अखिल विश्वात्माक स्वरूपक साक्षात्कार करौलकन्हि जे 'स्वदेश गीतांजल'क हुनक समर्पणसँ प्रमाणित होइत अछि : "हम ई लघु पुस्तिका गुरुक चरणमे अर्पित करैत छी जे हमरा ओहिना भारत-माताक स्वरूपक ज्ञान करौलन्हि आ अपन मातृभूमिक अर्चना करब सिखौलन्हि जेना कृष्ण अर्जुनकेँ विश्वरूपक दर्शन करौलथिन्ह ।"

जँ भारतीक देशभक्ति गीत शक्तिरूपिणी भारतमाताकेँ सम्बोधित अछि तँ हुनक भक्तिगीत विभिन्न प्रकारक आलम्बन थीक जकरा द्वारा शक्तिक अंतरंग तत्त्व उद्घाटित होइत अछि । यद्यपि शक्ति विभिन्न रूपमे प्रकट होइत छथि, ओ स्वयं अखिल विश्वमे व्याप्त छथि :

क्यौ अपनेकेँ प्रकृति बुझथि क्यौ
पंचतत्व जे कारणभूत
आदि शक्ति क्यौ, अन्य कहथि छी
अग्नि, बुद्धि, परमेश्वररूप

शक्तिकेँ अपन इष्टदेवता माननेँ सब स्थिति-परिस्थिति अनुकूल रहत :

कतबो अम्बुधि विषम तरंगित
हुनक कृपा अछि रक्षा-पोत ।
पहुँचब निश्चय हम ओहि पारे
शक्ति-चरण-रति ओत-प्रोत ।।

हृदय न करु भय ।
विजय कि निश्चय ।।

भारती जे वेदक अध्ययन कैलन्हि तकर प्रभाव हुनक सूर्य, अग्नि-यज्ञ आ अन्य वेदान्तीय कविता पर पड़ल अछि । उदाहरणस्वरूप हुनक एक कविता अछि जाहिमे ओ मृत्युकेँ डँटैत छथि आ ओकरा घास-फूस बूझि तिरस्कृत करैत छथि । विभिन्न देवी-देवताक स्तुतिगान करैत हुनक कवि इहो बुझैत अछि जे नाना प्रकारक नामकेँ पकड़ि बैसब आ शास्त्रक अरण्यमे भटकब मूर्खता थीक । सर्वोच्च देवता ज्ञान अछि । ज्ञाने अज्ञानकेँ समाप्त करैत अछि, ज्ञाने जिज्ञासुक आत्माकेँ प्रकाशित करैत अछि :

आत्मज्ञान की अछि ?
राग-द्वेषक तिरोभाव
की अहाँ मात्र बजैत रहब
जेना पाउज करैत होइ ?
आत्मा जे अन्तर्वासी अछि
हृदयकेँ प्रकाशसँ भरि दैछ
शास्त्र कहैत अछि
यैह थिक ब्रह्म ।

अपन जीवनक उत्तर कालमे भारती विशुद्ध ज्ञानी बनि गेलाह और हुनक दैनन्दिन क्रियाकलाप समाजक बजारमे चलैत वणिक व्यवसायसँ शून्य भऽ गेल । अपन वेश-भूषो दिस ओ ध्यान देब छोड़ि देलन्हि आ बहुधा उत्साह सँ वार्त्तालाप करैत-करैत ओ दीर्घ काल धरि मौन भऽ जाइत छलाह । हुनक आँखिक दीप्ति मात्र हुनक अनन्त आध्यात्मिक चेतनाक आभास प्रदान करैत छल, एहन सन जेना कि हुनक आत्मा वासना-विक्षुब्ध निरंकुश मनकेँ पूर्णतः नियंत्रित कऽ लेने हो । 'मन कुमारिका' ('द डेमोज़ेल माइन्ड') शीर्षक उत्कृष्ट कवितामे कवि एहि लोलुप जीव (मन) सँ जूझैत छथि तथा मनकेँ कहैत छथि जे ओ हुनका शांतिक पूर्णतामे एकसर छोड़ि दैन्हि, अथवा कि हुनक मन एक उच्चतर शक्ति 'अतिमानस'क रूपमे अपन रूपान्तरण करबामे सफल भऽ गेल छल :

मन कुमारिके ! सुनू !
कोन विधि रही अहाँ सङ
नहि जानी हम ।
तदपि अहँक संगति अनुखन हम
चाही सरिपहुँ ।
यत्न करब जे अहूँ आत्मसाक्षात्कार हित
भै संवर्धित करी साधना ।
जाहि परात्पर केर दर्शन हम कैल,
अहाँ नहि,
मांगथि हमर भक्ति से सदिखन
और अहूँकेँ हुनके हाथेँ
भेटत कि सद्गति !

छठम अध्याय

कृष्णगीत श्रृंखला

पांडिचरीक प्रवास कालमे अपन घनिष्ठ मित्र कुवलायुर कृष्णामाचारियार (कुवलै कन्नन) द्वारा भारती आठम शताब्दी केर वैष्णव कवि आलवार लोकनिक भक्ति रहस्यवादक निकट सम्पर्कमे अयलाह । ओ कृष्ण-बाल-लीलाक हृदयहारी गीतक रचयिता पेरिय आलवारक 'पासुराम' छन्दक प्रति विशेष आकृष्ट भेलाह । भारतीक संगीत-ज्ञान एवं भावपूर्ण गायन-कला किछु गीत-समूहक रचना करबामे हुनक सहायक भेलन्हि जकर संग्रह आब 'कन्नन पात्तु' नामसँ विदित अछि । एहि गीत सबहक शब्द-विन्यासमे एक झुमाबऽवला संगीत एवं सहजात गीतात्मकता निहित अछि, संगहि एक पारदर्शी सरलता सेहो एहिमे सर्वत्र परिव्याप्त बुझना जाइछ । तैं 'कन्नन पात्तु'क द्वितीय संस्करणक भूमिकामे भी. भी. एस. अय्यर एहि गीत सबहक विषयमे जे किछु कहलन्हि अछि से कोनो अत्युक्ति नहि :

"सागर-तट पर शान्त संध्याकालमे नील समुद्रकेँ दुग्ध-सागर मे परिणत करऽवला मोहक चन्द्र-ज्योत्स्नामे नहाइत जे क्यौ कल्पनाक गर्व आ रचनाक उमंगसँ भरल कविकेँ मधुर कंठेँ अपन नव रचित गीतकेँ गबैत सुनने हैताह ओ अवश्य एहि संग्रहक एक-एक गीतकेँ अमूल्य रत्न मानताह ।"

एहिमे २३टा गीत संगृहीत अछि जे हमरा सबहक चिर परिचित मानवीय संबंध यथा पिता, पुत्र, प्रेमी, मित्र, स्वामी आ दासक माध्यमसँ हमरा लोकनिकेँ परमात्माक सन्निधिक बोध करबैत अछि । ई अवश्य एक साहसिक आ निर्भीक प्रयोग अछि जे हमरा सबकेँ पेरिय आलवार भक्त लोकनि द्वारा कैल गेल परमात्माक बालक आ प्रेमी रूपक कल्पनासँ और परे लऽ जाइत अछि ।

ईश्वरक प्रति नायक-नायिका भाव भारतीय भक्ति-परम्पराक एक अभिन्न अंग थीक । दक्षिण आ उत्तर केर वैष्णव रहस्यवादी लोकनिक

गीत एवं विद्यापति आ विल्वमंगलक कविता केर सम्मिलित परिणति जयदेवक 'गीत-गोविन्द'मे भेल । मुदा एहि परम्परामे जे जे गरिमापूर्ण विम्ब आ उपमा सब छल (चन्दन-तिलक, मोर-पंख, कौस्तुभमणि इत्यादि) तकरा सभक परित्याग कै आ ईश्वर एवं जीवक संबंध-बोधमे जे व्यापक मानवीय भाव अन्तर्भूत अछि तकरे पर बल दै भारती एक स्फूर्तिदायक नवीनताक सर्जन करैत छथि । चारू दिस पसरल जगत्मे आ दैनन्दिन जीवनमे हमरा सभक सम्पर्कमे जे किछु वस्तु अबैत अछि तकरे संकेत-श्रृंखला द्वारा ओ एक विशेष मनोभावक उद्भावना करैत छथि :

बंसी-गाँथल कीट जकाँ हम
वा बसातमे दीप-शिखा सम
रहलहुँ कम्पित-व्यथित हृदय जे
कत युग बीतल ।
पिंजरमे बन्दी शुक जहिना
रहलहुँ एकसर शोकित तहिना
मधुरोकेँ जे लागय मधु सम
विषवत् लागल ।।

अकस्मात् स्वप्नक एक दृश्य विरह-दग्ध हृदयकेँ जेना पुनरुज्जीवित कऽ दैत अछि आ तखन की रूपान्तरण होइत अछि :

पुनः चेतनामे घुरि अयलहुँ
अद्भुत् कोमल स्पर्श कि पौलहुँ
दौड़ि गेल तनमे नव सिहरन
मगन भेलहुँ अभिनव प्रशांतिमे !
मनमे पुनि कौतूहल जागल
के छल ओ हमरा लग आयल ?
आह ! कृष्ण साक्षात् कि तत्क्षण
अयला सोझाँ दिव्य कान्तिमे !!

भारतीक गीतमे कृष्ण 'कन्नम्मा' बालिकाक रूपमे प्रेयसी सेहो बनैत छथि :

हे कन्नम्मे ! दीपित दृग ओ ज्वाल-शिखा सम
की अछि रवि-शशि केर युग संगम ?
हे कन्नम्मे ! दृग-गोलक ओ कारी-कारी
की अछि नील गगन केर दर्पण ?
काक-पक्ष सम अहँक रेशमी वस्त्र कि गुम्फित
अछि जे जगमग मणिक आभरण !
हे कन्नम्मे ! से अछि की निशीथमे ऊपर
शोभित गुच्छ-गुच्छ उडु-दल-कण ?

आ दोसरे क्षण ओ प्रेयसी हुनक अधिष्ठात्री महाशक्तिक रूपमे प्रकट होइत छथि । एहि बहुरूपदर्शी दृश्य-वितानमे हम एक सम्पूर्ण नाटककेँ जेना अभिनीत होइत देखैत छी जकर हम स्वयं अंग बनि जाइत छी । पौराणिक नायकक रूपमे कृष्ण सुभद्राक संग अर्जुनक परिणय करयबामे सहायक भेल रहथि । दोसर दिस, ओ हमरा सभक इष्टदेव बनि परमात्मासँ आनन्दपूर्ण मिलनक चिर आकांक्षाक संग चोरा-नुक्की खेलाइत रहैत छथि । एहन मिलनक दिव्य आनन्दक पश्चात् की हमर 'हम' हुनक 'अहाँ'सँ वियुक्त रहि सकैत अछि ?

बिसरि गेलहुँ हम प्रिय केर मुख-छवि
आत्मसखे ! से कहि सकबे की ?
जकर प्रेममे हृदय बसल हो
मुख से मन विस्मृत करते की ?
मधुकेँ बिसरि गेल मधुकर-दल
सुधि ने प्रकाशक सुमनक मनमे
पृथ्वीकेँ हो नभ केर विस्मृति
ई सभ की संभव जीवनमे ?

कृष्ण भारतीक हृदयासीन अधिष्ठात्री देवी माता कन्नम्मा सेहो छथि । तैं एहि गीत-संग्रहक उपसंहार एक एहन भावोद्वेलित गीतसँ

होइत अछि जाहिमे कवि 'सर्व धर्मान् परित्यज्य' ओही माताक एकान्त शरणमे जाय चाहैत छथि :

हमर उरमे दासता ओ भयक डेरा
तकर पूर्ण विनाश ओ संहार हित हम
शरण अयलहुँ !
की असत् वा सत् ने दुहुमे भेद जानी
करु असत् पर सत् प्रतिष्ठित, जननि हे, हम
शरण अयलहुँ !

द्रौपदी-विजय

भारतवर्षक प्राचीन साहित्यक पारंपरिक निधि विविधता आ विशालताक भंडार थीक । विभिन्न युगमे समय-समय पर भारतीय कविगण अपन मूल दिस घुरि कै अबैत रहलाह अछि जे हमर दूटा राष्ट्रीय महाकाव्य रामायण आ महाभारतमे दृढ़तापूर्वक गड़ल अछि । जखन-जखन संकटक घड़ी उपस्थित भेल अछि, कविगण ओहिमे सँ कोनो सुपरिचित पुराण-कथाकेँ वर्त्तमानकालीन भाषाक व्यंजनामे नव रूपेँ कहबा लै चुनलन्हि अछि । वर्त्तमान शताब्दीक तमिल साहित्यमे एहि कोटिक प्रथम आ सर्वश्रेष्ठ कविता भारती द्वारा प्रस्तुत भेल अछि ।

पांडिचरीक अपन प्रवास कालमे एक दिस ओ प्रकाशन द्वारा जे भावाभिव्यक्तिक मार्ग भेटैत छैक ताहिसँ वंचित छलाह आ दोसर दिस दारिद्र्यक ज्वालामे दग्ध भऽ रहल छलाह । एहन क्षणमे ओ एक उच्च आत्मप्रेरक विषयकेँ चुनलन्हि आ ओहिमे ओ अपन समस्त आकांक्षा आ नैराश्यकेँ भरि शक्तिमती नारीक एक एहन प्रतिमाक सर्जन कैलन्हि जकर लोहा विश्वक महानसँ महान सत्ताधीशकेँ मानय पड़ैक । 'पांचाली शपथम्' वा 'पांचाली प्रतिज्ञा' महाभारतक एक अत्यंत भयोत्पादक दृश्यकेँ और स्फीत करैत ओकरा नाटकीय बनबैत अछि । एहिमे आत्मसंत्रासपूर्ण कोनो विवरणकेँ ओ नहि छोड़ैत छथि । तथापि ई काव्य कोनो व्यक्तिगत विक्षोभ वा अंतस्संचित कटुता मात्रकेँ नहि उगिलैत अछि । भारतीक उदार वृत्ति ततेक पैघ छलैन्ह जे ओहिमे हुनक व्यक्तिगत चिंता आ संकटक उल्लेख केर कोनो स्थान नहि भऽ सकैत छल । मुदा कविक जादूभरल संस्पर्शसँ व्यासक कथा केर घटना आ पात्र सबहक नव रूपान्तरण भऽ गेल अछि । फलस्वरूप मूल महाकाव्यक दिव्यता भारतीक एहि अभिनव सर्जनमे प्रतिविम्बित भऽ उठैत अछि ।

वस्तुतः एहि कविताक उत्पत्तिक तात्कालिक प्रेरक कारण राजनीति छल । दासताक जिंजीर मे जकड़ल भारतमाताकेँ अधिक सँ अधिक अपमानित आ प्रताड़ित कैल जा रहल छल किएक तेँ ओकर महान लाल सबकेँ जेलमे बन्न कै हुनका विभिन्न प्रकारक यंत्रणा देल जा रहल छलन्हि । कुरु सभासद लोकनिसँ परिवृत आ दुःशासनक भ्रष्ट हाथेँ शील-भंग होइत द्रौपदीमे भारतीकेँ मातृभूमिक दासता केर एहि चित्रक प्रबल प्रतीक भेटलन्हि ।

मुदा 'पांचाली प्रतिज्ञा' एक राजनीति प्रेरित कृतिसँ बहुत किछु अधिक थीक । एहिमे लोकक भीतर अन्तर्लोक अछि । द्रौपदी भारतमाता छथि । ओ रूढ़िवादसँ ग्रस्त अविवेकी आत्मकेन्द्रित पुरुष द्वारा शोषित नारी सेहो थिकीह । कौरव-सभामे दुर्योधन एवं कर्णक भ्रष्टता, भीष्म एवं विकर्णक असहायता आ द्रौपदीक खौलैत क्रोधोन्मादकेँ उद्घाटित करऽवला संपूर्ण संवाद भारत केर समाजिक जीवनमे जड़ीभूत सड़नि केर अपमानजनक झाँकी प्रस्तुत करैत अछि । धर्मशास्त्रक उदाहरण दैत भीष्मक वचन केर सामना द्रौपदी जाहि दंशभरल शब्दवर्षा द्वारा करैत छथि ओ नवयुगक नारी केर विद्रोहक प्रतीक थीक :

की सुन्दर अभिनव कहल तात !
कपटी रावण सीताक हरण कै राखल जखन वाटिका मे
आह्वान कैल निज मंत्री आ विधिज्ञ सबहक
आ कहलक निज कर्तृत्व सबहिँ
तेँ घोषित कैलक वैह सुमति मंत्री सब जे
"कैलहुँ अपने सर्वथा न्याय्य
ई धर्मक सब विधि सानुकूल !"
जँ करय देश पर शासन क्यौ राक्षस, निश्चय
सब शास्त्रहुँ कैँ होमय पड़ैछ मलवाही तेँ !
औ ! अपने लोकनि एतय सब क्यौ
छी भगिनी आ पत्नीक सहित
की ई नहि थिक अपराध घोर नारीजन प्रति ?
की सब क्यौ अरे ! नरकगामी हेबै करबे ?

पुनः समस्त राजनीतिक एवं सामाजिक रीति-नीतिक परे 'पांचाली-प्रतिज्ञा' वस्तुतः एहि पर बल दैत अछि जे मानव जातिक समस्याक समाधान दैवी शक्ति थीक । यदि उपरक गृह-रचनाकेँ सुरक्षित करबाक हो तँ पहिने नीवकेँ मजबूत बनाबऽ पड़त । यावत् धरि जड़ि महान शक्तिक प्रति प्रबल विश्वासक गहराइमे दृढ़तापूर्वक नहि जमत ऊपरमे सुन्दर पल्लव बहरयबाक आशा नहि कऽ सकैत छी । भारतीकेँ ई अनुभव भेलन्हि जे मात्र राजनीतिक शक्ति आ समाजिक मुक्ति भारतीय लोकक लेल उपयोगी नहि । आध्यात्मिक शक्तियेटा, क्षात्र-तेज नहि ब्रह्म-तेज, अक्रामक आतंकवाद नहि प्रत्युत ईश्वरमे केन्द्रित शांतिपूर्ण अहिंसा शक्ति मात्र उभड़ैत समस्या सभक व्यापक समाधान हेतु आवश्यक सामर्थ्य प्रदान कऽ सकैत अछि । तैं द्रौपदी पांडवक महिषी, आधुनिक भारतीय नारी आ भारतमाताक अतिरिक्तो किछु प्रतीत होइत छथि । ओ अवतार जकाँ चित्रित छथि अथवा संपूर्ण शक्तिक बीज महाशक्तिसँ प्रकट भेल एक विशिष्ट रूप छथि । ब्रह्मा, विष्णु, शिव अथवा स्वयं सूर्य मृत्युरूपी तमस् केर आक्रमणक चुनौतीक सामना नहि कऽ सकैत छथि; अन्तःकरणक जड़ता आ हमरा सबहक हृदयक अज्ञान एवं विकारक विनाश करबामे, दुर्वृत्तिक महिषासुर जे हमरा सबकेँ अपन दास बना कै रखने अछि, तकर संहार करबामे एकमात्र दुर्गादेवी समर्थ भऽ सकैत छथि । तैं कल्पनातीत शीलभंगक अविश्वसनीय क्षणमे जखन दुःशासन द्रोपदीकेँ अपन दानवी हाथ लगबैत अछि कि तखने :

सौम्या युवती सुन्दरी उमा
बल केर विग्रह काली कि स्वयं
आ मूल शक्ति आद्या ईश्वरि
करमे जनिकर छनि धनुष विकट
पुनि महामोह अज्ञान तमस्-
नाशिनी महामाया देवी
जे सिंहवाहिनी रहथु भने
मुसकाइते सतत करथि रक्षा

द्रौपदीक चेतनारूपी ज्वालामुखी-मुखे पर अवतरित होइत

छथि । आद्या शक्तिक एहि धाराक महिषी द्रौपदीमे प्रवाहित होइते ओ भीषण गतियेँ सम्पूर्ण विजयक हेतु उद्यत प्रतीत होइत छथि । तखने घटित होइत अछि अनिवार्य चमत्कार आ एक आकस्मिक स्थिति-परिवर्त्तन जे कोनो हल्लुक नाटकीय युक्ति नहि अपितु आध्यात्मिक शक्तिक सर्वोपरि प्रमुखताक प्रबल सम्पुष्टि थीक । पांचालीक एहि अटल प्रतिज्ञाक संग ई महाकाव्य समाप्त होइत अछि, जे एखनहु हमरा कानमे ध्वनित भऽ रहल अछि :

हम परा शक्ति केर नामेँ लै छी शपथ आइ
यावत् नहि खल दुःशासन केर जे रुधिर लाल
दुर्योधन केर राक्षसी रक्त मिलि एकमेक
होयत आ हम दुहु केर रक्तेँ
निज अलक-समूह करी रंजित
आ तखन नहा, सभटा धो कै परिशुद्ध होइ
नहि ता धरि समटब
छिड़िआयल केशक ई अपन प्रचंड जाल !

कुयिलक एकल गान

भारतीक एकहि संग सबसँ अधिक सम्मोहक आ सबसँ अधिक गूढ़ कविता 'कुयिल पात्तु' थीक । ई सरल तमिलमे लिखल अछि आ बालकथाक पुस्तकसँ लेल गेल कोनो कथा जकाँ काल्पनिक गल्प थीक । ७५० पंक्तिक ई कथा-कविता पशु-प्राणीसँ भरल अछि । एकर नायिका एक भारतीय बुलबुल 'कुयिल' थीक । संभवतः जेना कोलरिज स्वप्नक आधार पर 'कुबला खाँ' लिखलन्हि, तहिना भारती स्वप्नमे देखल दृश्यावलीकेँ एहि कवितामे लिपिबद्ध कैलन्हि अछि । कविता एना प्रारंभ होइत अछि :

> जेना काव्यानन्दमे कि वस्तुजगत् बिला जाइछ
> वा निदाघमे मूर्च्छित कवि देखय दिवा-स्वप्न
> देखल हम ।

कविता सरल हास्यसँ परिपूर्ण चमत्कारक फन्तासीक रूपमे अछि जे सबकेँ चकित कऽ दैत अछि । 'कुयिल'क मधुर संगीत पर मुग्ध भै कवि ओकरासँ प्रेम करय लगैत छथि । कवि सन मानव मात्र एक पक्षीसँ प्रेम करय ई अपनामे सामान्य तर्क आ बुद्धिक विपरीत बात थीक । मुदा कथा जेना-जेना आगू बढ़ैछ आरो आश्चर्य सब घटित होइत अछि । कवि कुयिलकेँ प्रथम एक वानरसँ आ पश्चात् एक वृषसँ प्रेमालाप करैत देखैत अछि । मुदा कुयिल विक्षुब्ध कविकेँ अपन पूर्वजन्मक वृत्तान्त कहि कै शान्त करैत अछि जाहिमे वनदेवीक राजकुमारीक रूपमे ओ 'मदन' आ 'कुरंगन'क प्रेमपात्री छलि जकर अर्थ क्रमशः वृष आ वानर होइछ । मुदा ओ अपने वस्तुतः 'वांची'क राजकुमारक प्रेममे आबद्ध अछि । एक दुर्घटनामे अकस्मात् एकरा सभक अंत भऽ जाइत छैक आ आब कुयिलकेँ अपन राजकुमार कवियेमे उलब्ध होइत छैक । कविक प्रेम-स्पर्श प्राप्त करिते ई पक्षी सुन्दर बालामे परिवर्त्तित भऽ जाइत अछि :

दुर्लभ मधु मद मातलि सुन्दरी कुमारिका कि
ठाढ़ि कोना छलि अद्‌भुत् सम्मोहक शोभामे !
विज्ञ-बुद्धिमानकेँ हम कहब बस एतबे जे
काव्यक रस, छन्द-सार, अमृतक सङ मिश्रित कै
प्रेम मे जमाय ताहि अनुपम स्वर्गांगनाकेँ
सृजित कैल ब्रह्मा जनु ।

जखने कवि ओहि बालाकेँ आलिंगनमे बान्हय चाहैत छथि कि ओ धम्म दै वास्तविकताक कठोर धरातल पर खसि पड़ैत छथि :

संज्ञामे आबि पुनः देखल जे चारू दिस
पड़ल पांडुलिपि पुरान, लेखनी ओ अखबारक
बंडिल सब यत्र-तत्र, पुरने चटाइ
तखन बुझलहुँ जे घरमे छी
मोन पड़ल फुलवारी, कुयिल, प्रेम, गल्पो ओ
मुदा ई तँ सबटा छल
सुन्दर संध्या प्रेरित हमर चतुर आ उर्वर
कल्पनाक सृष्टि मात्र !

फेर आँखिमे शैतनपनीक जेना एक चमक लेने कवि अन्तमे इहो कहि दैत छथि :

कविगण हे बुद्धिमान !
कथा हमर काल्पनिके,
तदपि सूक्ष्म अवलोकन कैलासँ दऽ सकइछ
दार्शनिको गूढ़ अर्थ
की अछि से, देब बुझा ?

ई प्रहेलिका सदृश प्रश्न कतेको अनुमान आ समीक्षाकेँ जन्म देलक । स्पष्टतः भारती सन गंभीर कवि मात्र एक फंतासीक मंथन करबामे समय नष्ट नहि कऽ सकैत छलाह, खास कै पांडिचरी कालक अपन अंतिम परिष्कृत मानसिक अवस्थामे । तैं पी. एम. सुन्दरन, के. पी. राजगोपालन और टी. पी. मीनाक्षीसुन्दरम् सदृश लेखकगण द्वारा प्रस्तुत व्याख्यामे सत्यक पुट अछि । सभ दिनसँ प्रेम एक अविज्ञेय प्रत्यय रहल अछि, तथापि मानवक रसग्राही चेतना एकर अन्वेषणमे लागल रहल अछि, प्रायः यैह बात एहि कविताक विषयवस्तु अछि । आवृत्त रूपमे प्रेम सर्वत्र वर्त्तमान अछि आ ओ कोनो

पिगमेलियनक[1] प्रतीक्षामे रहैत अछि जे ओकरा रूप आ प्राणप्रतिष्ठा प्रदान कै सकैक । सुन्दरता (ब्यूटी) एक वन्य पशु (बीस्ट) थीक जे अभिशप्त बन्धनसँ मुक्तिक हेतु अपन भाग्यविधाता राजकुमार (प्रिंस) केर बाट तकैत अछि । ओ पारस-स्पर्श जे पृथ्वी आ आकाशसँ, पाथर आ पानिसँ, ज्योति आ अन्धकारसँ, कौआ आ बुलबुलसँ सौन्दर्यक दोहन कऽ पबैछ से थिक प्रेम आ सर्वांशतः प्रेम जे सभ वस्तुसँ सत्य, शिव आ सुन्दर केर आत्मा बहार कऽ सकैत अछि । प्रेमक यैह मंत्र भारतीक कविताक अन्तस्तत्त्व थीक जे हुनक 'प्रेमक सन्देश' शीर्षक कवितामे चिरस्मरणीय अभिव्यक्ति पौलक अछि :

एहि विस्तृत जगतीमे
जानी नहि विटप कते
सुरभित कत लता-वृंत
हरित दूभि, अति दुर्लभ जड़ी-बूटी
एकर सभक जीवन केर कोन स्रोत ?
मानव नहि जोतय
वा बीजो नहि वपन करय
सिंचन वा सेवो धरि किछु न करय
तैयो नभ वर्षण कै
तरु-तृण ओ शस्यसभक
सम्पोषण करत स्वयं
तैं सुनु हे मर्त्य मनुज !
भय केर नहि काज कोनो
कियै व्यर्थ मरी-पची
निसर्गहि आहार देत
अहँक काज एकमात्र
जीवनमे प्रेम करी !

---

1. ग्रीक अनुश्रुतिक अनुसार साइप्रसक एक राजा, जे एक नारी-मूर्त्ति पर एतेक मोहित भऽ गेल जे ओ प्रेमक देवी एफ्रोडाइटसँ ओहने पत्नी प्राप्त करबा लै प्रार्थना कैलक । देवी ओहि मूर्त्तिमे प्राण-संचार कै ओकरा नारी बना देलथिन्ह आ पिगमेलियन कैं प्रदान कैलथिन्ह ।

सर्वतोमुखी प्रतिभा

भारती जन्मजात प्रगीतकार छलाह । हुनका द्वारा गीत एना रचित होइत छल जेना गाछमे कोमल पात बहराइत अछि । ओ कतेको कार्यमे लागल रहैत छलाह आ पुनः हुनक ध्यान भंग हैबाक अनेको कारण रहैत छलन्हि । बाह्यतः ओ राजनीतिमे व्यस्त छलाह, तँ आन्तरिक रूपेँ अनन्तक अनवरत अन्वेषणमे मग्न आ ब्रह्मज्ञानक रहस्यकेँ विजित कऽ लेबाक साधनामे लीन रहैत छलाह । एकरा संगहि ओ पतनोन्मुख हिन्दू जातिक जीवनमे परिवर्त्तन अनबाक आवश्यकताक प्रति गंभीर रूपेँ सचेत छलाह । ओ पत्रकारिताक क्षेत्रमे अपन लेखादिमे सामाजिक परिवर्त्तन आ सुधारक समस्या पर खूब विचार करैत छलाह । ओ 'रिफार्म क्लब' नामक एक समाज सुधार संबंधी संस्थाक सक्रिय सदस्य छलाह जे निर्भीकतापूर्वक अन्तर्जातीय खान-पान केँ अपन कार्यक्रम बनौने छल । सी. रघुनाथ राव द्वारा सम्पादित 'रैडिकल सोशल रिफॉर्म' पत्रिकामे सेहो ओ बरोबरि लिखैत रहैत छलाह । समाजसुधारक ई उत्साह भारतीमे आजीवन रहलन्हि से प्रतीत होइत अछि । एक बेर ओ विस्तृत धार्मिक विधि द्वारा एक अछोप बालकक यज्ञोपवीत संस्कार सेहो करौलन्हि । भारती अपन कविता 'घंटी बजाउ'मे नारीक दासता आ जाति-जन्य दर्पकेँ समाप्त करबा लेल प्रबल आह्वान कैने छथि । नारीकेँ पुरुषक दासी नहि सहभागी हैबाक छैक :

आन्हर हो एक आँखि
के अछि जे दृष्टिक एहि क्षति पर हो आनन्दित !
मुक्त करू नारीकेँ
चाही जँ जड़तासँ मुक्त विश्व, आलोकित !

अग्निक उपासना करैत ब्राह्मण, नमाज पढ़ैत मक्का दिस मुह घुमौने

मुसलमान, क्रॉसक सम्मुख माथ झुकबैत इसाई ई तीनू ईश्वरक सर्वव्यापकतेकेँ घोषित करैत अछि । तखन धर्म-धर्मक बीच निरर्थक भेद किएक ? जहाँ धरि अछूत प्रथाक प्रश्न अछि ओ तँ स्पष्टतः प्रकृतिक आदेशक सर्वथा विरुद्ध थीक । की बिलाड़िक बहुत रास बच्चा सब जे विभिन्न घरमे रहैत अछि एक्के बिलाडि माता केर सन्तान नहि ?

घंटी बजा कै करू उद्घोषित
महिमा सर्वोच्च प्रेमक,
अन्त सब भेद आ विभाजन केर,
समाप्ति सम्पूर्ण कुप्रथा आ भ्रष्टाचार केर !

तमिलनाडुक महिला लोकिन भारतीक ऋणी छथि जे ओ नारी केँ समानताक दर्जा देबाक हेतु एवं बालविवाह आ विधवा लोकनिक विरुद्ध क्रूरतापूर्ण भेदभाव द्वारा नारीक शोषणकेँ समाप्त करबाक हेतु सर्वप्रथम आह्वान कैलन्हि । की नारी "माताक कीर्त्ति आ संगिनीक नाम एहि दूनू केर पवित्र संगम" नहि थीक ? भारतीक 'नव नारी'केँ हैबाक छैक विदुषी आ कार्यकर्त्री, विभिन्न लोकक यात्री आ भारतक प्रतिष्ठाक निर्मात्री । आब 'नव नारी'केँ घरक अन्हार कोनटाक वन्दिनी नहि रहि अपन स्वत्त्वकेँ प्राप्त करबाक छैक आ एहि पद पर अभिनन्दित हैबाक छैक :

नारी अछि रक्षिका जननि दुहु जग-जीवन केर ।
जीवन केर जीवन, आत्मा अछि शिव-सुन्दर केर ।।

बहुत काल धरि स्वार्थ आ आत्म-संतोषक कर्दम मे फँसल भारतीक सामाजिक चेतना आ तमिल जनताक उत्थानक हुनक अन्तःप्रेरणा अन्ततः हुनका एकर अनुसंधान करबा लै प्रेरित केलकन्हि जे प्रकाश आ अंधकारक एहि तरहेँ एके संग अस्तित्व किएक ? जखन ज्ञानक एतेक प्रचुरता अछि तँ ई सर्पिल अंधकार कोना ? किएक नहि मनुष्य सत्यक जिज्ञासामे बाहर निकलि ओकर खोज करैत अछि और अंत मे ओहि सत्य-ज्ञानकेँ उपलब्ध कऽ लैत अछि जे जीवनकेँ ज्योतिर्मय कऽ दैत अछि ?

ठीक जखन
उमड़ै अछि ज्योति केर विशाल ज्वार
अथवा आलोक सिंधु
विद्युत् केर अन्हड़ जनु
ज्योतिर्मयि अखिलेश्वरि
घेरि लेथि स्वयं विश्व
तखन एक हृदय अलग भरि कै द्वेषान्धकार
अपनामे लागै अछि धड़कय !
की कुत्सा ई निन्दनीय !

प्राचीन कालमे प्रायः तपस्वी लोकनि ओम् केर रहस्यपूर्ण स्वरोच्चारक कम्पन केर अनुसंधान कै मानवात्माकेँ आलोक-ज्वारसँ भरि देबाक संकेत प्राप्त कऽ लेने छलाह । की तहिना कोनो नव मंत्रात्मक शब्द द्वारा आधुनिक मानव चेतनाकेँ प्रकाश-क्षेत्रमे रूपान्तरित कैल जा सकैत अछि ? भारती कहैत छथि—"सत्यकेँ उद्दीप्त होमऽ दियौक, हम सब हृदयमे एक पावक केँ प्रज्ज्वलित करी ।" ओ ईश्वरीय शक्तिसँ प्रर्थना करैत छथि जे ओ अशुद्ध मानव मनकेँ रचनात्मक शिव शक्तिक एक दीप्तिमय स्वर्णिम यंत्र बना देथु । "हम सब 'शक्ति' शब्द केँ जपी, अमृत केँ हस्तगत करबा लै हाथ बढ़ाबी !" भारतीक 'शब्द' कविता कविक गहन अन्तस्तल सँ निकसल एहने अभिलाषाक मार्मिक पुकार थीक । अपन परिचित सिद्ध लोकनिक संबंधमे भारती जे भूमिका देने छथि ओ अत्यंत मनोरंजक अछि कारण भारती सेहो स्वयं एक सिद्ध छलाह आ तमिलनाडुक अपन पूर्वज जकाँ मृत्युकेँ विजित करबाक साधना कऽ रहल छलाह । वस्तुतः ओ अपन काव्यगत उपलब्धि द्वारा अमरता प्राप्त करबामे सफलो भेल छलाह । आत्माक अमरतामे कठोर विश्वास आ एक सशक्त आशावादिता द्वारा हम सब एखनो अमरत्व प्राप्त कऽ सकैत छी :

नहि घुरि सकइत अछि विगत मूर्ख
कै विगतक स्मृति दुख-दंश भरल
एहि क्षण नहि आत्म-विनाश करू

बीतल केर आब ने बात करू
ई दृढ़ प्रतीति मनमे राखू
'अछि आइ हमर नव जन्म भेल !'
जगकेँ भोगू, सुखसँ जीबू
नहि सुनब हमर तँ करबे की ?
पहिले कुबुद्धि दोहरबैत रहू !

भारतीक गद्य काव्यक अपने एक श्रेणी अछि । रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ जे नोबेल पुरस्कार भेटलन्हि ताहिसँ ओ रवीन्द्र केर तमिलमे अनुवाद करबा लै प्रेरित भेलाह—उदाहरणार्थ राष्ट्रीय शिक्षा पर रचित कविता, किछु कथा आ 'बाल चन्द्र' ('द क्रीसेन्ट मून') केर किछु अंश । शीघ्रे भारती टैगोरक शैली केर प्रभावमे आबि गेलाह । 'ह्विटमैन'सँ ओ पहिनहि अभिज्ञ छलाह आ आब हुनका सम्मुख छलन्हि 'गीतांजलि' । भारती एहि गद्य कविताक लयकेँ तँ अपना लेलन्हि मुदा अपन विषय-वस्तु भिन्न रखलन्हि । ओ एक साहसिक दौड़ लगा कै वेदकालमे पहुँचि जाइत छलाह । प्रचीन ऋृक् जकाँ भावावेशसँ आन्दोलित भारतीक गद्य-गीत सेहो आनन्द आ माधुर्यमे अथवा मधु-विद्याक अनुष्ठानमे, आह्लादसँ भरि उठैत अछि । चक्रवत् परिवर्त्तनशील प्रकृतिक रूपरेखा भारतीक हृदयकेँ जेना गुदगुदा कै हुनक लयकेँ प्रवाहपूर्ण बना दैत छन्हि । हुनक लयपूर्ण शब्द-विन्यास आनन्दातिरेक केर एहन प्रत्यक्ष नृत्य बनि जाइत अछि अथवा चेतनाक विशाल प्रसारमे शक्ति-संवलित शब्दक एहन विस्फोट जतय मानवीय एवं ईश्वरीय तत्त्व एक दोसरामे संश्लिष्ट भै एक आ अभिन्न रूप भऽ जाइत अछि :

जरय अग्नि
अग्नि धर्माचरण केर, ज्ञान आ जीवन केर
अग्नि तपश्चर्या केर, अग्नि यज्ञ-याजन केर
क्रोध अग्नि, शत्रुता आ नृशंसताक घोर अग्नि
सब केर करैत छी उपासना आ रक्षा हम
सब पर करैत छी हम शासन

हे अग्नि ! हमर जीवन केर छी अहाँ चिर संगी
करैत छी हम अहँक स्तुति !

ई सब कविता निश्चित रूपेँ पांडिचरी कालमे भारतीकेँ जे विपरीत परिस्थिति उत्पीड़ित कऽ रहल छलन्हि तकरा प्रति एक ललकारा छल । एहि कविता सभक छौटा दल अछि जकर शीर्षक क्रमशः अछि—'दृश्य', 'शक्ति', 'पवन', 'समुद्र', 'पृथ्वीक दृश्य' आ 'स्वतंत्रता' । 'दृश्य' (Spectacle) प्रकृति जे अपन अनन्तविध रूप प्रकट करैत अछि ताहि पर भारतीक विस्मयकेँ अभिव्यक्त करैत अछि । 'शक्ति' एहि विस्मय-विमुग्धकारी वैभवपूर्ण दृश्यावलीक पाछू एकर संचालिका शक्तिक संधान करैत अछि । 'पवन' आ 'समुद्र' कविक चतुर्दिक जीवन केर आ पांडिचरीमे समुद्रकेँ निरखैत काल समुद्री वायुकेँ जखन ओ श्वासमे भरैत छलाह ताहि क्षण केर वास्तविकतापूर्ण वर्णन करैत अछि । 'पृथ्वीक दृश्य' आ 'स्वतंत्रता' मानवक उधोगति—मानव जाहि झूठ, पारस्परिक स्पर्द्धा आ कलह एवं अज्ञानक वातावरणमे जीवन व्यतीत करैत अछि तकर कारणकेँ निरूपित करैत अछि । जेना इन्द्र देव-सभामे बजैत छथि :

बहुत पूर्वमे कारी घन सम असत्पुंज 'कलि'
कैल विनाश समस्त सद्गुणक
मानवहित जे छलहुँ कि रचने !
आब देवता अबल, प्रबल अछि दनुजवर्ग
तैं धर्मक ग्लानि, अधर्म अभ्युदय, सत्य फूसि
आ महामहिम कि असत्य बनल अछि !
निरानन्द आनन्द, शोक अछि सफल संवलित
पृथ्वी पर दुर्वृत्ति कि एहि विधि प्रकट भेल
आ मानवता हतबुद्धि विकल अछि !
विश्वामित्र, वशिष्ठ, काश्यपक सदृश
तत्वदर्शी लोकनिक पवित्र वाणी विलुप्त
आ वंचक दल केर वाद चलल अछि;
मानव, जे सुरसरिक हेतु छल तृषित,
अहा ! मृगजलेँ छलित अछि !

ई गद्यगीत सब निराशाक वातावरणमे आशाक एक उच्छ्वास निःसृत करैत अछि जखन कि आधुनिक युवक 'वसुपति'कैं पवन दीर्घायु, इन्द्र प्रज्ञा, सूर्य ज्ञानक प्रकाश प्रदान करैत छथि आ सब मिलि ओकरा आशीर्वाद दैत छथिन्ह जे ओ भारत केर कायाकल्प करबा लै तपस्या प्रारंभ करय । आ वसुपति, जे वेदपुरीक समद्रतट पर ठाढ़ भै नव भविष्यक आह्वान करैत गीत गबैत अछि, बहुत किछु पांडिचरी समुद्रतट पर गबैत भारतीयेक आत्मकथापरक प्रतिविम्ब अछि :

भय-दानव केर संहारक हित
सेना साजल ।
कलित कला केर मधु-रस-ग्राही
स्वान्तः सुख बल !
आउ ! चन्द्रज्योत्स्ने, आउ ।

भारतीक गद्य-साहित्य

यद्यपि भारती प्रधानतः कविक रूपमे विख्यात छवि, मुदा ओ तहिना आधुनिक तमिल गद्यक निर्माता सेहो छथि । हुनका हाथमे गद्य एक एहन फौलादी किन्तु पारभासक माध्यम बनि गेल जे प्रत्येक प्रकारक विचार-भेद कैं व्यक्त करबामे सक्षम छल । हुनक प्रखर पत्रकारिता राजनीतिकैं घर-घरक गप बना देलक किएक तँ ओ अंग्रेजी जननिहार प्रबुद्धवर्गक विचारकैं दूरव्यापी तमिल पाठकक ध्यानमे आनि देलक । एक पर एक अनुवाद, निबंध, कथा, रिपोर्ताज, साहित्यिक लेख हुनक प्रेरणादायक लेखनीसँ अजस्र प्रवाहित होइत छल । यद्यपि अनेको छद्म नाम रखबाक कारणेँ हुनक बहुत रास लेखनक पता नहि भेटैत अछि, तथापि आर. ए. पद्मनाभन, पेरियास्वामी तूरन आ सी. विश्वनाथ अय्यर सदृश भारतीक प्रेमी विद्वान भारतीक तमिल गद्य-लेखनक विशाल परिमाणकैं प्रकाशमे अनलन्हि अछि ।

भारतीक गद्यकैं जे ज्वाला स्थायी गतियेँ आलोकित करैत अछि से हुनक उद्दीप्त देशभक्ति आ समाज-सुधारक ज्वलंत आकांक्षा थिक । जखन कि हुनक देशभक्ति विषयक साहित्य अधिकांश रूपेँ तत्कालीन प्रसंगिकता नेने छल, हुनक भारतीय समाज-सुधार विषयक लेखन आजुक संदर्भमे और अधिक प्रासंगिक अछि । जेना पूर्वमे चर्चा भऽ चुकल अछि दूटा कुप्रथा पर ओ गंभीर रूपेँ ध्यान दैत छलाह—नारीक प्रति दुर्व्यवहार आ अछोपक प्रति कैल गेल अन्याय । हुनका एतेक साहस आ इमानदारी छलन्हि जे बाहरमे जाहि बात क शिक्षा दैत छलाह तकर ओ अपना घरोक भीतर अनुवर्त्तन करैत छलाह । पुरुषवर्गसँ हुनक आग्रह छलन्हि जे ओ स्त्रीवर्गकिँ समानताक पद प्रदान करथि आ ओकरा शिक्षित कै अधिक सुन्दर जीवन बितैबाक ओकर अभिलाषाकैं प्रोत्साहित करथि । शक्तिक

पूजा करबाक कोन सार्थकता जँ हम सब स्त्रीगणकेँ वायु आ प्रकाश रहित भनसा घरमात्रक बन्दी बना कै राखी ? पुरुषक ई कतेक तर्क विरुद्ध आचरण छल जे ओ स्त्रीक पातिव्रत्य आ सतीत्व पर तँ जोर दियै, मुदा अपन स्वच्छन्द सम्भोग केर आनन्दक प्रति लुब्ध रहय ? भारतीक अनुसारेँ भारतीय संस्कृतिक संरक्षणक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्यक दायित्व नारीकेँ सौंपल जैबाक चाही । ओ लोकसँ मांग कैलन्हि जे स्त्रीकेँ शिक्षा प्रदान करबाक अतिरिक्त ओ बालविवाह-प्रथाक उन्मूलन करय कारण ओ अनेक भारतीय घरमे शोकसंतप्त विधवाक प्रचलन केर प्रधान कारण थीक । एहि विषय पर हुनक लेखन बहुत सशक्त छलन्हि, संगहि ओ एकरा अपन एक उपन्यास 'चन्द्रिकायिन कथै' केर विषय सेहो बनौलन्हि ।

वस्तुतः 'चन्द्रिकायि'क एहि कथाकेँ ओ पूर्ण नहि कऽ सकलाह । मुदा एहि अपूर्ण उपन्यासक जे किछु अंश हमरा सबकेँ उपलब्ध अछि ताहि आधार पर एहि विधामे भारतीक संभावित निपुणताक अनुमान कैल जा सकैत अछि । हुनकामे वस्तुतः एक महान यथार्थवादी उपन्यासकारक प्रतिभा अन्तर्निहित छल कारण एहि उपन्यासक जे नौटा अध्याय प्राप्त अछि से हुनक कथा कहबाक जीवंत कलाक परिचय दैत अछि । उपन्यास १९०१ मे एक सुदूर तमिल ग्राममे घटित भूकम्पसँ प्रारंभ होइत अछि । एहिमे एक युवती विधवा अपन भतीजी चन्द्रिकायिनक संग जीवित बचैत अछि । तीन वर्ष धरि ओ इमानदारीसँ जीविका प्राप्त करबक निष्फल प्रयत्न करैत अछि । ओ जी. सुब्रह्मण्य अय्यर आ वीरेशलिंगम पन्तुलु (जे दुहू गोटे इतिहासमे अपन स्थान रखैत छथि) सदृश समाजसेवीसँ सहायताक याचना करैत अछि आ अंतमे एक पूर्व संन्यासी विश्वनाथ शर्मा नामक व्यक्तिसँ विवाह कऽ लैत अछि । ओ दुनू सुखी विवाहित जीवन व्यतीत करऽ लगैत अछि आ चन्द्रिकायिकेँ अपन पुत्री जकाँ पालय-पोसय लगैत अछि कि शर्मा पागल भऽ जाइत अछि ।

उपन्यासक अधिकांश भागक उद्देश्य स्पष्टतः चन्द्रिकायिकेँ आधुनिक आदर्श बालिकाक रूपमे चित्रित करब बूझि पड़ैत अछि । एकर जे किछु अंश हमरा सभक सम्मुख वर्त्तमान अछि ओहिमे

विश्वसनीय घटना-क्रमक अन्त विधवाक विवाहमे देखाओल गेल अछि । एहिमे अय्यर एवं पन्तुलु सदृश वास्तविक जीवन केर पात्रक समावेश कैल गेल अछि जे अपना कालक महान समाजसेवी छलाह् । प्रसंगवश भारती ई प्रश्न करैत छथि—पारिवारिक जीवन वा सन्यास ? प्रायः परिवारक भरण-पोषण-कर्त्ताक रूपमे हुनक अपने भोगल संकट एवं श्री अरविन्द सन महान सिद्ध योगीक सामीप्यक कारणेँ हुनका ई प्रश्न उठाबय पड़ल हैतन्हि । गैरिक वस्त्र आदि वाह्य वस्तु पर आधारित संन्यास व्यक्तिकेँ असंतुलित बना सकैत अछि जखन कि दमनमात्र द्वारा नियंत्रित वासना अकस्मात् उभड़ि कै ओकरा पराजित कऽ दैत छैक । नित्यानन्दकेँ तखने जीवन केर वास्तविक सुख एवं आत्मिक शांति केर अनुभूति होइत छैक जखन गैरिक वस्त्रकेँ त्यागि ओ अपन नाम विश्वनाथ शर्मा रखैत अछि आ विशालाक्षीसँ विवाह करैत अछि ।

जहाँ धरि चन्द्रिकायि केर प्रश्न अछि, पाठककेँ उपन्यासमे तीन बरखक बालिकामात्रक रूपमे ओकर आंशिक वर्णन भेटैत छैक :

"ओकर मुस्की गुलाबक मुस्कान जकाँ छलैक । ओकर हाथ आ पैर जनु सोना सँ गढ़ल छलैक । ओकर मुखमंडल चन्द्रज्योतिसँ निर्मित छलैक । ओकर बाजब गंधर्व लोकनि द्वारा बजाओल स्वर्ण वीणाक रागिनी जकाँ छलैक । ओकर चालि जनु स्वर्गक अप्सराक नृत्य छल ।"

भारतीकेँ बहुत कथा लिखबाक ने फुरसति छलन्हि ने शान्ति । किन्तु जे थोड़ कथा ओ लिखलनि से गंभीरतासँ भरल अछि । 'स्वर्णकुमारी'क एक प्रतिनिधि उदाहरण अछि । सनातनी मनोरंजन एक ब्रह्मसमाजी कन्या स्वर्णकुमारीसँ प्रेम करैत अछि । मुदा ओकर पिता एक दोसर ब्रह्मसमाजी हेमचन्दरसँ ओकर विवाह कराबऽ चाहैत अछि । एहिमे कोनो सन्देह नहि जे ब्रह्मसमाज हिन्दू समाजकेँ सनातनी रूढ़िवादसँ बाहर निकालबाक हेतु किछु परिवर्त्तनक आरंभ कैने छल जकर दिशा ठीक छलैक । मुदा किछु ब्रह्मसमाजी और आगू बढ़ि कै पश्चिमी समाजक दुराचारक नकल कऽ लेने छल । तैं हेमचन्दरकेँ मांस भक्षण करबामे आ मदिराक

सेवन करबामे कोनो असमंजस अनुभव नहि होइत छलैक । फलतः एहिमे कोनो अजगुत बात नहि जे सुभग स्वर्णकुमारी ओकर तिरस्कार करैत अछि । मुदा ठीक जाहि क्षणमे मनोरंजन आ स्वर्णकुमारी एक दोसरा कैं स्वीकार करऽ लगैत अछि, स्वर्णकुमारीकैं ज्ञात होइत छैक जे मनोरंजन देवतुल्य तिलक केर नीतिक विरोध कैने छल । तखन ओ एहि विभ्रान्त देशभक्तसँ दृढ़तापूर्वक अपनाकैं फराक कऽ लैत अछि ।

संभाषण शैलीमे भारतीक द्वारा लिखल कतोक साहित्य अछि, जेना कि भारती आ एक नम्बूदिरी ब्राह्मणक बीच वार्त्तालाप अछि जे केरल केर 'एस.एन.डी.पी. योगम्' सदृश एक संस्थाक सामाजिक आन्दोलनक संपूर्ण परिचय एक दृश्यावलीक रूपमे दैत अछि । काल्पनिको कथा सब अछि जेना 'चन्द्रतीवू' । अपन प्रिय सिद्धान्तक उपदेश देबा लै भारती कोनो आधारक उपयोग कऽ लैत छथि । हुनक वर्णनमे बहुधा व्यंग्यक पुट रहैत अछि और सामान्यतः अपना चारू दिस लोक-वेद पर, ओकर दोष आ त्रुटि सहित, प्रचुर प्रकाश दैत अछि । हुनक कने नम्हर सन कथा 'छठम भाग' अछि जे सब जातिक बीच समानताक हेतु प्रबल आह्वानसँ भरल अछि और ई प्रतिपादित करैत अछि जे ब्रह्मचर्य राष्ट्रक पुनरुत्थानक कुंजी थीक । एकर नायक गोविन्द राजनकैं ओकर प्रेमिकाक पिता द्वारा अस्वीकृत कऽ देल जाइत छैक कारण जे ओ एक ब्रह्मसमाजी थीक आ 'वन्देमातरम्' आन्दोलन केर कार्यकर्त्ता अछि । एहि नायकक सैनिक अभियान भारतीक गौरवपूर्ण आ प्रेमिल दृष्टिसँ देखल भारतक दृश्यावली प्रस्तुत करबाक उद्देश्यसँ देल गेल अछि । 'छठम भाग' कथा भारतक अछोपवर्गक जनताकैं सेहो निर्द्दिष्ट करैत अछि । एक दिस एकर नायिका भारतक एहि अभागल पुत्र सभहक कष्ट दूर करबा लै परिश्रम करैत अछि, दोसर दिस नायक भारतक राजनीतिक पुनरुत्थानक क्षेत्रमे कार्य करैत अछि । कठिन संकट आ जाँचक बीचसँ गुजरलाक पश्चात् मीनाम्बल आ गोविन्दराजन मिलैत अछि आ विवाह करैत अछि । दूनू भारतक महानताक हेतु साधना करबाक व्रत लैत

अछि । जेना अश्विनीबाबू दूनूकेँ कहैत छथिन्ह, दूहू गोटाकेँ अपन जीवनकेँ वास्तविक यज्ञ बना लेबाक छैक ।

अछोप प्रथाक उन्मूलनक संबंधमे लिखल कथा सबमे 'क्विनंकंक्स किला' राष्ट्रनिर्माणक प्रयत्नमे अछोप वर्गकेँ (जकरा आब हरिजन कहल जाइत छैक) अस्वीकृत वा अपेक्षित कऽ देब केहन गलती थीक तकरा बहुत प्रभावोत्पादक रीतिसँ सिद्ध करैत अछि । एहि किलाक चारि देवाल—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र—मजबूत अछि । मुदा एकरा पाँचम देवाल, पाँचम जाति, माटिक बनल अछि और एहि बाटे दुश्मन सुगमतापूर्वक प्रवेश कऽ सकैत अछि आ राष्ट्रकेँ लूटि सकैत अछि । भारतीक समयसँ एखन धरि कोनो कथाकार अपन सर्जनात्मक शक्ति-प्राचुर्यकेँ समाज सुधारक विषयसँ एहि रूपेँ नहि संश्लिष्ट कऽ सकल अछि जाहिसँ फलीभूत रचना एके सँग रोचक, विक्षोभकारी आ विचारोत्तजक सेहो हो । बहुत सहज रूपेँ भारती अर्थगत अभिव्यंजना द्वारा प्रचलित भ्रान्ति सभक निराकरण करैत छथि । एक उदाहरण देब पर्याप्त हैत :

"किछु लोक 'परयार' शब्दकेँ अपमानजनक बुझैत छथि आ तकरा स्थान पर 'पंचम' शब्द केर प्रयोग करैत छथि । हमहुँ यदा-कदा 'पंचम' केर प्रयोग करैत छी । मुदा 'परयार' तमिलनाडुक एहि जातिक हेतु प्रयुक्त मूल शब्द थीक । 'पराइ' (वा 'परे') केर अर्थ युद्धक नगाड़ा होइत अछि । प्राचीन कालमे एहि जातिक लेल ई गौरवपूर्ण कार्य छल जे ओ राजाक युद्धभूमिमे जयबाक काल एहि नगाड़ाकेँ पीटैत छल । मद्रासमे एक 'परयार सोसाइटी' सेहो अछि । वस्तुतः एकरा सबकेँ 'परयार' नहि कहब ओतेक गलत नहि अछि जतेक ओकरा सभक सँग घृणित दुर्व्यवहार करब अछि ।"

एही सँग हमरा सबकेँ भारतीक पशुकथा सभ पर एक दृष्टि देब उपयोगी हैत । जेना कि 'कुयिल पात्तु'मे हम देखि चुकल छी आ वनस्पति एवं प्राणिसमूह पर लिखल भारतीक गीत सब नीक जकाँ प्रदर्शित कऽ चुकल अछि, भारतीकेँ नीति-कथाक प्रति विशेष रुचि छलन्हि आ 'पंचतंत्र'सँ ओ एकर प्रेरणा लैत छलाह । हुनक लिखल 'नवतंत्र कथा' सब निगूढ़ सत्यकेँ उद्घाटित करबाक एक चतुर प्रयास

थीक । 'नाग बालिका' केर साहसिक कार्य, 'मणि अय्यर'क चतुर चालि आ 'विवेक शास्त्री'क अभिप्रेरणा हमरा सबकेँ मुग्ध कऽ दैत अछि । एहि कथा सभक शिक्षाक निष्कर्ष जे शास्त्री प्रस्तुत कैलन्हि अछि विचारणीय अछि :

"ईश्वर-भक्ति सर्वदा शुभ फलदायक होइत अछि । मुदा ईश्वर-भक्तिक संग बुद्धि-विवेक केर संयोग होयब आवश्यक अछि । मूर्खक विश्वासमे कोनो शक्ति नहि होइत अछि । भगवानक पूजन-नमन करबासँ पूर्व समुचित ज्ञान प्राप्त करब सेहो अभीष्ट थीक । भक्ति सदा सामान्य बुद्धिक संग रहैत अछि ।"

शिक्षात्मक आ दार्शनिक लेखन

भारतीक 'ज्ञान-रथम्' केर विश्लेषण आलोचनाक सामान्य नियम द्वारा करब कठिन अछि । ई एकहि संग दृष्टांतकथा, आदर्श लोकक कल्पना, फन्तासी आ यथार्थ एहि सब किछुक मिश्रित रूप अछि आ संगहि भारतीक हास्य-रसमे एहि सभक परिपाक सेहो भेल अछि । भारती अपन 'मन'रूपी प्रेमिकाक संग ज्ञानक रथ पर आरूढ़ भै यात्रा करैत छथि । 'मन' केर उपस्थितिक कारणेँ हुनका शांति-लोकमे प्रवेश नहि भेटैत छन्हि । मुदा आनन्द-लोक अर्थात् गंधर्व-लोक हुनक स्वागत करैत छन्हि । एतय चन्द्रकिरण पर्यन्त संगीतक सृजन करैत अछि आ एहि ठामक प्रत्येक वस्तुमे एक झिलमिल रमणीयता लक्षित होइत अछि :

"वैह देखू समुद्र ! चन्द्रकिरण द्वारा रूपान्तरित जगमगाइत तरंगावलि ! श्वेत पुष्पक शैल सदृश नौकासमूह आ हंस जकाँ हेलैत सुदूर लघु नौका सब ! ऊपर चन्द्रमा आ रजत मेघावलि । कोनो मेघ पसरल जाल जकाँ ! किछु फेनिल लहरि सदृश ! कोनो मेघ छिड़िऐल पुष्पराशिक आभास दैत तँ किछु नीचाँक नौका सबकेँ ऊपर आकाश-दर्पणमे प्रतिविम्बित करैत ! आ तारक-दल जेना हीरक चूर्णकेँ आकाशक समुद्रमे बिखरा देल गेल हो ! अथवा मनक मधुमाछी द्वारा ज्योति-मधु पीबाक हेतु गगनक सरोवरमे अनन्त पुष्प राशि सजा देल गेल हो ! जखन शाश्वत दिक् शाश्वत सर्वव्यापकतासँ टकरायल तँ ओहिमे सँ जेना ज्वाल-स्फुल्लिंग बहार भेल हो !"

तत्पश्चात् ओ सत्य-लोकमे प्रवेश करैत छथि । मुदा जैं ई एक कठोर लोक अछि कवि ओतय रहबासँ पृथ्वी पर घुरि जायब अधिक पसिन्न करैत छथि । एहि क्रममे हमरा सबकेँ शहर केर सघन आबादीवला गन्दा इलाकाक मध्यवर्गीय लोकनिक कष्टक वास्तविक वर्णन भेटैत अछि । यदि लेखक बुतेँ संभव होइतन्हि तँ ओ एहि

सबसँ भागि पड़ैतथि । ओ फेर रथ पर चढ़ि धर्म-लोकक यात्रा करैत छथि । लेखक जर्मन कवि दान्ते द्वारा चित्रित दृश्य जकाँ यंत्रणा केर एक फन्तासीक बीचसँ गुजरैत छथि । एहिसँ हुनका ई अनुभव होइत छन्हि जे पापमूलक इच्छाक फल मृत्यु नहि अपितु जीवित मृत्यु (death-in-life) केर एक भयानक अनुभव होइछ जे अपन अन्तरक अभिशाप भरल चरम भय केर अवस्था थीक । शीघ्रे हुनका अग्निस्नान कराओल जाइत छन्हि आ पापपूर्ण मलिन विचारसँ हुनका मुक्त आ शुद्ध कऽ देल जाइत छन्हि । तकरा बाद हुनका स्वयं धर्मक सम्मुख आनल जाइत छन्हि । धर्म-देवताक मुख बाल-गंगाधर तिलक केर मुख जकाँ परिलक्षित होइत अछि । एहि तरहेँ ओ राष्ट्रीय राजनीतिक ओहि महान राजनीतिक नेताक प्रति अपन श्रद्धांजलि अर्पित करैत छथि । ऋृषि कण्वसँ भारतीकेँ शिक्षा भेटैत छन्हि जे विभिन्न मानवजाति केर आ देशभक्त लेकनि केर की कर्त्तव्य थीक । इच्छा मात्र कैलासँ पाप वा भ्रष्टतासँ मुक्ति नहि भेटि सकैत अछि । एहि हेतु मनुष्य द्वारा असत्केँ दूर रखबाक हेतु निरंतर संघर्ष करब आवश्यक । धर्म तरुआरिक धार पर बहुत खतरनाक रूपेँ सन्तुलित रहैत अछि । पुण्यक पथसँ न्यूनतमो अंशमे भ्रष्ट भेलासँ मनुष्य एहि राज्यक नागरिकतासँ वंचित भऽ सकैत अछि ।

गद्यक अन्य समूह सब जेना 'तरासु' (तराजू) आ 'सुम्मा' (प्रशान्ति) सेहो अपन सहजताक कारणेँ मुग्ध करैत अछि, मुदा गूढ़ार्थ व्यंजकताक कारणेँ ओ वस्तुतः हमरा सबकेँ गंभीरतापूर्वक सोचबाक हेतु उकसबैत आ उत्तेजित करैत अछि । भारतीक बौद्धिकतापूर्ण कथन सब विलक्षण रूपेँ उद्धरणीय अछि । एकर एक उदाहरण मात्र देब एतय पर्याप्त हैत :

"अर्थप्राप्तिक उद्देश्यसँ कीर्त्ति प्राप्ति हेतु बुनब श्रेयस्कर थीक । मुदा कोनो कार्यमे दक्षता प्राप्त करब और अधिक मूल्यवान वस्तु थीक । हमरा सबकेँ एहन कविताक रचना करबाक चाही जे बनारसक रेशमी वस्त्र जकाँ हो अथवा किसानक हेतु बुनल मोट धोती जकाँ हो । मशीनक बुनल खराब होइत अछि । मलमल टिकाउ नहि होइत अछि । कवितामे ओज, प्रसाद, उदात्तता, गांभीर्य आ चारित्र्य

अवश्य रहबाक चाही । ओहिमे किछु लालित्य सेहो जोड़ि सकै छी । मुदा वेशी नीक यैह जे एकरा बिना काज चलाबी ।"

भारती द्वारा कैल गेल पातंजलि योगसूत्रक समाधिपाद आ किछु वेदक ऋचा केर व्याख्या आ भगवद्गीताक भूमिका जकरा ओ सम्पूर्ण रूपेँ तमिलमे अनुवाद कैलन्हि निश्चिंत आ पुष्ट शैलीक संग सुगम्य एवं सुबोध गद्य शैलीक आदर्श उदारहण थीक । एहिमे गूढ़तम विचारकेँ सरलतम शब्द द्वारा प्रेषित कैल गेल अछि । ई बात हुनक गीताक भूमिका पर विशेषतः लागू होइत अछि । 'संन्यासीक त्याग' आ 'सांसारिक व्यक्तिक अस्वीकृति' एहि दूनूकेँ कौशलपूर्वक छौडैत भारती गीताक आधारशिला 'कर्म संन्यास योग'केँ स्पष्ट करैत छथि । जीवनकेँ अस्वीकार कै मनुष्य आत्मसाक्षात्कार सिद्ध नहि कऽ सकैत अछि । संसारमे रहि कै कर्मफल मात्र केर त्याग करी यैह एकमात्र मार्ग थीक । दैनिक जीवनमे परिशुद्धते आनि कै हम ईश्वरीय जीवन प्राप्त कऽ सकैत छी ।

भारतीक अंग्रेजी गद्य आ कविता

ई बात सत्य जे भारती जखन उच्च विद्यालयक छात्र छलाह तँ अंग्रेजी भाषासँ हुनका तीव्र अरुचि छलन्हि । मुदा आगाँ चलि कै जखन ओ बनारसमे रहैत छलाह तँ ओ अंग्रेजी भाषाक उपयोगिता आ सौष्ठवसँ परिचित भेलाह आ एट्टयपुरम् घुरि कै अयलाक पश्चात् ओ अंग्रेजीक कवि शेली पर विमुग्ध भऽ गेलाह । तमिल दैनिकक उपसंपादकक रूपमे हुनक एक काज राजनीतिक आ दार्शनिक भाषणक अनुवाद करब सेहो छलन्हि । एहिसँ हुनका अंग्रेजी गद्य केर लयक प्रति विशेष रुचि उत्पन्न भऽ गेलन्हि । पांडिचरीमे श्री अरविन्दक सहवास एहि रुचिकेँ और अधिक तीव्र बना देलकन्हि । श्री अरविन्द स्वयं वस्तुतः भाषाक सम्राट् छलाह आ अंग्रेजीक व्यवहार करबामे पारंगत छलाह । तैं हुनक प्रभाव संक्रामक छलन्हि । विभिन्न अवसर पर भारती द्वारा कैल गेल अंग्रजी लेखन आ अनुवादक संकलन 'अग्नि आ अन्य कविता आ अनुवाद' (Agni and other Poems and Translations) आ 'निबन्ध आ अन्य गद्यांश' (Essays & Other Prose Fragments) मे कैल गेल अछि । यद्यपि ई आब अर्धशताब्दीसँ अधिके पुरान भऽ गेल अछि, एकरामे एखनो स्फूर्त्तिदायक आधुनिकता आ ओजस्विता भरल अछि । भारती द्वारा भारतीक कैल गेल अनुवाद अपनामे एक असाधारण कृति थीक, उदाहरणस्वरूप निम्नलिखित उद्धरणमे व्याकुलताक लयकेँ देखल जाय :

अहाँ छी हमरा लै अद्भुत् सम्मोहन
हम छी अहाँ लै चिरजीवित चुंबक-कण
अहाँ छी हमरा लै वेद शुद्ध रूप
हम छी अहाँ लै ज्ञान निश्चय स्वरूप
विश्वाकांक्षाक स्वर कम्पायमान

हे कृष्ण ! हे प्रेम ! अग्नि सर्वप्राण
चरम नीरवतामे देखै छी एतय
अहाँक मुखछवि जे परमानन्दक विषय
जीवन लै स्पन्दन, जेना औंठी लै स्वर्ण
ग्रह लै नक्षत्र, वस्तु आत्मासँ पूर्ण
तहिना छी हमरा लै अहाँ कृष्ण प्रेममूर्त्ति
अहाँ छी शक्ति तँ हम विजय केर पूर्त्ति
धरती आ स्वर्गक जे सुख अछि संपूर्ण
होइछ उद्‌भूत अहींसँ हे श्री कृष्ण !
चिरन्तन छी महिमा आ शक्ति अपरूप
हृदय हमर ! हे प्रकाश ! हे प्रकाश रूप !

पुनः आठम शताब्दीक वैष्णव रहस्यवादी भक्तलोकनिक कठिनतम उद्‌गारकेँ भारती बाइबिल केर सरल उपदेशपूर्ण शैलीमे हमरा सबकेँ प्रेषित करैत छथि :

"जाउ, ओहि अक्षर अव्यय प्रभु केर सेवा करैत अपन जीवन बिताउ । जिह्वासँ हुनक भजन गाउ, वेदक पवित्र ऋचाक पाठ करू, ज्ञानक पथ पर चलबामे प्रमाद नहि करू । अहा ! पुष्प, सुगन्धि, चन्दन आ जलसँ हुनक अर्चना कैनिहार निष्ठावान सौभाग्यशाली भक्त लोकनिसँ ई धरती कतेक धन्य भऽ गेल अछि !

एहि सम्पूर्ण उर्ध्वमुखी विश्वमे भरि गेल अछि, चारू दिस पसरि गेल अछि, कृष्णक एकसँ एक सम्मोहक रूप ! ओहीमे छथि दिगम्बर रुद्र, इन्द्र, ब्रह्मा आ सब क्यौ.....लौह युगक अन्त भऽ कै रहत, अहाँ संगठित तऽ होउ आ मात्र हिनका सभक अर्चना तँ करू !"

भारतीक अंग्रेजी गद्य स्पष्टतः अरविन्दक प्रामाणिकता आ समृद्धिसँ समन्वित अछि, आ ई कोनो आश्चर्यक बात नहि जँ हम पांडिचरी कालमे 'द लाइफ डिवाइन' केर लेखक सँ भारतीक मित्रताकेँ स्मरण करी । उदाहरणस्वरूप आत्मसमर्पण पर भारतीक ई पंक्ति द्रष्टव्य अछि :

"अखिल सर्वव्यापी जीवन प्राप्त करबाक हेतु आत्मसमर्पणक सर्वोच्च आवश्यकता अछि । सब क्यौ धर्मक पुकार पर अपन

धन-सम्पत्ति, अपन अधिकार, एते धरि जे अपना प्राण पर्यन्त केर त्याग कऽ सकैत अछि । मुदा जखन ओही व्यक्तिकेँ अहाँ आह्वान करबैक जे ओ अपन मानवीय अस्तित्वकेँ ईश्वरीय जीवनसँ बदलि लियै जे कि यथार्थतः वैह वस्तु थीक जे सब धर्म ओकरा सँ करबऽ चाहैत अछि, तखन ओ एकरा अस्वीकार कऽ दैत अछि किएक तँ मृत्युक मदिरा हमरा सबमे सँ अधिकांशकेँ बहुत जोरसँ आकर्षित करैत अछि । आ तैयो सर्वव्यापक वास्तविकताक प्रज्ज्वलित अग्निक प्रति अपनाकेँ समर्पित कैलासँ हम कोनो अपन अस्तित्वकेँ गमा नहि दैत छी, अपितु ओहि अग्नि-परीक्षासँ हम और देदीप्यमान एंव अमर भऽ कै बहार होइत छी । हे भ्राता आ भगिनी लोकिन, आउ, हम सब ओहि सर्वोच्च प्रकाशमे अपनाकेँ लय कऽ कै अमर जीवनक वरण करी !"

जतय कतहु हम दृष्टिपात करैत छी खाहे ओ अमर जीवन हो वा भाग्यवादिता, जातिजन्य औद्धत्य हो वा नारी मुक्ति, भारतीय परम्परा हो वा वाणीक स्वतंत्रता, भारती बहुत सोझ रूपमे पाठक केँ सम्बोधित करैत छथि और ओकर समग्र ध्यानकेँ आकर्षित करैत छथि । की पचास वर्षसँ अधिक समय निम्नलिखित गद्यांशक महत्ता केँ कनेको धूमिल कैलकैक अछि ?

"स्वतंत्र वाणी प्रत्येक बुद्धिमान सरकारक सबसँ वास्तविक सहायक थीक । जखन अहाँ ककरो वाणीक कंठ मोकैत छियैक तँ अहाँ ओकरा हृदयकेँ द्वेषी आ कठोर बनबैत छियैक । ई दुनिया मन पर आधारित अछि : 'विचार एक वस्तु थीक ।'

"एक पुरान लेखक केर कथन अछि जे एक बुद्धिमान राजाकेँ लाखों मूर्ख केर अन्ध अनुगामितसँ एक हजार विचारवान मनुष्यक आदरक अधिक परवाहि करबाक चाही । कोनो राज्यक प्रति आदरक पहिल शर्त ई थीक जे सब चीजकेँ आ सब दलकेँ वाणीक स्वतंत्रता देल जाय ।"

भारतीक अंग्रेजी लेखनमे व्यंग्य अथवा हास्यक कोनो प्रयत्न नहि कैल गेल अछि, कारण अंगेजी लेखनमे ओ तमिल भाषा जकाँ तमिल परिवेश आ चेतनाकेँ स्थान नहि दऽ रहल छलाह । ओ अपन सीमाकेँ

बूझैत छलाह आ ओ भरिसक ई सोचैत छलाह जे विदेशी भाषामे हास्यक सृजन कृत्रिम प्रयास होयत । मुदा ओ सोचि-विचारि कै व्यंग्यक एक प्रयास कैलन्हि । ई लेखन एक प्रयास मात्र रहितहुँ भारतीक स्वयं अपन इच्छाक विरुद्ध हुनक सर्वाधिक बिक्रीवला साहित्य सिद्ध भेलन्हि । 'सोनक नाङरिवाला नढ़या' (The Fox with the Golden Tail) जकरा अरविन्द भारतीक लिखल अत्यन्त उत्कृष्ट लेखन कहि प्रशंसित कैलन्हि, एक कोलाहल आ आत्मदंश भरल अनियंत्रित कथा अछि । जहाँ धरि एकर महत्त्वक प्रश्न अछि १९१४ मे एकर द्वितीय संस्करणमे भारती ई विचार व्यक्त कैने छथि :

"ई सभ क्यौ स्वीकार करै छी जे प्राचीन कालमे हिन्दू कोलनि आत्मसाक्षात्कारक बहुत उच्च सोपान धरि चढ़ि चुकल छलाह । मुदा गत पीढ़ीक हिन्दू लोकनि, विशेषतः अंग्रेजी शिक्षाप्राप्त व्यक्ति सब, कोनो देश वा युगक सभसँ बड़का बुड़िबक लोक रहलाह अछि । आ वर्त्तमान पीढ़ीक हमरा लोकनि एहि हेतुएँ कृतसंकल्प छी जे ठकपनीक पेशा कैनिहार लोक आब देशमे शान्तिपूर्वक अपन पेशा नहि कऽ सकथि । संक्षेपमे यैह अछि एहि कथाक अन्तर्मर्म ।"

एहि लघु व्यंग्यकेँ छोड़ि भारतीक सब अंग्रेजी लेखन सामान्यतः गंभीर कोटिक रहल अछि । तैं सी. आर. रेड्डी आ के. एस. वेंकटरमानी भारतीक अंग्रेजी लेखनक संकलनमे भूमिकास्वरूप जे कहलन्हि अछि से कोनो आश्चर्य नहि :

"जखन भारती सन व्यक्ति, अपना भाषाक प्रयोगमे कल्पनातीत आनन्दक अनुभव कैलाक उपरान्त, अपन कसमसाइत आत्माभिव्यक्ति लै विदेशी भाषा दिस झुकैत अछि, तखन कोनो आश्चर्य नहि जे कला अधिक गंभीर विचारक वाहक बनि जाय, किएक तैं कलामे सेहो आत्माभिव्यक्तिक अंतिम उद्देश्य आत्मसाक्षात्कारे थीक । ईश्वरक हेतु ई तीव्र उत्कंठा एकर प्रत्येक गीत आ पृष्ठमे दृष्टिगोचर हैत ।"

जीवंत भाषा

श्रेष्ठ तमिल कवि पी. श्री युवावस्थामे भारतीक कविताक सम्मोहनसँ अभिभूत भऽ उठलाह । ओ भारतीक तुलना कोलंबससँ कैलन्हि अछि । ओही प्रसिद्ध अन्वेषक जकाँ भारती तमिल जन केर आनन्द ओ रसानुभूतिक लेल तमिल भाषा आ साहित्यक विलक्षणता केर नव अनुसंधान कैलन्हि, किएक तँ अनेक शताब्दीसँ हुनक चेतना अनुकरणात्मक, घिसल-पिटल, रूढ़ि-जर्जर कवितासँ मृत भऽ गेल छल । ई अतीत द्वारा कैल गेल काव्यक स्वतंत्रताक निषेध सँ आ निर्जीव स्तरीकरणसँ मुक्तिक उद्घोष छल । ई पौराणिक अतीतक प्रति एहन सम्पूर्ण सम्मोह जे शक्तिक ह्रास कऽ रहल छल ताहूसँ सुखद मुक्ति छल । निस्संदेह भारती तमिल साहित्यक तीन महान निर्माता—वल्लुवर, इलैंगो आ कम्बन—केँ उन्मुक्त श्रद्धा अर्पित कैलन्हि । हुनक गद्य रचना तमिल कविगणक उद्धरणसँ सम्पुष्ट रहैत अछि । ओ अपना कवितामे ओही छन्दक प्रयोग कैलन्हि जे पूर्ववर्त्ती कवि लोकनिसँ परम्परा द्वारा हुनका प्राप्त भेलन्हि । मुदा भारती भाषाकेँ अनावश्यक आलंकारिक अभिवृद्धिसँ मुक्त कै, लिखित आ बोल-चालक भाषाक बीच अन्तरकेँ कम कै, अपन लेखनकेँ पुनर्जागरण (रिनासाँ) आ पश्चिमक जनतांत्रिक विचार (व्यक्तिवाद, समानता आ भ्रातृत्व) सँ अनुप्रणित कै आ अपन साहित्यक कार्यशालामे लोक-कथा, लोक-छन्द और लोक-लयकेँ प्रविष्ट करा कै लोक-रुचिमे मौलिक क्रान्ति आनलन्हि । फलतः हुनक कृति हमरा सभकेँ बहुमूल्य लाभ प्रदान कैलक अछि आ तमिल आधुनिक भारतक सबसँ प्रबुद्ध भाषामे सँ एक मानल जाइत अछि ।

वस्तुतः भारतीक प्रमुख देन अछि सरल शब्दमे निहित शक्तिकेँ चीन्हब । तमिल गद्य केर प्रारंभ विलंबसँ आ रुकि-रुकि कै

भेल । जखन भारती साहित्य-क्षेत्रमे प्रकट भेलाह तँ तमिल तखनहुँ शब्दाडंबर आ व्याकरणक जटिल वाक्य विन्यास सँ अत्यंत बोझिल छल । भारती ओहि सभ काकलीकेँ काटि बजबाक सहज शैलीमे लिखब शुरू कैलन्हि आ ताहिसँ तमिल श्रोता ओहिना आनन्दपूर्ण आश्चर्यक निसास छोड़लक जेना मोलियर केर एम. जॉर्डेन कैँ भेलैक जखन ओ ई सुनि आहत भेल जे ओ सर्वदा गद्य बजैत रहल छल ।

भारतीक तमिल सर्वदा सरल, सोझ आ ओजपूर्ण रहल अछि कारण हुनका भीतरक तनाव एक एहन ध्वनि (टोन) केर सृजन करैत अछि जाहिसँ ई बुझि पड़ैछ जेना हुनक संभाषण शैलीमे प्रयुक्त शब्द सब तीव्रताक कुंडली पर कुंडलीसँ भरल हो । राजनीतिक लघु पुस्तिका, समाजशास्त्रीय लेख, साहित्यिक निबंध वा कथामे सँ किछु हो शब्द निरन्तर हुनका लग बिनु प्रयासेँ सहजतापूर्वक आबि जाइत छलन्हि । कोनो औपचारिक वा वैदुष्यपूर्ण भूमिकाक बिना हुनक लेख एना प्रारंभ भऽ सकैत छल :

"अन्नक बालि जकाँ छोट लोल, छोट आँखि, छोट माथ, उज्जर गर्दनि, क्रीम-श्वेत रेशमी रोमावलि, सज्जित सुन्दर पेट, उज्जर-कारी मिश्रित धूमिल रंगक रेशमी रोआँवला पीठ, छोट पाँखि : ओह, एतेक छोट पैर !"

तकरा बाद शीघ्रे बगड़ाक प्रेमपूर्ण जीवन आ विद्युतीय स्वतंत्रताक ओकर आनन्द, मानव द्वारा सतत कैल जाइत जीवन-रक्षाक हेतु संघर्ष, कर्मयोगक आवश्यकता, आत्मज्ञानक आलोक पैबाक एकमात्र मार्ग फलाकांक्षाक त्यागसहित कैल गेल कर्म—एहि सभ विषयमे पाठक डूबि जाइत अछि । एहन स्वाभाविकता जेना कि लेखक वस्तुतः पाठकक संग कोनो अनियत किंतु चमत्कारपूर्ण नाटकीय एकालापमे लागल होथि—हुनक ई गुण तमिल पाठककेँ एहन रचना अधिकसँ अधिक प्राप्त करबाक हेतु लालायित कऽ दैत छल । अविलम्ब दोसर तमिल लेखक भारतीक 'अध्यवसायी अनुकरणकर्त्ता' बनि गेलाह आ अपना ढंगेँ उत्कृष्ट उपलब्धि कैलन्हि । एहन गोटेमे, 'कल्कि', ना. पिचामूर्त्ति, 'अकिलॉन', जयकान्तन आ राजम् कृष्णन सदृश

साहित्यकारक नाम तत्काल लेल जा सकैत अछि । मुदा, आइ भरिसके कोनो लेखक हो जे भारतीक परम्परासँ लाभान्वित नहि हो ।

जेना कि प्रतिभाक एके ध्रुव स्पर्शसँ भारती तमिलकेँ पांडित्यक बन्धनसँ मुक्त कऽ देलनि । जखन कि हुनक किछु आरंभिक कविता (जेना बंगविभाजनक पश्चात् लिखल 'स्वागत बंगाल') मे यत्र-तत्र एक-दू शब्दक हेतु पाद-टिप्पणी देब आवश्यक छल, हुनक पश्चात् कालक कवितामे कत्तहु कोनो अप्रचलित प्रयोग वा दुरूह शब्द नहि पाओल जाइछ । उदाहरणस्वरूप हुनक 'अभिलाषा' शीर्षक कवितामे बहुत किछु गद्य-शैलीयेमे एक-पर-एक अभिलाषा सब गुम्फित अछि, मुदा शब्द-संयोजनमे एहन ओज अछि जे ई हुनक एक उत्कृष्ट कविता कहल जा सकैत अछि :

सबल हृदय,
मधुर वाणी,
सद्विचार,
हस्तगत फल,
त्वरित लाभ,
साकार स्वप्न,
सम्पत्ति ओ सुख
आ इहलोकमे कीर्त्ति
निर्भ्रान्त दृष्टि,
संकल्पित क्रिया,
मुक्त नारी,
उर्वर भूमि,
प्रभुक अनुकम्पा,
सत्यक विजय,
एक नव स्वर्ग
एक नव धरती ।

आ जखन हम निम्नोद्धृत हुनक थोड़बे शब्द पढ़ै छी तँ एक अनाम पीड़ासँ हृदय बोझिल आ नेत्र सजल भऽ उठैत अछि :

नहि जलसँ बरु नेत्रक जलसँ
जेहि तरुकेँ सींचल-पोसल प्रभु
पुनि तकरा श्रीहत होइत आब
भऽ सकत कोना कै देखल प्रभु !

भारतीक अनुगमन करबामे तमिल कवि पाछु नहि रहलाह और देशिका विनायगम पिल्लै एवं नामक्कल रामलिंगम पिल्लै सदृश साहित्यकार लोकनि ओहि दिग्दर्शक साहित्य-देवताक उदाहरणसँ प्रेरित भै उल्लेखनीय सफलता उपलब्ध कैलन्हि । एहि पिल्लै युगल केर पश्चात् सैकड़ों कवि भेलाह जे पांडित्यक सर्वथा परित्याग कैलन्हि । मुदा एखनहुँ हम ओतहि छी जतय भारती आइसँ पचपन वर्ष पूर्व अकस्मात् छोड़ि देलन्हि । जखन कि तमिल गद्य एकक बाद दोसर उत्कर्ष-शिखरकेँ छूबैत गेल अछि, कविता कोनो उल्लेखनीय 'नवीनता'केँ नहि प्राप्त कैलक अछि । के. पी. राजगोपालन, पदुमैपित्तन आ. ना. पिचामूर्त्ति भारतीक गद्य कविताक अनुकरण कै एक प्रकारक नवताक सृजन कैलन्हि अछि । परंच ओ सब भारती आ टैगोरक एक दुर्बल प्रतिध्वनि मात्र प्रतीत होइत छथि । अनेक कारणमे सँ इहो एक कारण अछि जाहिसँ हम तमिल साहित्यक वर्त्तमान कालकेँ एखनहुँ भारती युग सैह कहैत छी, यद्यपि आध शताब्दीसँ अधिकक अन्तराल हमरा हुनका कालसँ पृथक् करैत अछि ।

विषयगत आ भावगत आधुनिकता

तमिल जनपदक आभार अर्जित करबाक लेल भारतीक यैहटा एक कार्य नहि छलन्हि जे गद्य आ कविता दुहूक भाषामे ओ एक क्रान्ति अनलन्हि प्रत्युत अपन कृतिमे विषयगत क्रान्ति उपस्थित कै ओ ततबे महत्वक कार्य कैलन्हि । ए.पी. माधवन कहैत छथि :

"ओ आधुनिक तमिल साहित्यक अग्रदूत छलाह किएक तँ ओ प्रथम लेखक छलाह जे प्रचलित 'काव्य रीति' कैं अस्वीकृत कैलन्हि आ ओहन विषय पर कलम चलौलन्हि जे आजुक जीवनक अधिक लऽग छल ।"

पूर्ववर्त्ती कालमे कोनो तमिल कवि कहियो काल एक बेर जीवनक सामान्य विषय पर रचना करैत छलाह जेना प्रसिद्ध 'मुक्कुदल पल्लु' पल्लर अर्थात् अछोप जन पर लिखल गेल । मुदा ई भारतीयेक समय मे घटित भेल जे उद्धार विषयक लेखनक पराम्परा व्यापक रूपैं चलि पड़ल । 'मारवास लोकनिक गीत', 'गाड़ीवानक गीत', 'कुसियारक खेतमे' प्रभृति भारतीक कविताक पश्चात् देशिका विनायगम सदृश गीति काव्यक प्रणेता लेकनि समाजिक आ राजनीतिक विषय पर लिखऽ लगलाह । पुनः तोतारटन्त भक्तिभावक पुनरुक्ति एवं पुराण आ महाकाव्य सम्बन्धी सायास रचनाक स्थान पर भक्ति आ देवी-देवाताक प्रति एक नव शैलीक उद्भावना भेल । भारती एहन विशेषणक पुल बान्हब छोड़ देलन्हि जे दीर्घकालक प्रयोगैं जर्जर भऽ गेल छल, तकरा बदलामे ओ दैनिक शब्दावलीमे अपन हार्दिक भावना कैं लिपिबद्ध करब प्रारंभ कैलन्हि । देवता इत्यादि पर ओ एना रचना कैलन्हि जेना ओ सद्यः ओहि देवताक सोझाँ ठाढ़ होथि । उदाहरण लै हुनक 'कसल वीणा' शार्षक कविता लेल जाय :

करमे लै वीणा आ तंत्री कै ठीक ओकर
की हम दी फेकि उड़ा तकरा पुनि गोनड़ पर ?

सुनू शक्तिरूपिणि मां ! देलहुँ अछि जीवन आ
कैलहुँ अछि बुद्धि-ज्योति हमरामे दीप्त अहाँ
बोझ बनत पृथ्वी पर ई सभ किछु देल अहँक
जँ नहि संकल्प हमर सहज कर्म हो परिणत
तँ कि इहो प्रेरित करु, हमर कर्मशक्ति सतत
मातृभूमि-मंगल उपलब्धि हेतु हो अर्पित !

पुनः हुनक श्रोता लोकिन ई सुनि कै वस्तुतः चमत्कृत भऽ उठल जे जँ एहि भावोद्वेलित शब्द केर केवल वारंवार पाठ कैल जाय तँ हुनका भगवानक साक्षात् दर्शन भऽ जेतन्हि

कैलहुँ कत विधि आनन्द-सृजन !
हे प्रभु ! हे प्रभु ! आनन्द-सृजन !
जड़मे कै निज लीला चेतन
बनबी कत विश्व कि अद्‌भुत् सन
अगणित रँग सृष्टिक कै रंजन
सौन्दर्य साँचमे ढालि अपन
कैलहुँ कत विधि आनन्द-सृजन !
हे प्रभु ! हे प्रभु ! आनन्द-सृजन !

जहाँ धरि तमिल गद्यक प्रश्न अछि भारतीक अनुगामी लेखक-गण आगू बढ़ि कै हुनक "चन्द्रिकायिन कथै" केर उदाहरणसँ लाभ उठौलन्हि और समकालीन सामाजिक, राजनीतिक आ आर्थिक समस्या सबसँ जुझलाह । भारतीक द्वारा कैल गेल टैगोर केर अनुवादक उदाहरणसँ प्ररित भै अनेको बंगाली, मराठी आ हिन्दी उपन्यासक तमिल अनुवादक क्रम तहियासँ एखन धरि चलि रहल अछि । वस्तुतः एखनुक अनुवादक ई बाढ़ि साहित्यिक गतिविधि आ विचारधारा केर पारस्परिक प्रभाव आ प्रसारकेँ प्रोत्साहित करैत अछि । एहि प्रकारेँ गत पाँच वा छौ दशकक बीच तमिल गद्य सब दिशामे चमत्कारिक प्रगति कैलक अछि । आ एहि सभक अधिकांश श्रेय भारतीकेँ देमऽ पड़त जे सर्वप्रथम तमिल केर उपयोग ज्ञान, शिक्षा एवं नैतिक उन्नयन केर लोकप्रिय आ सक्षम माध्यमक रूपमे कैलनि ।

सुब्रह्मण्य भारती कोनो नव वृत्तक प्रवर्त्तक नहि छलाह मुदा ई

निश्चित जे ओ अनेको लोकप्रिय छन्द-विन्यासक प्रयोगमे अपन चातुर्य देखौलन्हि । मानि लियऽ रेलक डिब्बामे यात्रा करैत काल ओ कोनो भिखैनि बालिकाकेँ गबैत सुनलन्हि । तकरा किछुए काल उपरान्त हुनक रचना-शक्ति ओही धुन पर आधारित एक गीतक रचना कै जन-सामान्यक सम्मुख उपस्थित कऽ दैत छल, किन्तु आब ओ प्रबल देशभक्तिक वाहक एक नव कविताक रूप नेने रहैत छल । एक लकड़िहाराक हकमैत लय हुनक कवितामे ओहिना प्रतिध्वनित होइत छल जेना अछोपक ढोलसँ उठैत ढोलक ध्वनिकेँ जातिजन्य दुराग्रह पर नव विजयोल्लासक घोषणाक रूपमे लेल जाय । फेरी देनिहार ज्योतिषी (भविष्यवक्ता) केर 'गूडू, गूडू, गुडू' ध्वनि क्षण मात्रमे पृथ्वी परक दलित आ शोषित मानवताक नव जीवनोदयक प्रेरणामे परिणत भऽ जाइत छल । एतबे नहि, कविताकेँ सर्वजन सुलभ बनैबाक हुनक आग्रह हुनका लोक धुन पर आधारित एक सम्पूर्ण महाकाव्यक प्रणयन करबाक हेतु बाध्य कैलक । सरस्वतीक वरद पुत्र हैबाक कारणेँ अन्तमे अपन स्वप्नकेँ 'पांचाली शपथम्' केर रचनामे साकार कऽ लेलनि । परम्परागत वृत्तमे रचित असंख्य पुराण आ 'अन्तादी' सबसँ अकच्छ भेल तमिलनाडुक कवित्व प्रतिभा युग-युगीन विषयक नव अभिव्यक्ति शैली दिस आशासँ ताकि रहल छल । आ भारती ताहि हेतु काटि कै रास्ता बनौलन्हि :

"सरल शब्दावली, सहज शैली, सुबोध लय, एहन छन्द-विन्यास जे सामान्य लोकक चिर परिचित हो—जे क्यौ एहि सब गुणसँ समन्वित महाकाव्यक रचना कऽ सकत वैह कवि हमर मातृभाषाकेँ नव जीवन दऽ सकैत अछि ।

जाहि तमिल जनकेँ एहि प्रकारक नव साहित्यक दू वर्ष मात्रक प्रशिक्षण भेल छन्हि तनिको हेतु ओ कृति बोधगम्य हो, संगहि ओहि कृतिक काव्य शैली मन्द कोटिक सेहो नहि हो ।

परा शक्ति जे तमिल भाषाकेँ नव जीवन देबाक हेतु कृत-संकल्प छथि हमरा एहन रचना आरंभ करबाक हेतु उत्साहित कैलन्हि अछि ।। तैं आशा करैत छी जे व्यापक रूपेँ एकर स्वागत कैल जायत ।"

ई छल तमिलनाडुक भावी कविताक संबंधमे भारतीक दृष्टि आ ओ एक साहसिक विषयक चयन कैलन्हि अर्थात् महाभारतक सर्वाधिक आत्मदग्धकारी प्रसंग, जकर चित्रणक हेतु सर्वोच्च संयम आ महत्तम निष्ठाक आवश्यकता छल । एतय वा ओतय कत्तहु अशुद्ध शब्दक प्रयोगसँ ई असंभाव्य कारुणिक दृश्य भावुकतापूर्ण प्रहसन मात्रमे परिणत भऽ सकैत छल । मुदा भारतीक अनुष्ठान गौरवपूर्ण रहल । आ तैयो तमिल कवि लोकनि द्वारा एखन धरि जे सब पद्धति पवित्र मानल जाइत छल तकर अवहेलना करैत ई महाकाव्य एहन वृत्तसँ शुरू होइत अछि जकर प्रयोग सामान्यतः भ्रमणशील गायक सबहक द्वारा कैल जाइत छल । ब्रह्मा वा सरस्वतीक वन्दना केर पाठ सरल संगीत लयमे कैल जा सकैत अछि । हुनक सरल शब्दक प्रयोग एक दृष्टिछल थीक कारण ओहि बीचसँ क्यो उत्तरोत्तर उध्वर्गतिमूलक एहन अर्थ निकालि सकैत अछि जे हमरा लोकनिकेँ और अधिक गंभीर अध्ययन एवं आत्मचिन्तन करबा लै बाध्य करत । सरस्वतीक रूप वर्णित करैत हुनक निम्नलिखित छन्दमे प्रतीक आ विचार मिलि कै एक पूर्ण संश्लिष्ट कल्पनाक निर्माण करैत अछि :

वेद चक्षु, भाष्यक कज्जलसँ और मनोहर ।
ज्ञान विभामय भाल, चिन्तनक अलकजाल वर ।।
सबल तर्क आ वाद-विवादे श्रुतिक विभूषण ।
प्रज्ञा सुरभि, शास्त्र मुख जनिकर अछि शुभ चित्रण ।।

राजपुरुष लोकनिक बीच वार्त्तालापक प्रवाह सामान्य सम्बोधन शब्द सभक प्रयोगक कारणेँ स्वाभाविक आ सहज बूझि पड़ैत अछि । वैयक्तिकताक एक कोमल संस्पर्श सम्पूर्ण अवतरण कैँ एक नव रूप दऽ दैत अछि आ यत्र-तत्र ध्वनिक अनुकरणमूलक शब्द विन्यास वातावरणक चित्रणकेँ पूर्णता प्रदान करैत अछि । जखन भारती कथानकक बीचमे हास्य-सूचक 'कक-कक-का' केर लय आ कुरु दरबारी लोकनिक एम्हर-ओम्हर कूदब केर वर्णन करबामे 'तक्कु-तक' लय केर प्रयोग करैत छथि तँ अधम कुरुवंशी लोकनि हमरा नेत्रक सम्मुख प्रत्यक्षतः पशु जकाँ निचैन कूदैत-फानैत बूझि पड़ैत

छथि । दुःशासन 'हिनहिनाइत' अछि, विदुर चीत्कार करैत छथि, पांचाली 'हिचकिचाइत' छथि—एवं प्रकारेँ महाकाव्यक विभिन्न मनःस्थितिक चित्रण करबामे भारती दिन-प्रति-दिनक चलित शब्दहिक प्रयोग करैत छथि । हुनक काव्यात्मक परिपाक एहन अछि जे 'पांचाली शपथम्' केर जखन पाठ कैल जाइत अछि तँ एकरा एक एहन प्रचंड तूफानी गरिमा आवेष्टित केने प्रतीत होइत अछि जे उच्च शब्दालंकारसँ बोझिल आ जकड़ल परम्परागत काव्यमे कतहु नहि भेटि सकैत अछि । जखन द्रौपदी केर द्यूत-क्रीड़ामे दाओ पर चढ़बाक क्षण केर महावर्णन हमरा लोकनि सुनै छी तँ हमरा सबमेसँ के एहन अछि जे अपना हृदयक भयकेँ रोकि सकैत हो वा आत्माक हूककेँ शान्त कऽ सकैत हो ?

यज्ञक हवि जेना नीच जातिक
कूकुरकेँ दऽ दी खैबा लै
वा कोनो प्रेतकेँ बजा कि दऽ दी
स्वर्ण सौधमे रहबा लै
अथवा उलूककेँ रत्नजटित दी
मुकुट माथ पर रखबा लै
तहिना अपना रानीकेँ देलन्हि धर्म
दाओ पर चढ़बा लै
आ क्यो नहि हुनका प्रश्न कैल !
की मारत क्यौ निज प्रिय शिशुकेँ
पनहीक चर्म ओरियैबा लै ?
की राजकुमार सभैक बीच
पांचाली बनथि दाओ द्यूतक ?
से एहन दाओ पर सहमत सब
आ कुटिल माम आहूवान कैल
पासाक चालिकेँ चलबा लै
आ गुड़कल एम्हर छद्म पासा
इच्छित गतियेँ !

तहिना पराकाष्ठाक विंदु पर कैल गेल द्रौपदीक प्रार्थना क्रूर दुर्भाग्य द्वारा चारू दिससँ बेढ़ल विवश मानवताक हेतु आत्मोन्नयन-कारी शक्तिक पूर्ण उद्घोष थीक ।

भावी मानवताक कवि

जेना पूर्व पृष्ठमे विस्तारपूर्वक कहल गेल अछि, भारती आधुनिक तमिल साहित्यकेँ एक नव दृष्टि आ दिशा प्रदान कैलन्हि । हुनक व्यक्तिगत जीवन स्वयं दीर्घकालीन दृष्टिक महत्त्व केर, विशेषतः करुणाक महत्त्व केर, एक पाठ छल । व्यक्तिगत रूपेँ ओ निरंतर राजनीतिक अत्याचार, सामाजिक बहिष्कार आ घोर आर्थिक संकट सँ उत्पीड़ित रहलाह । मुदा अपन अनुभवक कटुताकेँ कहियो अपन लेखनमे ओ स्थान नहि देलन्हि, एते धरि जे समय-समय पर ओ जे डायरी रखैत छलाह ताहू पर्यन्तमे ओ तकर चर्चा नहि कैल । हुनक पत्नी भने रोदन करथुन्ह जे भातक बासन खाली अछि, अपन दुखित बच्चाकेँ डॉक्टरसँ देखैबा लै भने हुनका कैंचा नहि रहौन्ह, जीवन-रक्त सदृश हुनक रचनाक प्रकाशन केर भने कोनो संभावना नै होन्हु, मुदा ओ कटुतामे लिप्त होमऽवला जीव नहि छलाह । एकरा विपरीत ओ परा शक्तिक प्रार्थना करबामे अवश्य लीन भऽ जाइत छलाह । भारतीक जीवनमे व्यक्तिगत अत्याचार विचित्र गतियेँ सामाजिक करुणामे परिवर्त्तित भऽ जाइत छल । एते धरि जे विदेशी शोषक सभक विरुद्ध हुनक आक्रोश पांडिचरी प्रवासक उत्तरकालमे क्रमशः सर्वथा रूपान्तरित भऽ गेलन्हि । भारती जे पहिने क्रान्तिकारी कविक रूपमे उभरल छलाह क्रमशः अहिंसाक पूजक बनि गेलाह । पी. श्री द्वारा देल गेल भारती आ डॉ. अप्पावू (भी. ओ. चिदम्बरम् केर घनिष्ठ सहयोगी) केर बीच वार्त्तालाप एहि पक्ष पर प्रचुर प्रकाश दैत अछि । भारती डॉ. अप्पावूकेँ प्रायः ई कहलथिन्ह जे बम-विस्फोट सदृश हुनक पहिल जोशक दिन समाप्त भऽ गेलन्हि, कारण ओ ई अनुभव कऽ चुकल छलाह जे जेना धूआँक केन्द्रमे सर्वदा आगि नुकायल रहैत अछि तहिना शत्रुओक हृदयमे ईश्वरक निवास रहैत अछि । 'अपन शत्रुसँ प्रेम करू' कवितामे कवि एही भावकेँ

व्यक्त कैने छथि आ 'महात्मा गांधी पंचकम्'मे ओ गांधी-युगक आगमन केर सेहो स्वागत कैलन्हि अछि :

कोन रूप हम करु अभिनन्दन
अहँक दिव्य बूटी कैलक अछि
विषम नाग केर दंशक प्रशमन !
बना लेलहुँ सौंसे भूधरकेँ कवच अपन
आ एहन योजना अभिनव ओ अमोघ
करते जे घोर तमोमय दासताक
दुस्सह ज्वर केर सर्वथा नियंत्रण !
हमर दैन्य दुःखक कुचक्र केर जे संचालक
तकरा अपन प्राण सम मानी
सबमे हम ईश्वरकेँ जानी
हुनके हम सब सन्तति सब जन !
हे अधिनायक !
एहन अप्रतिम नैतिक अस्त्रक
खूनी संघर्षान्दोलित एहि राजनीति संगरमे
साहसपूर्वक कैल नियोजन !
कोन रूप हम करु अभिनन्दन !

ई स्वस्थ आ सबल सन्देश तमिल लोकनि पर अपन प्रभाव उत्पन्न करबामे नहि चूकल । भारतीक उदाहरण पर तुरत नमक्कल रामलिंगम पिल्लै अहिंसाक युग केर उद्घोषणा करैत गांधी युगक प्रमुख गायक बनि गेलाह । ओ कहलन्हि, "अपना भूमि पर एक युद्ध आबि तुलायल अछि जे बिनु हथियारेँ लड़ल जाइत अछि आ जाहिमे रक्तपात नहि कैल जाइत अछि ।"

१९२० मे प्रारंभ भेल गांधीवादी क्रान्ति तमिल साहित्य पर अपने एक विशेष प्रभाव छोड़लक । भारतीक कविता केर संकेत पर शुद्धानन्द भारती आ एस. डी. सुन्दरम् सन कविगण भारतीक भावानुरूपे बहुतो कविताक रचना कैलन्हि । दोसर दिस, गांधीवादी क्रांतिक सामाजिक पक्ष केर दलित वर्ग पर जे प्रभाव पड़ल तकर एक उग्र रूप पदुमैपितन आ भारतीदासन प्रभृत कविमे प्रकट

भेल । पदुमैपित्तन अपना कलमकेँ तीव्र कटुतामे बोरि 'मकाव्यम्' लिखलन्हि जे व्यंग्य वीरकाव्य थीक । भारतीदासन आ हुनकासँ प्रभावित नवीन कवि लोकनि भारतक संपूर्ण पौराणिक आ पारम्परिक गाथाकेँ नकारि देलनि । एकर कारण ई छल जे टूटैत मूल्यक परिवेशमे हुनका लोकनिकेँ ततेक धैर्य नहि रहि गेल छलन्हि जे ओ अपन जीवित परम्परासँ आवश्यक आत्मिक शक्ति प्राप्त करितथि । तथापि भारतीसँ प्राप्त स्पष्ट शैली आ आधुनिक समाज-बोध हुनका लोकनिकेँ सामान्य जीवनक अधिक लऽग घरि पहुँचबाक सामर्थ्य प्रदान कैलकन्हि । महाकाव्य आ पुराणक प्रति निंदासँ भरल भारतीदासन केर ओजपूर्ण कविता एक अनुप्रासात्मक आलंकारिक गद्यकेँ प्रेरित कैलक जे शीघ्रे द्रबिड़ मुन्नेत्र कजगम केर वक्ता लोकनिक भाषा बनि गेल ।

मुदा इहो एक क्षणिके अवस्था छल से प्रतीत होइत अछि । सब किछु होइतो भारतीक सरल, पारदर्शी एवं संभाषण शैली आ भाषा स्थायित्व प्राप्त कऽ लेलक अछि आ एखन धरि जे पिष्ट प्रयोगक अवशेष रहल अछि लेखक लोकनि ताहिसँ समकालीन तमिल साहित्यकेँ मुक्त करबाक प्रयत्न कऽ रहल छथि । कन्नदासन आ कम्बदासन केर गीत, का. श्री. श्री. और रा. बिज्झीनाथन द्वारा कैल गेल गद्यानुवाद, जयकान्तन (जे भारतीक 'पाप्प पात्तु'मे निहित शैक्षणिक विषयवस्तु पर लिखलन्हि अछि) आ के. वी. जगन्नाथन केर समीक्षा और एम. वरदराजन आ टी. जानकीरामन केर उपन्यास एकर उदाहरणक रूपमे उपस्थित कैल जा सकैत अछि । भारतीक साहित्य जेना हुनका जीवनकालमे लोकप्रिय छल तहिना एखनहुँ अछि । जेना-जेना हम हुनक जन्मशतवार्षिकी केर निकट भेल जाइत छी हुनक लोकप्रियतामे कोनो ह्रास नहि दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि । बल्कि, जाही क्रमेँ विभिन्न विद्वान द्वारा हुनक साहित्यक अंग्रेजी अनुवाद एकहिँ दुइयहिँ प्रस्तुत कैल जा रहल अछि, राष्ट्रीय एकताकेँ मजबूत बनैबाक भारतीक जे रोल छल तकरा अधिकसँ अधिक बूझल जा रहल अछि । ई कोनो आश्चर्यक बात नहि । जेना किछु वर्ष पूर्व नवरत्न रामाराव कहलन्हि :

"यद्यपि एहिमे कोनो सन्देह नहि जे हुनक मातृभाषा तमिल थीक,

मुदा हुनक मातृभूमि भारत अछि । ओ सबसँ अधिक वास्तविक रूपेँ भारतक राष्ट्रीय कवि छथि । हुनक हृदय एक मन्दिर अछि जे मातृभूमिक प्रेम आ अर्चनाक हेतु समर्पित अछि ।"

नवरत्न रामारावकेँ एके बातक दुख छन्हि जे तमिल नहि जानबाक कारणेँ ओ भारतीक साहित्यकेँ मूल रूपमे नहि पढ़ि सकैत छथि । यदि ओ से कऽ सकितथि तँ मंडायम श्रीनिवासचारियारक एहि शब्दक ओ अवश्य अनुमोदन करितथि :

"ओ एक कविये धरि नहि छलाह, अपितु मानव स्वभावक संभावना केर महान द्रष्टा सेहो छलाह । तदनुसार ओ केवल तमिलनाडु वा भारतमात्रक कवि नहि छलाह प्रत्युत ओहि विश्व सुख-शान्तिक गायक छलाह जाहि दिस मानवता अग्रसर भऽ रहल अछि । ओ भारतक वर्त्तमान दशासँ प्रारंभ करैत छथि आ ओकरा असहायताक भावना एवं अनगढ़ रूढ़ि दुहूक परित्याग कै आगू बढ़वाक हेतू प्रेरित करैत छथि ।

'पाप्प पात्तु'सँ प्रारंभ करैत आ भारतक प्राचीन महापुरुष लोकनिक स्मरण कराबैत ओ 'शक्ति पात्तु' केर गायन करैत छथि जाहिमे ई देखाओल गेल अछि जे आगू आबऽबला युगमे भारत कोना देशभक्तिक आवरणमे गोपित क्षुद्र घृणाकेँ त्यागि आ भौगोलिक सीमासँ ऊपर उठि एक अमर भूमि बनत ।"

किएक तँ भारतीये ई गौने छलाह :

सबमे प्रकट भेलहुँ मा काली
सर्वव्यापिनी रूप अहिँक अछि !
शुभ वा अशुभ, असत् सत् दूनू
की न दिव्य लीला अहींक अछि ?
पसरल अछि मायान्धकार जे
लोक बुझै अछि तकरा जीवन
बहुत भेल ई ! आदि शक्ति मां !
आब सतत करु मार्ग-प्रदर्शन !

'महाशक्तिक स्तुति करू' शीर्षक उच्च अभिलाषापूर्ण कवितामे हुनक महाविस्मयपूर्ण आनन्दकेँ देखू :

अप्रमेय अज्ञेय तत्वमयि
व्योम सदृश विस्तीर्ण भेलहुँ अहँ
कैलहुँ कत ब्रह्माण्डक रचना
पुनि सबमे चिर गति भरलहुँ अहँ
सबकेँ हमरा सबसँ रखलहुँ
कते दूर वा परे ने जानी
एकरूपिणी ! करइत छी स्तुति
कालीरूप अहाँकेँ मानी

अन्तमे ध्यातव्य जे ओ स्वप्नद्रष्टा भारतीये छलाह जे 'घंटी बजाउ' कवितामे पृथ्वी पर ईश्वरीय जीवनक घोषणा कैलन्हि :

पृथ्वी पर समता, भ्रातृत्व, स्वाधीनताक
भेटय अवदान स्वयं ईश्वरसँ वितरित ।
सब क्यौ जे धरती केर वासी अछि तकरा लै
भोजन हो सुलभ सतत, क्यौ नहि हो वंचित ।।
शिक्षा केर यान चढ़ल विश्व उर्ध्वगमन करय,
सतत नव लोक, दिशा, उच्च लक्ष्य प्रेरित ।
प्रेमक चिर विजय और एकताक घोष करू
पृथ्वी पर सब लै सुख-शान्ति करू निश्चित ।।

काव्य-चयन

निवेदिताक प्रति

हे मातः निवेदिते !
प्रेम देवता प्रति पवित्र मन्दिर कि अर्पिते !
हमर अमा-गर्भित उर हित जनु सूर्य दीपिते !
दग्ध-प्राण जन-जीवन हित पावसक अमृते !
दलित-प्रवंचित मानवता-रक्षिके दर्पिते !
परम कृपा निवेदिते !
हे दिव्य स्फुल्लिंग सत्य केर प्रखर भासिते !
अहँक चरण शत नमन हमर अछि, करू स्वीकृते !

स्वतंत्रते !

जननि ! पैबा लै अहँक दुर्लभ कृपा अवदान जे
करथि तन-मन-प्राण अर्पण अहँक चरणक ध्यानमे
काल-कोलखी केर भने हो हुनक एहि ठाँ यंत्रणा
किन्तु स्वर्गक देवगण करथिन्ह हुनक अनुरंजना

तव कृपा केर कोर जनिकर लिखल छन्हि नहि भाग्यमे
दासता-भोगे गुनथि जे अपन सुख-सौभाग्यमे
रहथु ओ नहि कियै यद्यपि भव्य नव प्रासादमे
वायु बन्दी-गृहक मात्रे लेथि अन्ध प्रमादमे

जाति कत पाश्चात्य देशक वीरता-वलिदानसँ
अहँक अनुकम्पैं रहय नव जीवनैं, सम्मानसँ
की न पौलक ओ सबहिँ ई सतत दृढ़ संकल्प कै
'अहँक करबे अर्चना हम कोनो अंतिम मूल्य दै'

हा! एम्हर हम जनमि से उजड़ल- अभागल देशमे
जकर उरमे पूर्व गौरव-स्मृतिक किछु आवेश ने
अहँक अनुकम्पाक अन्तर्मर्म बुझि, गरिमामयी !
कोन विधि हम पूजि जगबी अहोंकैं महिमामयी !

वीर-जन-जीवन-सुधे हे ! दिगदिगंत - प्रकाशिके !
सत्य - धर्माश्रितक रक्षण - सौख्य - शांति - विधायिके !
दैन्य - दुःख - बिभंजिके ! खल-दलनि ! छल - उच्छेदिके !
देरि करु नहि, भारतक महि उतरु जन-गण-अंबिके !

मुक्ति गीत

नृत्य गान उत्सव केर
आयल क्षण, गायब हम ।
आइ अंतमे कि भेटल
मुक्तिक आनन्द परम ।।
जाति-पाँति-जन्य गर्व
विदेशीक शक्ति सर्व
बीतल युग एहि सभ केर
लंक नेने भागल ।
विवश दासताक शाप
बंचक केर बल-प्रताप
छायल छल घटाटोप
शुद्धकै बिलायल ।।
मुक्तिक भाषाधिकार
भेल सभक सभ प्रकार
सब क्यौ स्वतंत्रताक
भाषा मे बाजब ।
समता केर बोध सुखद
सबहक हित भेल वरद
विजय-शंख फूकि, सत्य
ई सबहिँ प्रकाशब ।।
जन्मैं सब सम, प्रमाण
छल-छद्मक गत गुमान
होथि सज्जने महान
दुर्जनकैँ मरबे ।

जयतु ! श्रमिक-हलधर-गण
धिक ! स्वार्थी-लम्पट जन
मरुथल किय सींचब, ने
निष्क्रिय हित खटबे ।।
बुझलहुँ जे हमर देश
हमरे, नहि भ्रमक लेश
लै छी हम शपथ आइ
रहत हमर पासे ।
एके प्रभु परम प्रभुक
शासनमे प्रगति करब
कोनो शक्ति कै न सकत
हमरा पुनि दासे ।।

ब्रह्माण्डक विनाश बेलामे

घहराइत गर्जन रव
ब्रह्माण्डक टक्कर स्वर
असुर रक्त छहरबैत
महानाश-मुदित गाबि
अहाँ तकर ताल राग—
पर बिसुध प्रबल नचैत
भैरवि ! प्रलयंकरि हे !
चामुण्डे ! महाकालि !
बरबस हे हमरा माँ !
देखबै छी प्रलय-नृत्य !

मूलभूत पंचतत्त्व
मिलि कै हो एकमेक
ओहो एक हो विलीन
शक्तिक चिर अतल कुक्षि
मनो स्वयं भै विघटित
ताप दग्ध, भस्म, शून्य !
उगिलि ज्वाल अति कराल
नाची उन्मत्त भाव
बरबस हे हमरा माँ !
देखबै छी प्रलय-नृत्य !

ध्वंसैं बिजड़ित दिशांत
भ्रमित चरम भयाक्रांत

संहारक राक्षस-कुल
हटल पाछु, पुनि अदृश्य
प्रलयक दूती कि तखन
'हा, हा, हा' ध्वनि करैछ
अहाँ गर्जना करैत
उन्मादें छी नचैत
बरबस हे हमरा मां !
देखबै छी प्रलय नृत्य !

राक्षस केर हूह लड़य
मुंड-मुंड टकरबैत
घात-प्रतिघात लहरि
कालक लय ताल दैत
अहँक नेत्र झरल वह्नि
भूमण्डल-छोर व्याप्त
सृष्टिक तँ अन्त करय
पहुँचै अछि महाकाल
बरबस हे हमरा मां !
देखबै छी प्रलय-नृत्य !

जखन काल दिशाकाश
बिखरि धूरि-दूह बनय
प्रलयी उन्माद शान्त
एकाकी छवि पसरय
मंगलमय शिव प्रकटथि
अहँक तृषा शमन हेतु
आब बिहुँसि हुनक संग
नाची शुभ सृजन-नृत्य
बरबस हे हमरा माँ !
देखबै छी प्रलय-नृत्य !

आउ कृष्ण !

आउ, कृष्ण, आउ !
आउ, कृष्ण, आउ !
लक्ष्मीपति ! मूर्त्ति बनल
बुद्धि ज्योतिमे कि आउ
आदि बीज विश्वक हे !
सुधा-दान दै जिआउ !
आउ, कृष्ण, आउ !

आबि हृदय-स्पर्श करू
आत्मामे हमर बसू
शस्त्र नेने प्रकट होउ
असुरक दल संहारू !
आउ, कृष्ण, आउ !

सूर्य सदृश भासमान
सागर तल उदित जखन
सुरप्रिय ! हे कृष्ण ! सखे !
करइत छी चरण नमन !
आउ, कृष्ण, आउ !

पाञ्चाली-शपथ

राज्य दाओ पर : विदुरक चेतौनी

(कुरु राज दरबारमे शकुनि आ युधिष्ठिरक बीच द्यूत-क्रीड़ा चलि रहल अछि । युधिष्ठिर एक-पर-एक दाओ हारने चल जा रहल छथि । आब हुनक राज्य दाओ पर छन्हि । काका बिदुर औना उठैत छथि आ भ्राता धृतराष्ट्रसँ समय अछैते वंश-रक्षा करबाक निमित्त तत्काल एहि क्रीड़ाकेँ बन्द करबा लै अनुरोध करैत छथि ।)

"हम कोना एकर वर्णना करब ?
की राजा करथि क्रिया एहने ?
जूआसँ जीति राज्य
शासन करबाक कैल संकल्प भला ?
की लोक समर्थन करत एकर ?
दैवो की एकरा सहन करत ?
छिः ! की कुकर्म !
नहि हम सभ की वंशधर एहन वंशक
जे लोकान्तर विश्रुत ?" ई पुछल बिदुर ।

"पांडवो लोकिन केर हो स्वीकृति जँ मौन
कृष्ण आ द्रुपद धर्मयुत भरि अमर्ष
नहि की हेताह विकराल क्रुद्ध ?
आ करता नहि की
हमरा सबहक वंश-विनाश समूल शुद्ध ?
कुरुराज ! अहीं कैं करइत छी हम सम्बोधित,
ओ, सावधान !

नहि अपन विनाशक अथवा घोर नरक दंडक
करु आह्वान !

"की कुलोच्छेद हेतुअहिँ नियति प्रतिशोध भरल
एहि विषम कुटिल दुर्योधनकेँ
कैने छल प्रकट गृहक मध्ये ?
जै दिन भू पर आगमन एकर
शत-शत श्रृगाल की अशुभ रूप
अनघोल उठौलक एके बेर !
कैलनि तखने भविष्यवाणी ज्योतिषी लोकनि
परिवार बीच दारुण कलहक भवितव्य लिखल !

"राजन् ! अदूरदर्शी ! कायर !
छी राजपदासीनो कि कोना
जनु स्वर्गाधिप !
गर्वित जे पुत्र हमर जीतल
पासाक दाओ पर राज्य एक !
मधुलोभेँ आ स्वार्थे आन्हर
नहि देखि सकय व्याधा कि जेना
पथ केर कगार अछि कोना नुकौने महाखद्ढ !

"छी अहूँ शेष जन अनवधान
मदिरोन्मत्त ई खेल रचय की कटु विधान !
सम्पूर्ण जाति केर नौकाकेँ हम ली डुबाय
बस एके पातकी हेतु—यैह संगत, समुचित ?
पांडव भ्राता जे छथि अहाँक प्रति प्रेमार्पित
छी उद्यत की तनिके स्वाहा करबाक हेतु
कुल-मूल सहित ?
हे भ्रातः ! अहँक आर्ष अनुभव केर रहनै की ?
ओ व्यर्थ भेल सागरमे मधु केर बुन्न जकाँ !

"हम सभ पालल
श्रृगाल अथवा विषमय भुजंग पुत्रक व्याजें
यदि अमर कीर्ति-कामी छी हे
तँ एखनो तजि श्रृगाल दल व्याघ्रक वरण करू
एहि काक-उलूकक स्थान
प्रतिष्ठित करु मयूर महिमामंडित !
हा ! खुजल आँखियहिँ अहाँ
काल केर ग्रास बनब,
कानो धरि छी की गमा चुकल ?

"जीवनक शेष करइत-करइत
की भातिजेक स्वत्वक अशेष अछि लोभ बढ़ल ?
की ओ सभ पहिने नहि अहींक आश्रय ताकथि ?
मानथि न अहींकेँ निज स्वामी ?
यदि हुनक धने उपलब्धि मनोरथ होय अहँक
ओ सभ अपनै अर्पित करता सहजेँ हर्षित !
काजे की तखन कुटीचालिक
जे मात्र नरक केर द्वार अहाँ लै खोलि देत ?

"चिर वंदित कुरुकुल सभा मध्य
आचार्य द्रोण, कृप, यशवर्धित गंगासुत भीष्म
और हमहूँ—सभ केर उपेक्षा भऽ रहले
अछि सम्पूजित बस अधम शकुनि केर शब्द
शास्त्रवत् सम्मानित !
ओ कोन चरित्रक लोक ?
कियै नहि ओकरा निज पार्वत्य राज
दी साँठि पुनः ?

"कल्पनो करू नहि रहि सकबे स्वच्छन्द-सुखी
कै धर्मक विक्रय

मित्रवर्गकेँ बना शत्रु, परकीय
शकुनि केर सम्मतियेँ !
सम्पूर्ण विश्व केर निन्दा निज माथा चढ़ाय
शत-शत अभिशापक सृजन करब !
की से जीवन कै सकब सहन ?
बस करू बन्द ई खेल,
चढ़ू उत्कर्ष-शिखर !"
एतबा कहि विदुर विराम लेल ।

कुयिलक एकल गान

प्रेम, प्रेम जे असीम जे अनन्त
प्रेमक च्युति
सभ दिन लै मरण मात्र तकर अन्त

ज्योति, ज्योति जे कि अमर भासमान
निर्वापण
अविरत घन अन्ध तमस् केर वितान

मोद, मोद जे अक्षय मोदक सम
मोद-भंग
दुःखे दुख, कहियो नहि हो जे कम

गान, गान माधुर्यक अखिल स्रोत
गान बन्द
कर्ण-कुहर कर्कश स्वर ओत-प्रोत

ताल, ताल टूटय नहि कखनो जे
ताल-भंग
लयक प्रलय, सुधरय पुनि कखनो ने

काव्यक स्वर अभिव्यक्तिक दिव्य स्तर
काव्य-पतन
मात्र विश्व प्रदूषणक संचय-घर

कीर्त्ति, सतत अभिनन्दन योग्य कीर्त्ति
एक्को त्रुटि
स्थापित कर कीर्त्तिक पद कटु कुकीर्त्ति

दृढ़ता, रहु दृढ़तामे अचल ठाढ़
कम्पित जँ
बिखरब तँ धूलिसात् भै प्रगाढ़

प्रेमी केर मिलन सुखक परमावधि
विरहित भै
तनिक मात्र व्यथा-कथा चरमावधि

वंशी केर मधु स्वर, रस लूटि लियऽ
फाटल जँ
फाटय स्वर, फटल बाँस फेकि दियऽ

गद्य गीत : शक्ति

सपहरा

बजा रहल अछि बीन सपहरा
कतय होइछ संगीतक उद्‌भव ?
ओकर बीन वा बीन छिद्रमे
वा सपहरिया केर श्वासामे ?
ओ तँ ओकर हृदयसँ निकसल
आ बीनक माध्यमसँ लहरल !
हृदय न झंकृत हो एकसरमे
वा कि बीन अपनेसँ गुंजित
ने हृदयक अछि मेल बीनसँ
हृदय द्रवित भऽ मिलय श्वाससँ
श्वास बीनसँ
तखन बीनमे धुन गूंजै अछि ।
ई थिक शक्तिक लीला सबटा
शक्ति हृदयमे बैसि गबै छथि
जे वंशीक पोरसँ हमरा हो श्रुतिगोचर
दू विभिन्नकेँ कै अभिन्न
संगीत सृजन कर शक्ति युक्तिसँ
मांगय भीख बाल जिप्सी दल
के जोड़ल जिप्सी बालक स्वरकेँ
सपहरिया केर बीनसँ ?
शक्ति जोड़लक
चिकरि रहल क्यो ओहने स्वरमे
'लियऽ रेशमी वस्त्र, लियऽ हे !'
आह ! मर्म हम बूझि रहल छी

सपहरिया वा जिप्सी अथवा
रेशम बनिजारा जीवनमे
वैह शक्ति कऽ रहल नृत्य छथि !
यंत्र विविध अछि, यंत्री एक्के
रूप विविध अछि, शक्ति कि एक्के
जय हे महाशक्ति ! जय ! जय हे !

भारतीक जीवन केर प्रमुख घटनाक्रम

११दिसंबर, १८८२	सुब्रह्मण्य भारतीक जन्म
१८८७	माता लक्ष्मी अम्मलक मृत्यु
१८८८-९३	एट्टयपुरम केर एंग्लो वर्नाक्यूलर स्कूलमे प्राथमिक शिक्षा
१८९४-९७	तिरुनेलवेलीक हिन्दू कॉलेजमे उच्च विद्यालयीय शिक्षा
जून, १८९७	चेल्लम्मलसँ विवाह
जून, १८९८	पिता चिन्नस्वामी अय्यरक मृत्यु
१८९८-१९०१	बनारसक प्रवास—प्रयाग विश्व-विद्यालयसँ प्रथम श्रेणीमे प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण
१९०२-४	एट्टयपुरम् केर राजाक सहयोगी
जुलाइ, १९०४	भारतीक तमिल सॉनेट 'एकान्त' 'विवेकभानु' मे प्रकाशित :भारतीक सबसँ प्रारंभिक कृति उपलब्ध
अगस्त-नवम्बर, १९०४	मदुराइ केर सेतुपति उच्च विद्यालयमे एक अस्थायी रिक्त पद पर तमिल पंडितक रूप मे कार्य
नवम्बर, १९०४	'स्वदेश मित्रन' केर सहायक संपादकः 'चक्रवर्धिनी' मासिक पत्रिकाक सम्पादक
१९०५	भगिनी निवेदितासँ भेट
अप्रैल, १९०६	नव क्रान्तिकारी साप्ताहिक पत्रिका 'इण्डिया' केर सम्पादक
दिसंबर, १९०७	कांग्रेस केर सूरत अधिवेशनमे उपस्थिति : कांग्रेसक विभाजन

१९०८	'स्वदेश गीतांगल'क प्रकाशन : भारतीक पांडिचरी गमन
१९०९	'जन्मभूमि'
१९१०	'इन्डिया'क प्रकाशन बन्द भेल
१९१०	'मातमनिवाचकम्'
१९१२	'पांचाली शपथम्' : प्रथम भाग
१९१४	'सोनक नाङरिवला नढ़या'
१९१७	'कन्नन पात्तु'
नवम्बर, १९१८	भारती भारत घुरलाह आ गिरफ्तार भेलाहः करीब १ मासक बाद जेलसँ रिहाइ
१९१८-२०	कडयममे निवास
मार्च, १९१९	राजाजीक निवास पर महात्मा गांधीसँ भेट
दिसंबर, १९२०	'स्वदेश मित्रन' केर पुनः सहायक सम्पादक
जुलाइ, १९२१ :	त्रिप्लिकेन केर मन्दिरमे आकस्मिक रूपेँ हाथी द्वारा आहत
१२ सितंबर, १९२१	उषाकालमे सुब्रह्मण्य भारतीक निधन

विशिष्ट ग्रंथ-सूची

१ सुब्रह्मण्य भारती द्वारा लिखित

महाकवि भारतीयर कवितैगल (शक्ति कार्यालयम्, मद्रास-६, १९५७)

भारतीज राइटिंग्स : एसेज (भारती प्रचुरालयम, मद्रास, १९४०)

भारती पुतयल (सं. आर. ए. पद्मनाभन, अमुदा निलयम, मद्रास,१९५८)

कत्तुरैगल (इनबा निलयम, मद्रास, १९६३)

भारती तमीज्झ (सं. पी. थूरन, इनबा निलयम, मद्रास, १९६३)

अग्नि एंड अदर प्वेम्स एंड ट्रासलेशन्स (सं.सी. आर. रेड्डी एवं के. एस. वेकटरमानी, भारती प्रचुरालयम्, मद्रास, १८३७)

एसेज एंड अदर प्रोज फ्रैगमेन्ट्स (सं. सी. आर. रेड्डी एवं के. एस. वेंकटरमानी, भारती प्रचुरालयम्, मद्रास, १९३७)

२ भारती पर अन्य लेखक द्वारा लिखित

अकूर अनन्ताचारी : 'कवि चक्रवर्त्ती सुबह्मण्य भारती चरित्रम्' (कित्तप्पा मलर प्रचुरालयम्, शेनकोट्टा, १९३६)

भारती तंगम्मल : 'भारतीयरम कवितायम' (पदुमै पदिप्पगम, करैकुडी, १९४६)

एस. विजय भारती : 'सी. सुब्रह्मण्य भारती' (पब्लिकेशन्स डिवीजन, नई दिल्ली, १९७२)

'सुब्रह्मण्य भारती : पर्सनैलिटी एन्ड प्वेट्री'

(मुंशीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली, १९७५)

जॉर्ज एल. हार्ट III : 'द प्वेम्स ऑफ एनसिएन्ट तमिल' (यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, बर्कले, १९७५)

के. आर. श्रीनिवास आयंगार 'इन्डियन राइटिंग इन इंगलिश': द्वितीय संस्करण (एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बइ, १९७३)

के. आर. श्रीनिवास आयंगार (सं.) : 'इंडियन लिट्रेचर सिन्स इन्डिपेन्डेन्स' (साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली,१९७३)

जयकान्तन : 'भारती पादम्' (कलैग्यन पतिप्पहम, मद्रास-१७, १९७४)

पी. माधवनः 'सुब्रह्मण्य भारती—ए मेम्वायर' (अत्रि पब्लिशर्स, मद्रास, १९५७)

प्रेमा नन्दकुमार : 'सुब्रह्मण्य भारती' (राव एंड राघवन, मैसूर, १९६४)

'सुब्रह्मण्य भारती' (नैशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, १९६८)

'प्वेम्स ऑफ सुब्रह्मण्य भारती' (साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, १९७७)

आर. ए. पद्मनाभन : 'चित्र-भारती' (अमुदा निलयम, मद्रास, १९५७)

ए. दोराइस्वामी पिल्लै (अनु.) 'भारतीज प्वेम्स, कन्नन पात्तु एंड कुयिल पात्तु' (न्यु सेन्चुरी बुक हाउस, मद्रास, १९६६)

के. पी. राजगोपालन एवं पी. के. सुन्दर राजन : 'कन्नन एन कवि' (शक्ति कार्यालयम्, १९३७)

वी. रामास्वामी : 'महाकवि-भारतीयर' (शक्ति कार्यालयम, मद्रास, १९४४)

के. एस. रामस्वामी शास्त्री : 'सुब्रह्मण्य भारती— हिज माइन्ड एंड आर्ट' (वेल्थ एंड वेलफेयर ऑफिस, मद्रास, १९९१)

ए. श्रीनिवास राघवन (सं.) 'द वॉयस ऑफ ए प्वेट': भारतीक कविताक अंग्रेजी रूपान्तर (भारती तमिल संघम, कलकत्ता, १९५१)

के. एन. सुब्रह्मण्यम् (सं.) : 'भारती' (तमिल राइटर्स एसोसिएशन, मद्रास, १९५९)

पी. एम. सुन्दरम् : 'भारतीयर : वरलरम कवितायम' (ओरियन्ट लौंगमैन्स, मद्रास, १९५४)

सी. विश्वनाथन : 'भारती एंड हिज वर्क्स (भारती प्रचुरालयम, मद्रास, १९२९)

यदुगिरि अम्मल : 'भारती निनैवुगल' (आनन्द निलयम, मद्रास, १९५४)

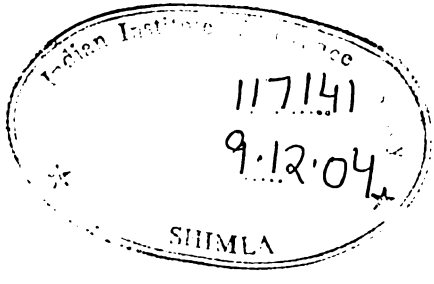

भारतवर्षक दूटा महान साहित्य अछि जे सुदूर अतीत कालक अछि—संस्कृत आ तमिल। दूनूक मनोरम इतिहास दू हजार वर्षहुँसँ अधिक प्राचीन काल धरि पहुँचल अछि।

संगम काल आ तकरा बादक महाकाव्य युगक पश्चात् तमिल साहित्य रूढ़ बिम्ब-विधान एवं छन्दगत कलाबाजीक अधिकसँ अधिक बोझिल जालमे जड़ीभूत भऽ गेल। तैं ई आवश्यक भऽ गेल जे तमिल सर्जनशीलता आ कल्पनाक एहि अनुवर्रतासँ शीघ्र अपनाकेँ मुक्त करय। जेना तमिल चेतनाक एही आंतरिक आकांक्षाक पूर्त्यर्थ १८८२ केर ११ दिसंबर केँ सुब्रह्मण्य भारतीक जन्म भेल।

हुनक सक्रिय साहित्य सर्जन दुइयो दशकसँ कमे कालक रहल, मुदा एहि अवधिमे तमिल कविता साहित्य युगान्तरकारी प्रगति कऽ लेलक। परम्पराकेँ उठा कै एके बेर फेकि नहि देल गेल, अपितु ओकरे जीवित साहित्यिक निधिमे सँ एक नव रूप ठाढ मेल।

जखन भारतीय १९२९ केर १२ सितंबर केँ दिवंगत भेलाह तँ ओ अपना पाछू कविता आ गद्य केर एक भास्वर आ अमर राशि छोड़ि गेलाह आ एक संपूर्ण नव पीढ़ीक सृजन कऽ गेलाह जे भविष्यजीवी छल।

एहि प्रबंधक लेखिका डॉ. प्रेमा नंदकुमार विद्वान एवं लेखकसँ परिपूर्ण परिवारक छथि आ ओ स्वयं सेहो कोनो सामान्य लेखिका नहि छथि। साहित्य अकादेमी आ यूनेस्को केर संयुक्त तत्त्वावधान मे प्रकाशित 'सब्रहमण्य भारतीक कविता-संग्रह' (Poems of Subran
पर लिखल हुनक पाँचम कृति थिकैन्ह।

Library IIAS, Shimla
MT 891. 481 018 B 469 N
00117141

आवरण चित्र : सत्यजित रे
आर.ए. पद्मन्समन केर सौजन्य सँ प्राप्त छाया
पर आधारित चित्रांकन आ हस्ताक्षर

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00